एक था कार्वर

वीणा गावणकर

हिंदी अनुवादः संध्या भाटलेकर

'अरे, अब उठोगे भी कि नहीं?' आज मोजेस चाचा बड़े सवेरे से उस छोटे से लड़के के पीछे पड़े थे। अभी ठीक दिन भी नहीं निकला था, पर चाचा को चैन कहां? वह छोटासा लड़का चाचा की जोरदार आवाज सुनकर हड़बड़ाकर उठ बैठा और सुनता रहा चुपचाप।

'तुम्हारे बराबर के दूसरे बच्चे देखो कितना काम करते हैं, गाय दुहते हैं, जानवर संभालते हैं, मुर्गियों की देखभाल करते हैं, लेकिन तुम! एक तो इतने मरियल और उस पर भी गूंगे! भगवान जाने, क्या होगा तुम्हारा?'

'मत कोसो इसे,' सुसान चाची समझाने लगी। 'नन्ही सी जान, थक जाता है बेचारा, कल दिनभर काम जो करता रहा। अभी वह है ही कितना बड़ा?'

'हां, भई हां। सब पता है मुझे। लेकिन यह तो बताओ, मेरी मदद करेगा कौन? है ही क्या मेरे पास, न पैसा न जायदाद! खेतों में इस बार बुआई भी तो ठीक से नहीं हुई और ऐसे ही बैठे रहे तो खड़ी फसल भी जाती रहेगी।' मोजेस चाचा नाराजगी से बड़बड़ाए।

'देखो, न दिल छोटा करो और न इतनी फिक्र करो। भगवान की कृपा से सब ठीक ही होगा। यह छुटका भी देखना, कैसा तगड़ा हो जाएगा कुछ ही दिनों में।'

'हां, शायद हो ही जाये तुम्हारे कहने से। एक ही घोड़ा था, वह भी गंवाया इसके लिए।'

बात यूं हुई थी। अमेरिका के मिसोरी राज्य में डायमंड ग्रोव बस्ती में मोजेस कार्वर का एक जर्मन किसान अपनी पत्नी सूसान के साथ रहता था। उसके पास 'मेरी' नाम की एक गुलाम नीग्रो स्त्री थी। मोजेस कार्वर ने श्री ग्रेट से उसे 700 डालर में खरीदा था। असल में मोजेस कार्वर को गुलामी बिलकुल पसंद नहीं थी। इंसानों को खरीदना बेंचना उन्हें अमानवीय लगता था। लेकिन खेतीबाड़ी की देखभाल और अकेली जान पत्नी की मदद के लिए कोई साथ हो इसलिए खरीदा था उन्होंने 'मेरी' को। अपने घर के पास ही एक लकड़ी की कोठरी बनायी थी उसके लिए। मेरी का पति एक बागानवाले के यहां लकड़ी काटने के काम पर मजदूरी करता था। कभी-कभार वह अपनी पत्नी से मिलने आता था। एक दिन मेरी को खबर मिली कि दो माह पहले एक दुर्घटना में उसका पति मारा गया। गुलामी की जिंदगी। खबर पहुंची यही काफी था।

मेरी के पति की मृत्यु के आघात से वे लोग अभी संभल भी नहीं पाए थे कि अचानक एक रात मेरी की चीखों से सारा घर चौंक उठा। यह घटना सन 1860-62 की है। उन दिनों गुलामों को चुराकर, भगाकर फिर से बेंचने का धंधा बड़े जोरों पर था। ऐसी ही एक टोले की नजर 'मेरी' पर थी और उस रात डायमंड ग्रोव पर छापा मारकर मेरी को वे लोग उठा ले गये थे। मेरी की चीखें सुनकर मोजेस चाचा अपनी बंदूक उठाकर उसकी कोठरी की तरफ दौड़े लेकिन देर हो चुकी थी। हताश होकर खड़े रहे वे, घोड़ो की की आवाजें सुनते हुए, लगातार दूर जाती हुई टापों की आवाजें।

सूसान चाची आयीं। मेरी की कोठरी के पास जाने की हिम्मत नहीं थी उनमें। किसी तरह एक-दूसरे का आधार जुटाकर दोनों बेचारे कोठरी के पास पहुंचे। मेरी की बहन बुरी तरह से घायल थी और अपनी आखरी सांसें गिन रही थी। बड़ा बेटा जिम कोठरी के एक अंधेरे कोने में छिपा बैठा था। मेरी और उसके दो महीने के बच्चे को उठाया गया था।

उसी रात गांव से और भी नीग्रो गुलाम भगाए गए थे। कार्वर ने गांववालों की मदद से मेरी और उसके बच्चे को छुड़ाने के बहुत प्रयास किए। उनके बदले अपनी जमीन का एक हिस्सा देना चाहा, अपना बढ़िया घोड़ा देने के लिए तैयार हुए। आखिर उस उम्दा घोड़े के बदले उन्हें हासिल हुआ सिर्फ वो दो महीने का कमजोर बच्चा। मेरी नहीं।

किसी को भी उस बच्चे के बचने की उम्मीद नहीं थी। बड़ी मुश्किल से सांस ले सकने वाली वह नन्हीं सी जान, कब चुपचाप खत्म हो जाए, कुछ कहना कठिन था। फिर भी सूसान चाची ने हिम्मत नहीं हारी। उनकी दिन-रात की मेहनत से थोड़ा तो सुधार हुआ। वह बुझती लौ फिर से कुछ जानदार हुई। बच्चे की चढ़ी हुई सांस और 'दमघोंटू' खांसी से देखनेवाले का जी घबरा

जाता था। मेरी के दुलारे को संभालने में चाची जी-जान लगी हुई थी। आखिरकार उनकी जिद और मेहनत का नतीजा दिखाई देने लगा। देर से ही सही, वह चलने लगा, थोड़ा कुछ खाने लगा। लेकिन बार-बार उठनेवाले दमघोंटू खांसी ने उसका स्वरयंत्र एकदम बिगाड़कर रख दिया था। उस गूंगे बच्चे की मां का क्या हुआ किसी को कभी कुछ पता नहीं चला। बढ़िया घोड़े के बदले बचाया हुआ वह कमजोर, दुबला-पतला गूंगा बच्चा कार्वर के घर में पल रहा था।

मोजेस चाचा चाहकर भी उस घटना को भूल नहीं पाते थे। चाची की मेहनत में उनका भी हिस्सा था। मेरी से तो उन्होंने कभी गुलाम की तरह बरताव किया ही नहीं था। मेरी के इस बच्चे के लिए उनके मन में बड़ी ममता थी, बड़ा दुलार था, सूसान चानी भी इस बात को जानती थी, समझती थी।

अमेरिका का गृहयुद्ध अब समाप्ति पर था। गुलामी को कानूनी तौर पर समाप्त कर दिया गया था। आपसी झगड़े फसादों के कारण बिखरा हुआ सामाजिक जीवन अब धीरे-धीरे पटरी पर आ रहा था। लोग खेती बाड़ी के काम में लग गये थे। एक अर्से के बाद शांतिकाल की फुरसत पायी थी उन लोगों ने। युद्ध की बरबादी से निकलकर जीवन अब कुछ-कुछ खिलने लगा था। डायमंड ग्रोव और आसपास की ओझार्क की पहाड़ियों पर बहार छा रही थी। फलों-फूलों से सजी इन पहाड़ियों की छांव में कार्वर का दुलारा बहुत ही खुश था। वह अब नौ-दस साल का हो गया था। कार्वर चाचा का बगीचा उसी के जिम्मे था। वह भी बड़े शौक से इस काम को निभाता और इस काम को करने का अलाव था उसे। पास पड़ोस की झाड़ियों से नए-नए पौधे लाता और उन्हें मोजेस चाचा के बगीचे में लगाकर उनकी देखभाल में जुट जाता। कभी नहीं कई क्यारी बनाता, कभी किसी पौधे को धूपवाले कोने में लगाता। उसका हाथ लगते ही पौधे जैसे खिल उठते, सारे बगीचे का कायापलट हो जाता। वह उसका अपना काम था।

कार्वर परिवार की नयी पड़ोसिन श्रीमती म्युलर चाची के पास आयी थी गपशप के लिए। इतना सुंदर बगीचा देखकर वो एकदम हैरान रह गयीं। कितने ही पौधे तो उनसे पहचानते भी नहीं बने। उनकी पूछताछ से तंग आकर आखिरकार चाची ने अपने मालीबाबा को बुलाया और वे छोटे मालीबाबा गुनगुनाते हुए आकर खड़े हुए।

'क्यों भई। आप तो कह रही थीं, गूंगा है, बोलना भी नहीं आता, और यह तो गीत गुनगुना रहा है।' शुरू हो गयीं श्रीमती म्युलर!

'सचमुच गूंगा है वह। दो-चार शब्दों के अलावा ज्यादा नहीं बोल पाता। लेकिन फूल, पत्ते, पौधों और नन्हें-नन्हें अंकुरों के पास होता है तो ऐसे ही खुश होकर गुनगुनाता रहता है। इसकी मां ऐसी ही गीत गुनगुनाया करती थी।' चाची तो खो गयी अपनी अभागी 'मेरी' की यादों में।

छोटा माली और उसका वह, अद्‌भुत बगीचा देखकर पड़ोसन आश्चर्य से दंग रह गयीं। उसने छोटे को बहुत सराहा। लेकिन वह छोटा लड़का बड़ी ही परेशानी में पड़ गया था। क्या वाकई ये लोग पौधों के बारे में जानते भी हैं? कभी ध्यान देते हैं? या सिर्फ यूं ही दिखावा करते हैं?

मोजेस चाचा भी अब इस लड़के के निरालेपन को जान गये थे। उसकी आश्चर्यजनक पैनी निरीक्षण शक्ति का अंदाजा उन्हें हो चला था। पेड़-पौधों की जरा-जरा सी बात, छोटी से छोटी इल्ली भी उसकी नजर से बच नहीं सकती थी। घर आंगन के पौधे उसकी निगरानी में बिलकुल सुरक्षित थे। बहुत खुश रहते थे मोजेस चाचा उससे।

इस एकाकी अबोले लड़के का मित्र परिवार भी अजीबो-गरीब था। जंगल की झड़बेरी, पेड़-पौधे, छोटे-छोटे पंखेरु, तलैया की छोटी मछलियां ये थीं उसकी संगी-साथी। कभी-कभी इनकी वजह से चाचा से डांट-डपट भी सुननी पड़ती थी उसे, भूले भटके एकाध चपत भी रसीद हो जाती थी, फिर भी इन मित्रों से दूर नहीं रहा जाता था उससे। एक बार तो उसने सूखे पत्ते, घास, धागे और डोरियों से इतना सुंदर और हूबहू घोंसला बनाया था कि किसी को विश्वास ही नहीं होता था कि यह हाथ से बनाया गया है।

छोटे माली का मन इन फूल-पत्तों में जीवजंतुओं में ऐसे रमता था कि उसे आसपड़ोस का ख्याल भी नहीं रहता था। छोटा सा अंकुर, नन्हीं कोपल, जरा सी इल्ली, दीमक कोई भी चीज उसे घंटों बहलाये रखती। इन निरीक्षण से उसे जाने कितनी ही बातों का पता चलता। पेड़-पौधे मानों उससे बातें करते थे। अपने दुख दर्द इस छोटे माली तक पहुंचाने की भाषा उनके बीच

कायम हो गयी थी। उसमें और पौधों में कोई फर्क नहीं रह जाता था। तब मोजेस कहते, 'पौधों की देखभाल कैसे करनी चाहिए, उनके मन की बातें कैसे समझनी चाहिए, ये कोई इससे सीखे।'

अड़ोस-पड़ोस के लोग उसे छोटा माली कहते। इस छोटे माली को दूसरों के बगीचों के पेड़-पौधों की दवा-दारू करने के लिए कितने ही बुलावे आते। फिर ये नन्हें डाक्टर बाबू उन पौधों का इलाज करने जाते थे। किसी पौधे की जगह बदलने की जरूरत होती, किसी क्यारी की मिट्टी की गुड़ाई करने की आवश्यकता होती, तो किसी पौधे को तेज धूप से बचाना होता था। छोटे माली बाबा का हाथ लगते ही जैसे जादू की छड़ी चल जाती, बाग का रूप ही बदल जाताा था। इन कामों के कारण माली बाबा के अनुभवों की गठरी भी बढ़ रही थी। पड़ोसन श्रीमती बेनयाम चाची के गुलाब के पौधे, 'क्या इन्हें गुलाब कहा जाए।' इस हालत में थे। पूरा बगीचा ही बेहाल था। बेचारी चाची बगीचे की बुरी हालत देख कर परेशान हो रही थी। एक दिन वह सूसान चाची के पास आयी और माली डाक्टर को अपने घर ले गयी। छोटे माली ने पूरे बगीचे का मुआयना किया, गुलाबों की जांच-पड़ताल की, फिर अपने तरीके से इलाज शुरू किया। काम खत्म हुआ तो चाची से मिलने घर के अंदर गया और दरवाजे पर ठिठक कर रह गया। कितनी देर तक वह उन तस्वीरों के रंग और रेखाओं को निहारता रहा। जाने कब से बेनयाम चाची पीछे खड़ी थी। आसपास की बातों से बेखबर हो गया था वह।

'तस्वीरों में रंग भरना अच्छा लगता है तुम्हें?' चाची पूछ रही थी।

'जी, हां, मैं....।' बेचारे माली बाबा की जबान उसका साथ नहीं देती थी।

'तुम तो मेरे पौधों का इलाज करने आये थे न। क्या हुआ फिर?' चाची ने पूछा।

'धूप की जरूरत है उनको और मैंने उनकी जगह बदल दी है।' बड़ी मुश्किल से बोल पाता था वह। आजकल दो-चार शब्दों वाले वाक्य बोल लेता था। सामने वाले को जरा ध्यान से सुनना पड़ता था तभी बात समझ में आती थी। बेनयाम चाची कुछ ठीक से समझ नहीं पायी, इसलिए, इसलिए खुद बाहर जाकर देख आयी। गुलाब के पौधों की जगह बदल दी गयी थी और ऐसी जगह लगाए थे जहां उन्हें दिन भर सीधी साफ धूप मिल सकती थी। खुश होकर चाची ने माली बाबा को शाबासी दी और साथ में एक सिक्का भी। मुट्ठी में सिक्का लिए, वह चल पड़ा वापस घर की ओर, लेकिन अब उसके दिमाग में न तो वे गुलाब थे न ही वह सिक्का। वहां तो अब नाच रही थी वे रंगीन तस्वीरें।

घर आकर सूसान चाची के पीछे पड़ गया वह। तंग कर डाला सवाल पूछ-पूछ कर। फिर बैठक खाने की रंगीन तस्वीरें दिखलाकर नये-नये सवाल पूछने लगा। उसकी अधकचरी बातें भी चाची समझ लेती थीं। उन्होंने उसे रंग और रेखाओं के बारे में समझाया। बस अब क्या था, एक और नयी बात हाथ आ गयी थी। झाड़ियों के झुरमुटे के एकांत में यह माली बाबा फूल, फल, पत्ते कूट-पीसकर रंग निचोड़ते और पंछियों के पंखों के ब्रश बनाकर तस्वीरें रंगते। खिड़कियों के टूटे शीशे, लकड़ी की पटिया और अगर कुछ भी न जुटे तो पत्थरों पर यह चित्रकारी करते।

उसका बड़ा भाई जिम अब तक एक अच्छा हट्टा-कट्टा तगड़ा जवान हो गया था। जिम मोजेस चाचा के साथ खेती-किसानी के मेहनत के काम करता था। लेकिन छोटा भाई दुबला-पतला, कमजोर होने की वजह से घर में ही रहता था। सूसान चाची के आगे-पीछे घूमा करता। अपनी पैनी नजर से चाची के सारे काम देखता रहता। उनका मोमबत्ती बनाना, चमड़ा कमाना, उनकी कताई-बुनाई, चूल्हों की लिपाई-पुताई और तो और डबलरोटी, बिस्कुट, पुडिंग बनाना, मसाले बनाना, कुछ भी तो नहीं छूटता था उसकी नजर से, देखता और खुद भी अपने हाथों से बनाता। चाची सोचती, चलो और काम तो इसके बस का है नहीं, यही काम सीख ले तो क्या हर्ज है। चाची उसे सारे काम अच्छी तरह से समझाती, तमाम बारीकियों के साथ सिखातीं। शक्कर और कॉफी ये दो ही चीजें वे लोग खरीदते थे, बाकी और चीजों का बंदोबस्त वे लोग स्वयं करते। कितनी ही चीजें चाची अपने हाथों से घर पर बनाती थीं। छोटा भी बहुत कुछ सीख गया, माहिर हो गया। कार्वर परिवार अच्छा खाता-पीता घर था लेकिन मनमानी नहीं चलती थी, अनुशासन वाला घर था, सब काम तरीके से, कायदे से होते थे। बचपन से वह यह देखता आया था, उनके मन पर इन बातों का गहरा असर हो रहा था। वैसे भी कार्वर परिवार ने इन दोनों भाइयों के साथ कभी भी नीग्रो गुलामों की तरह बरताव नहीं किया था। चाहते तो वे दोनों कहीं भी जाने के लिए स्वतंत्र थे। लेकिन ये दो बेचारे अनाथ जीव जाते भी तो कहां जाते? मोजेस कार्वर और सूसान चाची ये दो ही सहारे थे उनके और उन्हीं के सहारे वे जी रहे थे।

थोड़ा बड़ा होने के बाद जिम डायमंड ग्रोव छोड़कर अपना नसीब आजमाने के लिए बाहर निकल पड़ा। लोकिन छोटा कहीं

नहीं गया। वहीं पर रहा। उसकी सच्चाई, विनम्रता, ईमानदारी देखकर कार्वर परिवार ने उसका नामकरण किर्या 'जार्ज', महान नेता जार्ज वॉशिंगटन के नाम। छोटे को अब जार्ज कहने लगे सब। 'गूंगा', 'छोटा' 'माली बाबा' इन सबकी जगह वह अब 'जार्ज' कहलाने लगा।

जार्ज के कमजोर स्वास्थ्य के कारण सूसान चाची उसे कहीं दूर भेजने के लिए राजी नहीं होती थीं। उनकी मेरी का दुलारा था वह। जार्ज भी कहीं दूर नहीं जाना चाहता था। उसकी मां के बारे में निश्चित रूप से कुछ पता तो था नहीं। जार्ज सोचता, क्या पता, कभी अचानक मां वापस आये तो? मां की वापसी की उम्मीद में वह अपनी कोठरी भी रोज झाड़-पोंछकर साफ रखता था, मां के स्वागत के लिए।

कभी-कभी सूसान चाची से वह अपनी मां के बारे में पूछता। 'मेरी' की याद से चाची का गला रुंध जाता। वे कहतीं, 'तुम्हारी मां, बहुत अच्छी थी, बहुत गुणवान, बिल्कुल तुम्हारी तरह। तुम्हारी ही तरह काम करते समय अपनी मीठी आवाज में कुछ गुनगुनाती रहती। काम करने में एकदम तेज, चुस्त। उसे लिखना-पढ़ना नहीं आता था। लेकिन उसकी याददाश्त बहुत तेज थी, हर बात याद रहती थी उसे।

दिन बीत रहे थे।

कभी-कभी झुंझलाकर मोजेस चाचा अपनी पत्नी से शिकायत करते, 'ये लड़का तो दिमाग चाट जाता है, पूछता है, 'घास हरी क्यों है? टिड्डी क्यों कूद सकती हैं? सवेरे की कच्ची धूप दोपहरी में कहां चली जाती है? इंद्रधनुष तैयार होने में कितने साल लग जाते हैं?' और जाने क्या कुछ! अरे ये भी कोई सवाल हैं! लड़का न हुआ मुसीबत हो गयी।'

सूसान चाची हंस पड़तीं, कहतीं, 'हां, इसीलिए तो उसे बार-बार घर में भेज देते हो, मेरी 'मदद' करवाने! सब जानती हूं मैं। लेकिन मुझे जरा भी शिकायत नहीं हैं। बल्कि जार्ज के साथ तो सारा कामकाज बड़ी जल्दी निबट जाता है।'

'हां उससे खेती-किसानी तो होगी नहीं। चूल्हे-चौके के काम के ही लायक है वह।' चाचा की नाराजगी छिपती नहीं, चाची सोचती, 'बेचारा कमजोर है तो कोई क्या करे? वैसे भी वह अब दस साल का हो गया था इसलिए उसके लिए स्कूल का इंतजाम करना जरूरी था। इस बात पर मोजेस चाचा फिर झल्लाये, 'लेकिन है कहां नीग्रो बच्चों का स्कूल? और फिर पढ़-लिखकर भी यह क्या कर लेगा।'

चाची बोलीं, 'लेकिन उसे ऐसा कुछ काम तो सिखाना ही पड़ेगा जिससे वह अपनी रोजी-रोटी कमा सके। यह जंगल झाड़ियों में घूमना और फूल पत्ते, जीव जंतुओं का प्रेम उसे जिंदगी की भाग-दौड़ में क्या काम आयेंगे और फिर बात बदलकर उन्होंने कहा, 'जार्ज के भरोसे इस बार अंगूरों की पैदावार करने का इरादा किया है ना? कल ही जाने की बात हुई थी न उस स्विटजरलैंड वाले कृषि विशेषज्ञ के पास? चलो, जल्दी-जल्दी निबटाओ सब काम, सवेरे जल्दी निकलना पड़ेगा घर से।'

स्विटजरलैंड के एक कृषि विशेषज्ञ श्रीयुत हरमन यायगर उन दिनों मिसोरी राज्य में अंगूरों की पैदावार पर प्रयोग करने के लिए आए हुए थे। मिसोरी राज्य की जमीन और आबोहवा अंगूर की उपज के लिए योग्य पायी गयी थी। मोजेस कार्वर ने भी अपने खेत के एक हिस्से में अंगूर की पैदावार का प्रयोग किया था। यायगर साहब जार्ज से बड़े खुश थे। उनकी बतायी हुई हर बात का, छोटी से छोटी बात का भी जार्ज ने पूरा ध्यान रखा था। अंगूर बेलों की कड़ी निगरानी की थी, पूरी मुस्तैदी से मेहनत की थी। यायगर साहब उसकी इस चुस्त कारीगरी से खुश हो गए थे। प्रयोग सफल हुआ। मोजेस चाचा ने अब बड़े पैमाने पर अंगूरों की पैदावार करने की सोची। उन्हें लग रहा था कि जार्ज भी उस बहाने खेती-किसानी के कामकाज में कुछ नयी बातें सीख लेगा।

'जार्ज कल सवेरे उस अंगूरों वाले यायगर साहब के पास जाना है, याद तो है ना?' मोजेस चाचा जार्ज से कह रहे थे।

'हां, वह अंगूरवाला!! लेकिन चाचा, अंगूरों का रंग जामुनी क्यों होता है?' जार्ज।

'यह तो मुझे नहीं मालूम। लेकिन सभी अंगूर जामुनी नहीं होते, कुछ हरे भी होते हैं। तुम्हारे हरेक प्रश्न का मेरे पास जवाब नहीं।' मोजेस चाचा ने कहा।

जार्ज ने पूछा, 'भगवान को होगा मालूम?'

'हां, बिल्कुल होगा, भगवान तो मालूम न हो ऐसा इस दुनिया में कुछ है ही नहीं।' चाचा बोले।

'ऐसा? तो मैं अभी जाता हूं और भगवान से ही पूछता हूं।' एक छलांग लगाकर दौड़ते हुए जार्ज ने कहा। मोजेस चाचा गुस्से से भर उठे। जार्ज को चिल्लाकर वापस बुलाने ही वाले थे कि चाची ने रोका, समझाया, 'जाने दो उसे।'

'अरे, जाने क्या दो? ऐसी उद्दंडता अच्छी नहीं। एकदम गलत बात है। भगवान के बारे में ऐसे बात करता है जैसे कि भगवान इसके दरवाजे पर आकर खड़े हुए हों।

'शायद वैसा ही हो।' चाची बोली, 'सूसा... न, अरे! तुम भी...?'

मोजेस चाचा सोच में पड़े गए। फिर धीरे-धीरे बोले, 'शायद तुम ठीक ही कह रही थी। लेकिन उसे अब पढ़ना-लिखना तो सीखना ही पड़ेगा। अब उसे बाइबल पढ़ना तो सिखाना ही पड़ेगा। हमारे साथ रहते हुए कोई पाखंडी बने नहीं, ऐसा नहीं होगा। अब उसे बाइबल पढ़ना, भगवान और धर्म के बारे में आदर रखना तो सीखना ही पड़ेगा।'

चाची ने बताया, 'पड़ोस की श्रीमती म्यूलर ने उसे एक पुरानी वर्णमाला दी है। उनका बगीचा सींचने जाता है तो साथ ले जाता है। वे कह रही थी कि जार्ज को वह वर्णमाला पूरी की पूरी याद हो गयी है।'

'वह सब चाहे जो कुछ भी हो, उसे अब बाइबल पढ़ना सिखाना ही पड़ेगा और ईश्वर का आदर करना भी सिखाना ही है। मोजेस चाचा आज अपनी बात पर बिल्कुल अडिग थे।

दूसरे दिन बड़े तड़के मोजेस चाचा जार्ज के साथ निकल पड़े। खटारे में पीछें की तरफ जार्ज अपने नंगे पैर लटकाकर बड़े मजे से बैठा था। औरों के लिए वह सिर्फ 'कार्वर के घर का गुलाम लड़का' था, उसकी और कोई बात गौर करने लायक थी ही नहीं। स्वयं जार्ज को भी इन बातों से कोई लेना-देना नहीं था। ना तो उसे अपने बेढंगे कपड़ों से कोई परेशानी थी, न ही उसे खबर थी कि उन कपड़ों में वह कितना अजीब दिखता है। सिर्फ बचपन की ही बात नहीं, आगे चलकर भी इन बातों से जार्ज कार्वर को कोई सरोकार नहीं था।

सूरज चढ़ आया तब उन्होंने अपना इक्का एक पेड़ की छाया में खड़ा किया और चाची द्वारा साथ दिया हुआ खाना खाया। एक 'गोरा' एक 'काले' लड़के को साथ बिठाकर खाना खिला रहा है यह देखकर आते-जाते लोगों ठिठकते। गुलामी का साया अभी तक मन-मस्तिष्क से हटा नहीं था।

मोजेस चाचा वही पेड़ तले बैठकर सुस्ताने लगे। उनकी झपकी लेना, जार्ज को बड़ा अच्छा लग रहा था क्योंकि तब तक वह आसपास की चीजों का अच्छी तरह से निरीक्षण कर सकता था।

घंटे भर के आराम के बाद वे आगे की ओर चल पड़े।

यायगर साहब का बगीचा देखकर तो जार्ज एकदम खुश हो गया। चाचा और यायगर साहब बातचीत कर रहे थे। जार्ज भला ऐसा मौका हाथ से कैसे जाने देता! वह तुरंत वहां से खिसका और सारे बगीचे में घूमघूम कर देखने लगा। क्या नहीं था वहां? उस बगीचे की निर्दोष रचना, वहां की ताजगी भरी हरियाली देखकर उसे लगा जिसे स्वर्ग, नंदनवन कहते हैं वह यही तो नहीं? उस बेचारे ने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि भविष्य में उसके दुबले-पतले हाथ भी ऊसर बंजर जमीन पर ऐसे नंदनवन का निर्माण करने वाले हैं।

जार्ज एक गमले के पास रुक गया। जमीन पर बैठकर उस गमले की वनस्पति को उसने हल्के से छूकर देखा। उसके अंकुरों को धीरे से, प्यार से सहलाया। कोपलों के करीब जाकर हौले-हौले गीत गुनगुनाया। यायगर साहब सब देख रहे थे। उन्होनें मोजेस चाचा से कहाए 'लगता है, इसे मेरे पौधे बहुत अच्छे लगे हैं, देखो, कैसे दुलार रहा है।' उन्होंने जार्ज को अपने पास बुलाया और पूछा, 'बेटे पेड़-पौधों से बहुत प्यार है तुम्हें, क्यों।' जार्ज ने नजर उठाकर देखा, पल भर के लिए दोनों की आंखें मिलीं, मन से मन की बात हुई। पेड़-पौधों के बारे में अपने मन की बात समझाना शायद जार्ज के बस की बात नहीं थी। लेकिन अब उसे यह विश्वास हो चला कि वह स्वयं कर रहा था, करना चाहता था, उस विषय का 'जानकार' उसके सामने खड़ा था।

'जी हां, इन पेड़-पौधों की हर बात मुझे अच्छी लगती है।' जार्ज के हाथों को अपने हाथों में लेकर उसकी लंबी-लंबी उंगलियों को प्यार से सहलाकर यायगर साहब ने कहा, 'असली माली के पैदाइशी हाथ हैं यह, सिर्फ छू लेने से संजीवनी देनेवाले।'

यायगर साहब ने कार्वर से कहा, 'माली बाबा तो एकदम छोटे से हैं और आप कह रहे थे कि अंगूर बेलों की देखभाल की है।'

मोजेस चाचा ने फिर जार्ज की पूरी कहानी यायगर साहब को सुनायी और कहा, 'नीग्रो सिर्फ अपनी मेहनत-मजूरी पर ही जी सकता है और यह तो कभी भी ताकतवाला तगड़ा जवान नहीं बन सकेगा। हालांकि मैंने इसे पूर्ण स्वतंत्रता दे रखी है, लेकिन यह मुझे छोड़कर कहीं जा ही नहीं सकता। बाहर की दुनिया में इसके लिए रोजी-रोटी कमाना भी मुश्किल हो जाएगा।'

यायगर साहब समझ गये। उन्होंने फिर जार्ज को कई बातें सिखलाई। अंगूर का कलम करना सिखाया। कलम करने से अंगूरों की गुणवत्ता में सुधार कैसे होता है, यह समझाया।

'मैं अंगूरों की बढ़िया किस्म पैदा करने का प्रयत्न कर रहा हूं। भगवान के मार्गदर्शन में मेरे यह प्रयोग चल रहे हैं। वह विधाता, वही परमेश्वर तुम्हारा पिता है।'

'मेरा पिता . . . ' जार्ज बोलते-बोलते अटक गया।

'हां, बिल्कुल सही बात, तुम्हारा पिता। उसी ने तुम्हें बनाया है। जंगल झाड़ियों की तरह वनस्पतियों की तरह तुम भी अकेले तो हो लेकिन उस दयानिधि प्रभु ने तुम्हें सृजनशील हाथ दिए हैं। मेरी ही तरह तुम विधाता का आदेश मानो। उसके निर्माण कार्य में सहयोग करो।'

'जार्ज को याद आ रहा था, मोजेस चाचा से सुना हुआ, बाइबल का वचन, 'यह भूमि विधाता की है।'

वापसी का समय हुआ। यायगर साहब की बातों से जार्ज के मन में जैसे चांदनी खिल उठी थी। कितनी ही नयी बातों के बारे में उसे आज पता चला था। एक नयी नवेली दुनिया देख आया था वह। मोजेस चाचा भी सोच रहे थे यायगर साहब की बातों को दुहरा रहे थे। उन्हें भी तो कितनी नयी बातों का ज्ञान मिला था। इतना अच्छा मार्गदर्शन मिला था लेकिन अब बड़ी देर हो गयी थी। मोजेस चाचा तो अब बूढ़े हो चले थे, थक गए थे। उनके कोई बाल-बच्चा भी नहीं था। उन्हें लग रहा था, जार्ज ही जरा तंदरुस्त होता तो उसी को सारा भार सौंपा जा सकता था। लेकिन वह तो जमीन की जुताई भी नहीं कर पाता, सारा भार कैसे संभालें?

घर लौटने पर चाचा ने जार्ज को सारी बातें समझायीं। यायगर साहब ने गांव में, 'नेओशो' में नीग्रो बच्चों का स्कूल था। उन्होंने जार्ज से पूछा, 'आज हम लोग जहां गये थे, उस निओशो गांव में नीग्रो बच्चों का स्कूल है, तुम जाओगे इस स्कूल में?' जार्ज चुप रहा। कुछ कहने की आवश्यकता ही नही थी। उसी समय वह समझ गया कि अब कार्वर परिवार छोड़कर दूर जाना है। बाहरी दुनिया में अपने बूते पर चलना है। 'सारी धरती मेरी है। मेरे पिता के कार्य में सहयोग देने के लिए अब मेरी बारी आयी है।'

एक हफ्ते बाद जार्ज फिर एक बार निओशो की राह पर चल रहा था। लेकिन इस बार वह अकेले, पैदल ही रास्ता काट रहा था। मोजेस चाचा साथ आने वाले थे लेकिन अचानक एक बछड़ा बीमार हो गया और चाचा साथ नहीं आ सके।

जार्ज के पास स्कूल की यूनिफार्म होने का सवाल ही नहीं उठता था। लेकिन सूसान चाची और श्रीमती म्यूलर ने मिलकर उसके कपड़ों का बंदोबस्त कर दिया था। कांटछांट की हुई एक पतलून, एक पुराना शाल और फिर यायगर साहब की दी हुई किताब, पुरानी वर्णमाला, टहनियां काटने का छोटा चाकू और दो बड़े-बड़े सेब! और हां, एक जोड़ी जूते भी मिले थे लेकिन रास्ते की धूल से कहीं खराब न हो जाए, इसलिए उन्हें बांधकर उसने अपने कंधे पर लटका रखे थे। इन सब चीजों के अलावा उसके पास था म्यूलर चाची का दिया हुआ एक डॉलर, पूरा एक डॉलर, उसकी पहली नकद कमाई।

ये तैयारियां जब चल रहीं थीं तब जिम भी आया, जार्ज से मिलने जाने की बात सुनकर उसने जार्ज से कहा, 'आराम से रोटी छोड़कर क्यों दूर जा रहे हो? वर्णमाला के अक्षर सीख लिए, बस हो गया।'

'सिर्फ अक्षर सीख लेने से क्या पढ़ाई खत्म हो जाती है? मैं तो इतने शब्द सीखूंगा, इतने शब्द सीखूंगा कि पूरी किताब लिख सकूं।' जार्ज की यह भयंकर बात सुनकर जिम बेचारा चुप हो गया।

सूसान चाची अपने जार्ज के बारे में बहुत आश्वस्त थीं। जार्ज के सदगुणों के बारे में जानती थी और फिर जार्ज में कोई खटनकने

वाली बात थी भी नहीं। चाची ने उसे विदा करते समय कहा, 'कोई बड़ा सा घर ढूंढना, उन्हें बता देना, तुम्हें कौन-कौन से काम करना आते हैं। मदद करने वाला बड़ी मुश्किल से मिलता है, लेकिन मुझे तुम पर पूरा भरोसा है। तुम अपनी राह खुद बनाओगे।'

मोजेस चाचा ने कहा, 'अपना ख्याल रखना और याद रखना, तुम अब स्वतंत्र हो, गुलाम नहीं। कोई तुम से मुफ्त में काम करवाना चाहे तो मना कर देना। तुम अब गुलाम नहीं हो, स्वतंत्र हो।'

जार्ज को विदा करते समय कार्वर दम्पत्ति का दिल भर आया। राह के मोड़ पर जार्ज रुका, एक बार पीछे मुड़कर देखा और फिर चल पड़ा। दस साल का वह अनाथ बालक अपनी सुरक्षित दुनिया छोड़कर अनजानी दुनिया की तरफ चल पड़ा था। एक अनाम भय की लहर उसके तन-बदन में दौड़ गयी। लेकिन अब सिर्फ आगे ही बढ़ना था। कदम, दो कदम और वह चल पड़ा आगे की ओर ...

ज्ञान की यात्रा पर ...

ज्ञान की खोज में

नेओशो तक पहुंचते-पहुंचते रात हो गयी। थके मांदे जार्ज ने एक टूटी-फूटी गौशाला में बसेरा किया। सवेरे नींद खुली, तो देखा, बगल में एक तगड़ा कुत्ता सो रहा है। बाप रे! तो रात इसके साथ कटी!

उस दिन उसने जीवन में पहली बार किसी स्कूल का दर्शन किया। स्कूल नीग्रो बच्चों का था। जार्ज के वह अजीब, बेतरतीब कपड़े, बालों में अटके घासफूस के तिनके और उसपर वह किरकिरी आवाज! अटक-अटक कर बोलना। सब बच्चे उसकी तरफ हैरत से देख रहे थे।

स्कूल की छुट्टी हुई। देखते-देखते पूरा स्कूल खाली हो गया। बच्चे तो अपने-अपने घर चले गये, जार्ज अपनी कक्षा में ही बैठा रहा। शिक्षक ने उसे घर जाने के लिए कहा। कहां जाए, कुछ समझ नहीं पड़ता था। सूसान चाची की बातें याद आयीं, फिर कितने ही घरों में उसने काम मांगा। लेकिन इतने छोटे से लड़के को भला कोई क्या काम देता?

इसके बाद कुछ दिनों तक वह छोटा सा लड़का, जो मिलता वही काम करता। मेहनत मजदूरी से कमाए हुए पैसों से खाने के लिए कुछ खरीदा जा सकता है, यह बात सीखने के लिए उसे दो दिन खाली पेट रहना पड़ा था। एक बार तो एक दुकानदार ने चोर समझकर एक झापड़ भी जमा दिया था। जिंदगी की सीखें मिल रही थीं।

दिन भर स्कूल और उसके बाद दो कौर रोटी जुटाने के लिए मेहनत मजदूरी करने के बाद रात सोने के लिए, टूटी-फूटी गौशाला का आसरा था। फिर सवेरे जल्दी उठकर, आने वाले दिन से जूझने के लिए तैयार। लेकिन स्कूल रोज जाता था। उसके बोलने में अब काफी सुधार था। अटकना भी कम हो गया था। लेकिन आवाज! वह वैसी ही सातवें सुर में थी। किरकिरापन अवश्य कम हो गया था।

नेओशो की वह सर्दियां जार्ज जिंदगी भर नहीं भूला। हड्डियां तक जम जाए ऐसी जानलेवा सर्दी। रोज जागने पर जार्ज सोचता कि रात की सर्दी से वह कैसे बचा। एक भयानक ठंड में अन्न के अभाव में, गरम कपड़ों के बिना भी जार्ज मरा नहीं, यह एक आश्चर्य ही है। लेकिन वह जिंदा रहा, खून जमा देने वाली उस ठंड के परिणाम आगे की पूरी जिंदगी सहते हुए भी वह जिया यह निश्चित!

बसंत का मौसम आया। उन दिनों बसंत आते ही नीग्रो बच्चों के स्कूलों में छुट्टियां हो जाती थीं ताकि खेतों में बुआई के कामों में बच्चों की मदद हो सके। छुट्टियों में क्या करना है यह जार्ज कब से सोच रहा था। उसे तो बस्ती के बाहर निकलने वाले यायगर साहब से मिलना था। उन्हें बताना था कि उनकी दी हुई किताब पढ़ सके इसलिए सब कुछ सहकर भी वह पढ़ाई कर पा रहा था। भूखे पेट रहकर भी स्कूल में जाता रहा पर पढ़ाई जारी रखी थी। यह सब बताकर उनसे शाबासी लेनी थी। यायगर साहब से मिलने के सपनों में डूबा कोस दो कोस रास्ता तय करके वह उनके बगीचे पर जा पहुंचा। फाटक पर ही उसे पता चला कि यायगर साहब को गुजरे दो महीने हो गये। वह सन्न रह गया। जिस भयानक जाड़े में जार्ज जैसे-तैसे बचा था, उसी जाड़े पर यायगर साहब की बलि चढ़ गई थी। एकदम उदास और खिन्न मन से जार्ज लौट आया।

अपनी अगली जिंदगी में उस घटना को याद करते हुए जार्ज कार्वर कहा करते, 'उस दिन कितना निराश हो गया था मैं! उस

बगीचे से कैसे वापस आया, गांव तक कैसे पहुंचा, मुझे उस समय कुंछ समझ में नही आया और बाद में भी मैं कभी समझ नहीं पाया।'

रोज ही की तरह थकामांदा जार्ज सो रहा था कि अचानक किसी के झकझोड़ कर जगाने से नींद टूटी। सामने गौशाला के मालिक को देख जार्ज को लगा, बस अब यह ठिकाना भी गया। अब तो मालिक के हाथों मार खानी पड़ेगी ऐसा सोचकर डर के मारे बुरी हालत हो गयी। थके हारे, भूखे जार्ज ने जोर से गला फाड़कर रोना शुरू कर दिया।

लेकिन हुआ कुछ और ही। जगानेवाला मारने नहीं आया था। उसने तो जार्ज को प्यार से अपने पास बुलाया, समझाया, 'अरे रोयो नहीं, मैं तुम्हें मारूंगा थोड़े ही, यहां क्यों सोए हो? कौन हो तुम? यहां कैसे आए?'

एक तो पहले ही अटक-अटक कर बोलना, उस पर बार-बार उमड़ पड़नेवाली रुलाई, हिचकियों के बीच जैसे-तैसे जार्ज ने अपनी कहानी उसे सुनाई। उस भले आदमी ने जार्ज को धीरज बंधाया, कहा, 'जाओ, डरो नहीं, मेरे साथ चलो।'

उस भले आदमी का नाम था जॉन मार्टिन। जार्ज को लेकर जॉन अपने घर आया। उस घर में, साफ-सुथरी टेबल पर, जाने कितने महीनों के बाद जार्ज ने खाना खाया। भरपेट खाना और सोने के लिए एक खटिया। भरे पेट नींद कैसे बढ़िया आई।

जार्ज अब मार्टिन परिवार के साथ ही रहने लगा। जॉन मार्टिन एक आटे की चक्की पर काम करता था। मार्टिन दम्पत्ति की आर्थिक स्थिति कुछ खास नहीं थी। लेकिन गरीब नीग्रो गुलामों के लिए सहानभूति होने के कारण जॉन मार्टिन उन्हें जितनी संभव हो सके उतनी मदद अवश्य करता था। मार्टिन दम्पत्ति के कोई बाल-बच्चा नहीं था। जार्ज को उन्होंने अपने बेटा ही माना। उनके मन में कभी यह विचार भी नहीं आया होगा कि उस दिन का उनके जीवन में कितना महत्व रहने वाला है। इस काम से उन्हें कितना संतोष मिलने वाला है।

दूसरे ही दिन से मार्टिन को जार्ज के निरालेपन का अनुभव होने लगा। जार्ज के अनगिनत गुण भला कहां छिपते। उसकी चुस्ती-फुर्ती, हर काम को मन लगाकर करने की लगन। चाहे काम रसोईघर का हो या बगीचे का, काम करने की कुशलता, साफ-सुथरा ढंग। मार्टिन के घर का बगीचा इतना साफ कभी नहीं था। सब क्यारियां साफ-सुथरी होकर सज रही थी और फिर जार्ज ने और बीज मंगवाने के लिए कहा था।

मार्टिन दम्पत्ति की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि जार्ज को काम के बदल वेतन दे सकें। अत: उन्होंने जार्ज को दूसरे घरों में काम ढूंढने की सलाह दी। अब जार्ज सवेरे जल्दी जागकर, श्रीमती मार्टिन से भी पहले ही उठकर घर का सारा काम-काज निपटा देता था। नाश्तापानी निपटा कर काम की खोज में गांव की ओर चल पड़ता। रोज की रोटी-पानी अब नहीं करनी पड़ती थी इसलिए अब उसके जीने में उत्साह आ गया था। गांव के लोग भी उसके गुणों के कारण उसे बहुत चाहने लगे थे। जार्ज भी धीरे-धीरे अपने खोल से निकलकर सबसे हिलमिलकर रहने लगा था। जॉन मार्टिन को जार्ज की कुशाग्र बुद्धि, नया सीखने की लगन का अंदाजा हो चला था। हर बात में जॉन उसे मदद करता, उसका उत्साह बढ़ाता था।

जॉन मार्टिन सोचते कि जार्ज अभी भी कुछ खिंचा-खिचासा, बुझा-बुझासा रहता है। उसे लगा कि शायद जार्ज को 'अपने' लोगों से मिलना-जुलना अच्छा लगे। इसलिए उसने जार्ज को नीग्रो लोगों के चर्च भेजने की बात सोची।

जॉन मार्टिन के कहने पर जार्ज इसी इतवार को चर्च गया। हर कोई कैसे सजधज कर आया था। जार्ज बिल्कुल पिछली कतार के एक कोने में जा बैठा।

प्रार्थना शुरू हुई। प्रार्थना गीत के सुरों में जार्ज अपनी सुध खो बैठा। मां ऐसे ही सुरों में गुनगुनाया करती थी शायद, उसकी भावनाएं झंकार उठीं। सुधबुध खोकर सुनता रहा जार्ज।

इस प्रार्थना गीत के बाद का प्रवचन उसे जरा नहीं भाया। उसके मन में एक बात आई - यायगर साहब ने जितना भगवान को समझा उतना किसी और की समझ में शायद ही आया हो।

उसी चर्च में उसकी मारिया बुआ से पहचान हुई। बुआ की सिर्फ देह ही बड़ी अच्छी नहीं थी। दिल भी बड़ा था। उसने बड़े प्यार से जार्ज से पूछताछ की। मारिया बुआ के लिए जार्ज के मन में अपनापन जाग उठा। बुआ के साफ-सुथरे कपड़े और उनके मीठे बोल, जार्ज को सूसान चाची की याद दिला गए।

चर्च से जार्ज का मन जल्दी ही ऊब गया। चर्च के बाहर हरी-हरी घास पर लेट कर प्रभु के गीत सुनना उसे ज्यादा अच्छा

लगता था। जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, प्रकृति में समाए ईश्वर का साहचर्य उसे और अधिक भाने लगा। प्रकृति का सान्निध्य ही उसकी सुख की कल्पना थी। वहां उसे बहुत आनंद और शांति मिलती थी।

यह बात मार्टिन दम्पत्ति की नजरों से छिपी नहीं। उन्होंने भी जार्ज से बार-बार चर्च जाने का आग्रह करना छोड़ दिया। लेकिन उसका अकेलापन दूर करने की बात सोचकर उसे अड़ोस-पड़ोस के बच्चों के साथ मछली पकड़ने के लिए भेजा। जाते समय तो जार्ज बड़ा ही खुश होकर सब के साथ नदी पर गया। लेकिन जब बच्चों ने कांटे में केंचुए अटकाकर पानी में डालने शुरू किए तो वह भड़क उठा। उसने सब कांटें पानी से निकाल लिए और चिल्लाने लगा, 'अगर तुम लोग इन छोटे-छोटे केंचुओं को मारोगे तो ईश्वर तुम्हें सजा देंगे।'

और फिर वह अकेला मछली, नदी सब छोड़कर झाड़ियों में चला गया फिर से अपनी अकेली दुनिया में।

पूरा साल बीत गया। जार्ज नियमित रूप से स्कूल जाता था। स्कूल में उसका मन रम गया था। उसका निरालापन छिपता तो नहीं था लेकिन अब उसे कोई चिढ़ाता नहीं था।

फरवरी का महीना। एक रात अचानक मार्टिन चाची को बहुत बुखार चढ़ आया। फिर तो वह ऐसी बीमार पड़ी कि अब बचेंगी कि नहीं इसका कोई भरोसा न था। जार्ज ने इस बीमारी में चाची की इतनी सेवा की कि और कोई क्या करता। रात-दिन वह चाची की तीमारदारी में लगा रहता। पूरा घर उस छोटे से लड़के के बल चल रहा था। खाना बनाता, चाची की देखभाल करता और बचे समय में दूसरों की नकल उतार कर चाची का मन भी बहलाता। आगे की जिंदगी में भी जार्ज कार्वर औरों को मन बहलाने के लिए अपनी जिस कला का पूरा उपयोग करते रहे उसकी शुरुआत ऐसे हुई थी।

मार्टिन चाची अब बीमारी से उठकर धीरे-धीरे सामान्य हो चली थी। जार्ज भी अब बाहर काम कर सकता था। लेकिन तभी मार्टिन को काम देने वाली आटे की चक्की बंद पड़ गयी। मार्टिन दम्पत्ति को अपने रिश्तेदारों के पास जाना पड़ा। कैलिफोर्निया जाते समय वे लोग जार्ज का उचित बंदोबस्त कर गए और साथ ही उन्होंने उसे आगे की पढ़ाई के लिए मुक्त कैन्सास जाने का सुझाव दिया। नेओशो और कैन्सास के बीच की दूरी है साठ मील। छोटे जार्ज के लिए एक साठ मील का अंतर बहुत ज्यादा था।

जार्ज अब बिल्कुल अकेला रह गया। लेकिन मारिया बुआ ने साथ निभाया। वे जार्ज को अपने घर ले गयीं। जार्ज अब मारिया बुआ और एंडी चाचा के साथ रहने लगा। बुआ का घर था तो सिर्फ एक कमरे का, लेकिन था बड़ा अच्छा, साफ-सुथरा, हर चीज अपनी जगह पर। प्यार और विश्वास से भरा वह घर जार्ज को बहुत अच्छा लगा।

मारिया बुआ जार्ज से कहतीं, 'बेटे, ईश्वर अपने सब बच्चों का ध्यान रखता है। हर एक के नाम कोई न कोई काम लिखा होता है। अपने चाहे या अनजाने कोई काम ईश्वर द्वारा होता नहीं। तुम्हारे, यहां पर, हमारे साथ रहने से कोई न कोई अच्छी बात होने वाली होगी, इसीलिए उस सर्वज्ञानी ने तुम्हें हमारे पास भेजा है।'

मारिया बुआ के काम करने का ढंग, उनकी सुघड़ता के कारण जार्ज को बुआ के सिलाई-बुनाई के काम बहुत अच्छे लगते थे। सफाई में रफू करना, कपड़ों में पैबंद लगाना, जार्ज ने बुआ से ही सीखा।

जाज की लंबी-लंबी उंगलियों वाले हाथ कोई भी करीने की कला बड़ी जल्दी सीख जाते और फिर जार्ज की हर अच्छी बात सीखने की, उसे आत्मसात करने की प्रवृत्ति। इन्हीं के सहारे उसकी जिंदगी आगे बढ़ रही थी।

रोज रात को जार्ज मारिया बुआ को बाइबल पढ़कर सुनाता था। बाइबल के कुछ अंश तो जार्ज को इतने अच्छे लगते कि उसे वे करीब-करीब याद हो गए थे। मोमबत्ती के अभाव में, अंधेरी रातों में जार्ज वे अब मुंह जबानी सुनाता था और उसकी याददाश्त पर आश्चर्यचकित होकर आसपड़ोस की नीग्रो औरतों के मन में जार्ज के लिए प्यार उमड़ आता। मारिया बुआ खुशी से फूली न समातीं।

एक रात ऐसे ही बाइबल पढ़ने के बाद बुआ जार्ज से बोली, 'कितना अच्छा पढ़ते हो तुम, देखना एक दिन बड़े अच्छे कथावाचक बनोगे तुम!'

'नहीं कभी नहीं। मुझे वैसा कुछ नहीं बनना है।' जार्ज को बात पसंद नहीं आई।

एंडी चाचा कहते, 'मुझे लगता है जार्ज अच्छा शिक्षक बनेगा।'

'नहीं! मुझे वो भी नहीं बनना है। मुझे कुछ और ही बनना है।' - जार्ज के कहा।

'अरे! और ही से क्या मतलब है तुम्हारा!' चाचा ने पूछा।

'यह देखो, मुझे ऐसा कुछ बनना है। ऐसा काम करना है।'

और फिर जार्ज ने उन लोगों को एक चीज दिखाई। लकड़ी के एक चिकने पटिये पर गुलाब का फूल बनाया था, लकड़ी तराश कर, जार्ज ने बहुत दिनों तक उस पर मेहनत की होगी। उस सुंदर, नाजुक नफीस नक्काशी को देखकर एंडी चाचा बड़े खुश हो गये। उन्हें विश्वास हो गया कि सचमुच यह लड़का औरों से निराला है। उन्होंने जार्ज से कहा, 'तुम चाहो जो कुछ बनो, 'कोई बड़े' अवश्य बनोगे।'

जार्ज का स्कूल मारिया बुआ के घर के बिल्कुल पास ही था इसलिए बुआ को घर के काम में मदद करना जार्ज के लिए अब आसान हो गया था। बीच की छुट्टी में घर आकर जार्ज एकाध काम निबटा सकता था।

उन दिनों उसने क्या नहीं किया! किसी के घर आंगन की सफाई तो किसी के बगीचे की देखभाल की। कहीं चूल्हे के लिए लकड़ी तोड़कर दी, तो किसी के यहां कपड़े धोए। जो मिला वही काम, जो कुछ पाया उसी दाम में!

ये सन 1870 से 1880 के बीच की घटनाएं हैं। उन दिनों नीग्रो बच्चों को किसी की मदद नसीब नहीं होती थी। किताबें तक नहीं मिलती थीं और खरीदना बड़ा ही मुश्किल काम था। किताबें खरीदना जार्ज के बस की बात नहीं थी। किताबों के लिए उसे हमेशा दूसरों की दया पर निर्भर रहना पड़ता था और फिर इस कर्ज को चुकाने के लिए काम भी करना पड़ता। कभी किसी के आंगन की सफाई तो किसी के घर पर लकड़ी काटी।

दिन ऐसे ही बीत रहे थे। नेओशी के स्कूल में जितनी पढ़ाई हो सकती थी अब पूरी हो चुकी थी। शिक्षक अब जार्ज के अजीबोगरीब सवालों से तंग आ चुके थे। उनके पास इन सवालों के जवाब नहीं थे। अब तो जार्ज को इस स्कूल से और ज्ञान नहीं मिल सकता था। उसके लिए नया स्कूल ढूंढना आवश्यक हो गया था। जार्ज ने गांव में पूछताछ की, फिर पता चला, फोर्ट स्कॉट में है एक स्कूल, फोर्ट स्कूल। अब तो नेओशो से विदा लेने का समय आ गया था। जाने से पहले जिम उससे मिलने आया। दोनों भाई इतने दिनों बाद मिले, दो दिन साथ-साथ रहे। एक फोटो भी खिंचवाई। अब जाने की तैयारियां शुरू हुई। नेओशों से जाते समय जार्ज ने मारिया बुआ को एक अपूर्व भेंट दीं। रेडीमेड कपड़ों की दुकानों के शोकेस में लगे स्वेटरों की बुनाई के नमूने देख कर हू-बहू वैसे ही नमूने स्वयं। बनाए और मारिया बुआ को दिए। उस बुनाई में इतनी सफाई और सुंदरता थी, ऐसी कुशलता थी कि बस! बुआ बार-बार देखतीं और खुश होतीं।

बुआ ने जार्ज को एक अविस्मरणीय भेंट दी। एक नयी कोरी जिल्दबंद बाइबिल। इसी बाइबिल ने पूरी उमर साथ निभाया। जिंदगी की आखिरी सांस तक।

जार्ज को विदा करते समय मारिया बुआ का दिल भर आया। इस अनाथ बालक ने उसकी ममता पर अधिकार पा लिया था। वे उसकी बुद्धि की, योग्यता को परख चुकी थीं। भगवान से प्रार्थना कर रही थीं, 'हे सर्वज्ञानी, इस नन्हें बच्चे को कोई अच्छा सा मार्गदर्शक मिले, इसमें बहुत कुछ करने की क्षमता है, बहुत कुछ जानने की योग्यता है। इसे अच्छी राह दिखलाना।'

यह सन 1876 की बात है। नन्हा सा जार्ज ज्ञान पाने की प्रबल इच्छाशक्ति का आधार लेकर और एक ज्ञान की यात्रा पर चल पड़ा था।

जनवरी महीने में जार्ज फोर्ट स्कॉट पहुंचा। ऐन सर्दियों का मौसम। सबसे पहले रहने की जगह और रोटी-पानी का बंदोबस्त। घर-घर जाकर उसने काम मांगा। लेकिन अनजाने काले लड़के को भला कौन काम पर रखता? घूमते-घूमते जार्ज थक गया। आखिर किसी का दिल पसीजा। उसने उसे श्रीमती पेन के घर लाकर छोड़ा। पेन चाची किसी लड़की की तलाश में थीं। उन्होंने सोचा चलो, अब आ ही गया है तो कुछ दिन इसी का काम देख लिया जाए।

उन्होंने जार्ज से पूछा, 'खाना बनाना जानते हो?'

'हां जी, जानता हूं।'

पेन चाची उसे अपने रसोईघर में ले गयी। वहां एक अच्छी तेज आंचवाली सिगड़ी जल रही थी और उस पर भूने जाने वाले

मांस की करारी महक से सारा रसोईघर भर उठा था। बेचारा जार्ज! एक तो भूखे पेट! उस पर इतना लंबा पैदल सफर। करारे सेंके मांस की महक से उसकी भूख आपे से बाहर होने लगी। इतना सा लड़का, बड़ी मुश्किल से उसने अपने आप को संभाला, मन को समझाया। अगर कुछ कर दिखाना है तो यही एक मौका है। शायद रहने खाने का प्रबंध हो जाए। उसने पेन चाची के दिए हुए सामान से खाना बनाया। पेन चाची को खाना पसंद आया और जार्ज के काम करने का साफ सुथरा ढंग भी पसंद आया।

रहने के लिए जगह मिल गयी, पेट भरने का सवाल हल हो गया।

पेन चाची जार्ज को नयी-नयी चीजें बनाना सिखातीं। बिस्किट, पुडिंग, ब्रेड बनाने में जार्ज ऐसा माहिर हो गया कि वहां के मेथोडिस्ट चर्च की प्रतियोगिता में उसने इनाम जीता। लेकिन रसोइया बनकर नाम कमाने थोड़े ही आया था वह फोंट स्कॉट तक। गुजारे के प्रबंध के लिए उसने यह काम चुना था। फोंट स्कॉट आने का मकसद तो कुछ और ही था। कुछ समय तक काम करके पैसा कमाया, थोड़ा बहुत बचाया, फिर पेन चाची का घर छोड़ा। फिर स्कूल में नाम लिखाया।

दिन भर काम करना, स्कूल में पढ़ना फिर रात में मोमबत्ती के उजाले में पढ़ाई। वह जो कुछ मिलता उसे पढ़ जाता। कोई भी किताब नया पुराना पेपर, कोई पत्रिका, जो कुछ मिले वही।

जार्ज की पढ़ाई इसी तरह चल रही थी। जहां से जो कुछ मिला, ग्रहण किया। उसकी ज्ञान पिपासा दिन-ब-दिन बढ़ती चली जा रही थी। उसे पूरा करने के लिए जो परिश्रम, जो मेहनत-मजदूरी करनी पड़ रही थी उससे जार्ज को कोई शिकायत नहीं थी। मेहनत-मजदूरी से उसने कभी आंख नहीं चुराई। पसीने की कमाई से पैसा पाना, फिर से स्कूल में नाम दाखिल कराना, पैसे खत्म हुए तो फिर स्कूल बंद, काम शुरू। इस झंझट में समय हाथ से निकल जाता था। उमर भी बढ़ रही थी। इसलिए स्कूल में कोई मित्र, संगी-साथी नहीं मिल पाता था। वैसे भी स्कूल में अधिकतर लड़के गोरे थे। इसलिए जार्ज से उनकी दुनिया एकदम अलग थी। शुरू से ही जार्ज अकेला था, अब तो और भी अकेला होता जा रहा था।

कैन्सास शुरू से ही मुक्त राज्य था। किंतु आपसी युद्ध के समय उसने दक्षिण के राज्यों की तरफदारी की थी, अर्थात अप्रत्यक्ष रूप से गुलामी का समर्थन किया था, इसलिए वहां जब तक वर्णभेद संबंधी दंगे हो जाते थे। और अंततः नुकसान नीग्रो लोगों का ही होता। जार्ज भी इस भयंकर वर्णद्वेष से कैसे बच सकता था!

एक बार खरीदी हुई किताबें साथ लेकर वह एक दुकान के सामने खड़ा था कि गोरों ने उसे टोका।

'क्यों बे, किताबें कहां से लाया?'

'मैंने स्कूल से खरीदी हैं।'

'वाह, भई वाह। खरीदी हैं। चुरायी होंगी। नीग्रो को स्कूल में कब से लेने लगे।'

अब क्या बीतेगी यह समझते देर नहीं लगी जार्ज को। जान बचाने का एक मात्र उपाय था, वहां से भागना। फिर भी जार्ज वहीं खड़ा रहा। भाग जाने का मतलब था चोर सिद्ध होना और फिर निरपराध होना ही तो उसके लिए एकमात्र सत्य था। उसे क्यों झुठलाना?

'लाओ, किताबें दो।'

'नहीं, वे मेरी हैं।' जार्ज ने कहा।

तब इस बात पर वे दोनों गोरे जार्ज पर टूट पड़े। एक ने पीटना शुरू किया, दूसरे ने किताबें छीन लीं। देखने वालों में से किसी की भी हिम्मत नहीं हुई कि जार्ज की मदद करे।

सारी रात जार्ज तड़पता रहा, नींद आती भी तो कैसे? अब क्या करे। दूसरे दिन स्कूल के लिए किताबें कहां से लाए? फिर से पैसे कमाने होंगे और अधिक काम करना होगा। तब तक पढ़ाई बंद।

जार्ज का बचपन ऐसे ही अभावों के चक्र में खो गया था। खेलने-खाने के दिन तो रोजी-रोटी जुटाने में बीत गए थे। किसी के भरोसे जिंदगी बीते ऐसा आसरा नहीं था। बिल्कुल अकेला था जार्ज। लेकिन फिर कोई दया दिखाए यह भी बर्दाश्त नहीं होता था। इसलिए इतनी कच्ची उम्र में ही वह पूर्णतया स्वावलंबी बन गया था। कैसी ही समस्या हो, स्वयं ही हल खोजता, कैसी भी जिम्मेवारी हो, स्वयं निभाता। बचपन से ही उसने समझ लिया था कि 'जो आघात सह सकता है, वही जीवन में कुछ कर सकता है।'

फोर्ट स्कॉट का वाइल्डर हाउस इलाका बड़ी चहल-पहल वाला हिस्सा था। वहां काम-धंधे वालों की भीड़ लगी रहती थी। कन्सास से सप्ताह में तीन बार आने वाली गाड़ियां भी वहां रुकती थीं। यात्रियों की भीड़, मजदूरो के ठेकेदार और जानवरों के व्यापारियों का अड्डा। इसीलिए जार्ज को इस विभाग में काम मिलने की गुंजाइश थी। जार्ज ने वहां एक धोबी की दुकान शुरू की। एक होटल की आड़ में टपरे में अपना डेरा जमाया। मुसाफिरों को धूल और पसीने से गंदे कपड़े साफ-सुथरे और इस्त्री करके मिलने लगे। इस सहूलियत से मुसाफिर खुश हो जाते और जार्ज भी अपना खर्चा निभाने लायक पैसे कमा लेता। इस धोबी की दुकान के कारण होटल का भी नाम होने लगा। अत: होटल के मालिक ने जार्ज को बरामदे में जगह दे दी।

होटल की महराजिन जार्ज के लिए काम ढूंढकर लाती और बदले में जार्ज रसोईघर की सफाई, चूल्हे अंगीठियों की सफाई, लिपाई-पुताई कर देता। कभी-कभी गाड़ियां एक साथ आ जातीं तो होटल में ग्राहकों की भीड़ हो जाती। तब जार्ज खाना बनाने में भी मदद करता। महराजिन बेचारी भी इस अनाथ जीव का ख्याल रखती, प्यार से खाना खिलाती।

उस समय जार्ज केवल 13 वर्ष का था। कपड़े धोते समय उसे एक स्टूल पर खड़ा होना पड़ता था, अन्यथा उसके हाथ टब तक पहुंचते ही नहीं। गंदे कपड़े धोने का काम भी वह इतनी तन्मयता से, आत्मीयता से करता था मानों कोई कलाकार अपनी कला पेश कर रहा हो। कपड़े धोकर, सुखाकर, उन पर इस्त्री फेरकर, तह जमाने तक, हर काम सलीके से होता। गंदगी हटकर उसकी जगह स्वच्छता कैसे आती यह बात देखने योग्य होती। जार्ज के हाथों का निर्मल स्पर्श पाते ही हर चीज उज्जवल, सुंदर, मंगल हो जाती। वे मिट्टी को सोना बनानेवाले हाथ थे।

इस धोबी की दुकान के कारण उसकी बहुत से लोगों से अच्छी जान-पहचान हो गयी थी। फोर्ट स्कूल के कितने ही शिक्षक, अभिभावक उसे जानते थे।

एक शिक्षिका ने स्कूल के गेट के पास ठिठक कर जार्ज को देखा। इससे पहले भी उन्होंने कितने ही नीग्रो छात्र देखे थे। नीग्रो छात्रों की शुरू-शुरू की हिचकिचाहट से वे भली भांति परिचित थीं, लेकिन उन्होंने भी आज तक इतना बेचारा, इतने बेढंगे कपड़ों वाला और ऐसी पैनी उत्सुक नजरों वाला छात्र नहीं देखा था। उन्होंने जार्ज को अपने पास बुलाकर बातचीत की। उसकी रुकती अटकती बातों को समझा। अपनी क्लास में उसका नाम लिखवाया। पहले तो वे तय ही नहीं कर पायीं कि इसे कौन सी क्लास में बिठाया जाए? जार्ज पढ़ना जानता था लेकिन ठीक से लिख नहीं पाता था। थोड़ी-थोड़ी गणित जानता था लेकिन इतिहास, भूगोल के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। किंतु सृष्टि विज्ञान के बारे में इतना कुछ जानता था कि उसने शिक्षका को आश्चर्य में डाल दिया। जार्ज ने उन्हें ऐसी कितनी ही बातें बतायीं जो वे स्वयं भी नहीं जानती थीं।

अब जार्ज का कोई दिन तो क्या कोई पल भी खाली नहीं जाता था, ज्ञान बढ़ रहा था, उसका लक्ष्य उसे और आगे बढ़ने का उत्साह दिला रहा था। शिक्षक उसे किताबें देकर उसकी जिज्ञासा पूरी करते। जो कुछ हाथ लगता उसे वह पढ़ जाता, होटल से समाचार पत्र मिलते, उन्हें पढ़ता। यात्रियों की आपसी बातचीत भी गौर से सुनता। उसकी दुनिया अब बड़ी होती जा रही थी।

अब भी उसे अपने डायमंड ग्रोव के जंगल, झाड़ियां, ओजार्क पहाड़ियां याद आतीं। अपने छोटे-छोटे दोस्तों की याद सताती। कभी-कभी तो ये यादें उसे बहुत बेचैन कर देतीं। तब वह इस बेचैनी को दूर करने के लिए उन यादों को कागज पर उतारता। ओजार्क के पेड़, झरने, फूल, पत्ते, खरगोश, गिलहरियां, आंखों में तैरनेवाले ये चित्र कागज पर उतरते। इन रेखाचित्रों को वह अपनी किताबों, कापियों में चिपका कर रखता और उन्हें देख कर उनके समीपता का अनुभव करता, मन की प्यास बुझाता।

स्कूल में एक बार शिक्षिका भूगोल पढ़ा रही थीं। विषय था पर्वत, पहाड़ियां। जार्ज को याद आने लगीं ओजार्क पहाड़ियां। मन का पंछी क्लास से निकलकर ओजार्क जा पहुंचा। हाथ की पेंसिल चलने लगी कागज पर और देखते ही देखते वहां ओजार्क की पहाड़ियां सजीव हो उठीं। जैसे ही शिक्षिका ने जार्ज की तरफ देखा, वे समझ गयीं, जार्ज कहीं और खोया हुआ है। उन्होंने डांट कर कापी मांगी, रेखाचित्र देखे, फिर पूछा:

'ये पहाड़ियां तुमने कहां देखीं?'

'ओजार्क,' जार्ज का अटका-अटका सा उत्तर । 'हां! बिल्कुल हू-बहू वही। मुझे भी ये ओजार्क की पहाड़ियां ही लगीं। देखो, क्लास खत्म होने के बाद मुझे मिलना।'

छुट्टी हुई तो जार्ज डरते-डरते शिक्षिका से मिलने गया। उसके पास और भी रेखाचित्र थे। शिक्षिका ने उन्हें भी देखा और कहा, 'तुम्हें तो श्रीमती लांग की चित्रकला क्लास में भेजना चाहिए। तुम जैसा छात्र पाकर वे खुश हो जाएंगी।'

जार्ज अब चित्रकला सीखने लगा। उस साल का क्रिसमस बड़ा अच्छा बीता। श्रीमती लांग ने जार्ज को वाटर कलर की पूरी बाक्स इनाम दी थी।

तीन साल बीत गये। जार्ज अब प्रगति के पथ पर था। गर्मी की छुट्टियां शुरू हुईं।

वाईल्डर हाउस के यात्रियों की आपसी बातचीत से जार्ज को दूसरे इलाकों के बारे में जानकारी मिली। उसके मन में अपनी ही धरती के विभिन्न रूप देखने की इच्छा जाग उठी। दूसरे प्रदेश देखने की यह चाह उसे बेचैन करने लगी। वह सोचता, 'ईश्वर की बनायी इस धरती का हर रूप देखना होगा, तभी तो असली मायने में इस सृष्टि की पहचान होगी।'

बस! अब निर्णय हो गया था।

पश्चिम दिशा में बढ़ती हुई अमेरिका के विकास के लिए बनने वाली सड़कें, बड़े-बड़े पुल, रेलमार्ग बनाने के काम पर मजदूरों की आवश्यकता थी। उन गर्मी की छुट्टियां में जार्ज ने मजदूरों की आवश्यकता थी। उन गर्मी की छुट्टियों में जार्ज ने मजदूरों के ठेकेदार के पास अपना भी नाम लिखवाया। कम उमर होने के कारण जार्ज को मजदूरी नहीं मिली, बल्कि रसोइये का काम मिला। कैन्सास से डेनवर तक बनने वाली रेल की पटरी पर उसे भेजा गया। उस काम पर जार्ज ने काफी पैसे कमाए और बचाए भी।

भरी गर्मियों में खुले पठार पर रहना कोई आसान काम नहीं था। उस चिलचिलाती धूप में जार्ज अपने छोटे छोस्तों को याद करता। काम करते समय, दूर कहीं से पानी लाते समय उसे याद आते अपने पुराने साथी, फूल पत्ते, पेड़-पौधे, नदी-नाले और रिमझिम बरसने वाली बरसात। इन सब यादों के सहारे वह उस कड़ी धूप का सामना करता। दिन तपते थे, लेकिन खुले आकाश तले रातें शीतल सुहानी हुआ करती थीं। खिली हुई चांदनी सारे दुखों को मिटा देती। थकान भगा देती, आने वाले दिन से जूझने के लिए तैयार कर देती।

इस ठेके के काम को पूरा करने के बाद जार्ज और सुदूर पश्चिम की यात्रा पर चल पड़ा।

इस यात्रा में उसे जो भी काम मिला वह काम किया, अपनी रोटी तो खुद ही कमानी थी। उसने माली का काम किया, बोझ ढोया, कुलीगीरी की, रसोइया बना, लकड़ी काटी, नालियां भी खोदीं। बढ़ई, लुहार के पास भी काम किया, हथौड़ा चलाया। ऐसे ही एक लुहार के पास काम करते समय घटी हुई एक घटना ने उसे तड़पा दिया, छिन्न-भिन्न कर दिया।

सांझ घर आयी थी। अचानक गोरे लोगों के झुंड के झुंड जमा होने लगे। उनमें से दो-चार जनों ने मिलकर एक बड़े अलाव की तैयारी की, और फिर? वहां के कैदखाने से एक नीग्रो कैदी को पकड़ कर ले आये। लाये भी तो कैसे, मारते-पीटते। अब लुहार की भट्टी से अंगारे ले जाये गये, आग जलायी गयी, अलाव की लपटें दूर से भी दिखाई देने लगीं। पहले तो क्या हो रहा है, यह बात जार्ज की समझ में नहीं आयी, लेकिन फिर उसे लगा कि कुछ अनर्थ होने वाला है। सांस सूखने लगी, जान गले तक आ गयी।

ऊंची उठने वाली लपटों के उजाले में उस नीग्रो कैदी की दयनीय मुद्रा दिख जाती थी। वह बार-बार विनती कर रहा था, रोता-बिलखता पैरों पड़ रहा था, प्राणों की भीख मांग रहा था और वे सब? वे सब उसे आग की तरफ धकेल रहे थे। वह नीग्रो कैदी अब जान बचाने की आखिरी कोशिश कर रहा था। उसकी वह असहाय छटपटाहट देखकर वे राक्षस हंस रहे थे, खुश हो रहे थे। औरतें भी शामिल थीं, अपने छोटे बच्चों के साथ लेकर, कंधों पर बिठाकर, एड़ियां उचका कर बच्चों को दिखला रही थीं! उन्हें भी तो देखना चाहिए!

आखिर सबने मिलकर उस कैदी को आग में फेंक ही दिया। उसने जलते अलाव से बाहर आने की कोशिश की, फिर से धकेला गया। आग की लपटों के उजाले में उसकी करुण मुद्रा बार-बार दिख जाती। उस चेहरे की करुणा जार्ज को अंतर तक तक तड़पा गयी। काले रंग का मतलब आज समझ में आया। इससे पहले भी उसे अपने काले रंग का अहसास था, लेकिन उसने उसमें कोई विषमता अनुभव नहीं की थी। फूल नहीं होते भिन्न रंगों के, पत्तों में नहीं होते अलग-अलग रंग? फूल, पत्ते, पंछी, सभी में होते हैं अनेक रंग वैसे ही इंसानों में, कुछ काले कुछ गोरे। आखिर चमड़े के रंग का ही तो फर्क।

लेकिन नहीं, बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। चमड़ी के रंग के फर्क का अर्थ इतना सरल नहीं है। कुछ और ही है।

उस नीग्रो कैदी की मर्मान्तक चीखों से ज्यादा उस गोरे झुंड की हर्षोन्माद की चिल्लाहट ने जार्ज के मस्तिष्क को सुन्न कर दिया! मांस जलने की बू से मिचली आने लगी।

अब उसकी समझ में सारी बात आ गयी थी। पौरुष और कृष्णवर्ण ये दो बातें साथ-साथ नहीं रह सकती। यदि किसी ने थोड़ा भी ऊपर उठना चाहा तो यह समाज उसे मृत्यु के अलावा और कुछ न देगा। नीग्रो पर हुये अन्याय की पैरवी कहां हो? न्यायालय भी गोरों के, न्यायदेवता भी उन्हीं की। कितनी ही पुस्तकों द्वारा, पत्रिकाओं द्वारा खुले आम यह बात कही जाती थी कि 'नीग्रो वंश ही अलग है। गोरों की अपेक्षा कृष्णवर्ण तुच्छ ही है। और किसी भी कीमत पर उसे उसी स्थिति (निम्न) में रखा जाना चाहिए।'

नीग्रो के लिए औरों की तरह ज्ञान प्राप्त करना, बढ़ाना, प्रगति करना सहज नहीं था। जरा सी उन्नित भी किसी भी आंख का कांटा बन सकती थी। यहां समाज ही विरोध में हो वहां अपने आप को बचाना आवश्यक हो जाता है। जार्ज ने सोचा, यहां से दूर चला जाऊं। वर्णद्वेषियों के इस गांव में क्या पता कब क्या हो, और द्वेष की आग में अपनी बलि चढ़ जाये?

रात जागकर कटी, भोर से पहले भी जार्ज गांव छोड़कर आगे बढ़ चुका था।

अपनी यात्रा में जार्ज जहां कहीं भी गया वहां नीग्रो औरतों के जमाव में कोई सफेद बालों वाली प्रौढ़ा हो तो वह उसे गौर से देखता, कहीं मां हुई तो? फिर वह यह सोचकर खिन्न होता कि अगर मां कहीं पर मिल भी जाए तो दोनों एक दूसरे को पहचाने तो कैसे?

अपनी यात्रा के दौरान उसे दक्षिण दिशा में, न्यू मेक्सिको की तरफ जाने वाले प्रवासी मिले। जार्ज भी उनमें शामिल हो गया। न्यू मेक्सिको की वनस्पतियों ने जार्ज का ध्यान आकर्षित किया। इनमें से कितनी ही वनस्पतियां उसने पहले कभी देखी नहीं थीं। इस प्रदेश के फूल-वनस्पतियां देखते-देखते घंटों समय बीत जाता जार्ज का।

न्यू मेक्सिको की खुली हवा और तनिक कम कष्टवाली जिंदगी के कारण जार्ज की हमेशा की कमजोर देह अब धीरे-धीरे संभलने लगी। अच्छा लंबा कद निकल आया, देह भी भरी-पूरी मजबूत होने लगी।

एक शाम ऐसे ही बंजर प्रदेश में पहली बार उसने एक फूल देखा। उसे पहले कभी नहीं देखा था। निराला फूल। बड़ी देर तक वह इस फूल को निहारता रहा। फिर अपने पास रखी हुई ऐ पेपर बैग फाड़कर कागज साफ किया, सिलवटे साफ की और उस रेतीले मैदान में बैठकर जमाकर उस फूल को कागज पर उतार लिया। पंद्रह वर्ष बाद उसी रेखाचित्र के आधार पर बनाये गये चित्र का सम्मान किया गया। वर्ल्ड कोलंबियन एक्सपोजीशन में इस चित्र का सम्मानीय उल्लेख किया गया।

नागफनी के साथ उगने वाली युका ऐनगस्टगोलिया नामक दुर्लभ वनस्पति के रूप में उसका परिचय कराया गया।

राह में औलेंथ गांव पड़ा। यहां रुकने का कोई इरादा तो नहीं था लेकिन एक नाई की दुकान के बाहर बोर्ड लटक रहा था, 'काम के लिए लड़के की आवश्यकता है।' जार्ज ने सोचा, 'चलो, यही सही। काम तो मिलेगा।' जार्ज, औलेंथ में ही रुक गया।

दुकान के मालिक, नेट दादा को जार्ज की बातचीत का ढंग बहुत पसंद आया। जार्ज की बातों में मिठास और आत्मविश्वास साथ-साथ साफ झलकते थे। नेट दादा को अच्छा लगा, उन्होंने जार्ज को काम पर रख लिया। दिन इतवार का था अतः दुकान तो बंद थी इसलिए जार्ज घूमने निकला। आते समय रास्ते में गांव के बाहर एक खाड़ी देखी थी जार्ज उसी तरफ निकला। जी भर कर तैरने के बाद जार्ज को खाने की याद आयी। गांव में सरायें तो बहुत देखी थीं, फिर भी जार्ज 'अपनी' सराय देखने के लिए चल पड़ा।

रास्ते से पहले ही मोड़ पर ठिठक कर रह गया। एक सुंदर सा जगमगाता सफेद घर और उसके सामने का बगीचा। अपने आप से बेखबर हो गया जार्ज, बगीचे के अंदर चला गया। उसे अपने छोटे साथी फिर से मिल गये। वही गीतों की गुनगुनाहट शुरू हो गयी और शुरू हो गयी पेड़-पौधों की बातचीत। उस घर की मालकिन थी ल्यूसी सेमॉर। जार्ज को देखकर वो बाहर आयी। जार्ज से पूछताछ की। उनके बगीचे में हायसिंथ पनप रहे थे। फिर कैंची मांगकर गुलाब के पौधों की कांट-छांट की और फिर रसोईघर में आसन जमाकर नाश्ता करते-करते ल्यूसी मौसी को बताया, 'खाड़ी पर बड़े अच्छे पौधे हैं, उन्हें लाकर आंगन में रोप देता हूं।'

जार्ज का साफ-सुथरा ढंग, बगीचे से, पेड़-पौधों से लगाव और इतना अच्छा बर्ताव देखकर ल्यूसी मौसी ने उसे अपने घर में आसरा दिया।

ल्यूसी मौसी सुघड़ और करीने से काम करने वाली थी। रहन-सहन में शान और सारे इलाके में उनके धुलाई केंद्र का नाम

था। सेमोर दम्पत्ति के कोई बाल-बच्चा नहीं था। इस नीग्रो कुटुम्ब में जार्ज को बहुत प्यार और ममता मिली। वह काम में हाथ बंटाता, घर-आंगन की साफ-सफाई करता। जार्ज के लिए समय बेकार गंवाना पाप था।

जब सेमोर परिवार ने मिनियापोलिस में जाने का निर्णय लिया तब वे लोग जार्ज को भी अपने साथ ले गये। वहां पर अधिक अच्छे स्कूल थे। जार्ज की उच्च शालेय शिक्षा का प्रबंध हो गया और फिर वो गांव भी तेजी से बढ़ रहा था इसलिए ल्यूसी मौसी के धुलाई घर की भी बढौत्तरी हो रही थी। जार्ज अब ल्यूसी मौसी के काम में मदद करने लगा था। उन्हीं की तरह कड़क इस्त्री करना सीख गया था। मौसी ने अच्छी धुलाई के नये-नये गुर सिखाये थे। किसी भी काम को तन्मयता से सीखने वाला, अपनाने वाला जार्ज धुलाई के काम में माहिर न बनता तो ही आश्चर्य की बात होती।

जार्ज अब अपनी पुरानी दुनिया से बड़ी दूर चला आया था। ज्ञान पाने की लगन उसे यहां तक ले आयी थी, साथी पीछे कहीं छूट गये थे। इकलौता भाई 'जिम' तो माता की भेंट हो गया था। जिम की याद से जार्ज का गला रुंध जाता। अपने भाई से अब कभी नहीं मिल सकूंगा सोच-सोच कर अकेला जार्ज और भी अकेला हो जाता।

गुलामी के समंदर ने दो अनाथ जीवों को किनारों पर पटक दिया था। अनाथ, बेसहारा! पकड़ने के लिए तिनके का भी सहारा नहीं। उनमें से एक तो फिर उस किनारे की रेती से निकल ही नहीं सका। वहीं पर खत्म हो गया। लेकिन दूसरा? उनके संघर्ष किया, उठकर उस समंदर से दूर चल पड़ा था, दूर ... बहुत दूर ...

मिनयापोलिस में जार्ज ने उच्चशालेय शिक्षा पूरी की। अब तक सब उसे जार्ज कार्वर नाम से पुकारते थे क्योंकि स्कूल में नाम लिखवाते समय सिर्फ जार्ज से काम कैसे चलता अत: आगे 'कार्वर' जोड़ दिया था और सब उसे जार्ज कार्वर के नाम से जानते थे। लेकिन अब एक मुसीबत खड़ी हो गयी थी। मिनियापोलिस में एक और जार्ज कार्वर था और वह गोरा था। नाम एक ही होने के कारण पोस्टमैन की गड़बड़ हो जाती। इसलिए कार्वर ने अपने नाम के बीच में एक 'डब्लू' लगा दिया। लोगों ने 'डब्लू' से वॉशिंगटन कर लिया। आखिर काले जार्ज कार्वर का पूरा नाम जार्ज वॉशिंगटन कार्वर हो गया और फिर? गोरे कार्वर को उसकी चिट्ठियां नियमित रूप से मिलने लगीं।

जार्ज ने स्कूल सर्टिफिकेट की परीक्षा पास कर ली। वर्ष के अंत में होने वाले समारोह में भाग लेने का उसका मन नहीं था। उसे तो अब अपने छोटे दोस्तों से मिलने की आस लगी थी। डायमंड ग्रोव की यादों ने बेचैन कर दिया था। उसे बुला रही थी, मां की वह लकड़ी की कोठरी, वे जंगल, वे पहाड़ियां, सबके सब बुला रहे थे उसे। इतने दिनों में क्या सीखा, क्या पाया, बताना था सूसान चाची को मोजेस चाचा को। उनसे उसे शाबासी लेनी थी, प्यार पाना था। मां की कोठरी में दो एक दिन रहकर ममता की प्यास बुझानी थी और क्या पता? शायद मां वापस आ सकी हो? शायद ...

ल्यूसी मौसी तो जैसे जार्ज का दिल पढ़ लेती थी। उन्होंने उसे डायमंड ग्रोव जाने की तैयारी में मदद की। जार्ज की जमा पूंजी से कार्वर चाचा-चाची के लिए भेंट वस्तुएं खरीदी गयीं। कितने अर्से बाद मिलना होगा मोजेस चाचा से, सूसान चाची से।

जिंदगी में पहली बार रेल पर बैठने वाले जार्ज को पता ही नहीं था कि टिकट भी खरीदना पड़ता है। अब तक का सारा सफर पैदल या खटारे में हुआ था। रेलगाड़ी में जब टिकट बाबू टिकट पूछने लगा तो जार्ज न बताया कि उसे मिसोरी जाना है, डायमंड ग्रोव तक! टिकट बाबू को तो विश्वास ही नहीं हुआ कि इतना सा लड़का अकेले ही इतना लंबा सफर कर रहा है। जार्ज की बातचीत का ढंग ही मोहनेवाला था और टिकट बाबू भी भला आदमी था। उसने तो आधे टिकट में सफर करवा दिया। इसलिए जार्ज के पास थोड़े और पैसे भी बच गये।

जार्ज के आने से कार्वर पति-पत्नी बहुत खुश हुए। अर्से बाद किसी करीबी रिश्तेदार के आने पर होता है, ऐसा स्वागत हुआ। गांव के लोगों ने भी जार्ज की लगन और मेहनत की सराहना की। उसकी सफलता पर उन्हें नाज था। जार्ज ने सिर्फ किताबी शिक्षा नहीं पायी थी। रोजमर्रा की जिंदगी सुधारने वाले अच्छी खुशहाल बनाने वाली कितने ही काम वह सीखकर आया था। जार्ज ने सूसान चाची को नये-नये व्यंजन बनाना सिखाया। जगह-जगह के पकवान, होटलों में बनने वाले खास पकवान बनाकर दिखलाये और फिर थोड़े समय में अधिक कपड़े धोने का वैज्ञानिक तरीका दिखलाया। मोजेस चाचा को खेती काम में नए-नए सुधारों के बारे में बताया। बाहरी दुनिया में देखी हुई नयी पद्धतियां अपना कर डायमंड ग्रोव में कृषि उत्पादन बढ़ाकर दिखाया। मोजेस चाचा को फिर एक बार जार्ज की निराली निरीक्षण शक्ति का अहसास हुआ। रोज के कामकाज में भी अच्छे से अच्छा सुधार करने वाली ये सीखें, जार्ज ने अपनायी थीं। बहुत खुश हो गए मोजेस चाचा अपने जार्ज पर।

रोज रात को सोने के लिए जार्ज अपनी मां की कोठरी में ही जाता। उसने उस कोठरी को झाड़-पोंछकर साफ कर चमका दिया था। वहां एक पुराना चरखा भी था जो कभी उसकी मां चलाती थीं। जार्ज ने उस चरखे को भी साफ करके नया बना लिया था। जार्ज सोचता, 'इस चरखे से कते सूत से मां ने मेरे कपड़े बनाये होंगे। मां के अस्तित्व की एकमात्र निशानी।'...

जार्ज ने मोजेस चाचा को मारिया बुआ और एंडी चाचा के बारे में सब बता दिया था। कैसे उन्होंने आसरा दिया था, पढ़ाई के लिए मदद की थी। आज उनसे मिलने जा रहा था जार्ज। मोजेस चाचा ने अपनी घोड़ागाड़ी दी थी। दस वर्ष पहले इसी रास्ते पर पैदल चल पड़ा था एक नन्हा सा लड़का, ज्ञान की खोज में। तब और अब कितना फर्क हो गया था अंतर में। आज वही दूरी कितनी छोटी मालूम हो रही थी। बाहरी दुनिया के शहर देख आने के बाद नेओशो भी अब कितना छोटा लग रहा था।

मारिया बुआ और एंडी चाचा बड़े खुश हुए जार्ज से मिलकर। जार्ज की जी जान लगाकर की हुई मेहनत की पढ़ाई के बारे में सुनकर दोनों को बहुत संतोष मिला। पूरा दिन बीत गया बीती बातों को याद करते-करते। शाम को जब वापसी की तैयारी हुई तो वे बूढ़ी आंखें भर आयीं। मारिया बुआ ने भरे गले से रूंधी सी आवाज में कहा, 'मेरे बच्चे, बहुत पढ़ना और अपने बंधु- बांधवों की उन्नति के लिए अपनी पढ़ाई का उपयोग करना।' जार्ज ने बुआ को मन से इस बात का आश्वासन दिया और वह चल पड़ा।

गर्मियां खत्म हुईं। डायमंड ग्रोव छोड़ने का समय हो गया था। जार्ज की वापसी की तैयारियां शुरू हुईं। मोजेस चाचा दिल से चाहते थे कि जार्ज अब वहीं उनके पास रहे। जितना पढ़ लिया, काफी है और अधिक पढ़ाई से क्या होगा? और ज्यादा पढ़ता रहा तो काम करने के लायक भी नहीं रहेगा। उन्होंने जार्ज को दिल की बात बताई। लेकिन उनकी बात मान लेना जार्ज के लिए संभव नहीं था। उसने चाचा को समझाया कि, 'अभी तो मुझे बहुत पढ़ना है, यह तो सिर्फ शुरुआत है। मैं कालेज में पढ़ूंगा। मेरे शिक्षक जितना पढ़ा सके उतना सब कुछ जब मैं पढ़ लूं तब ईश्वर मेरे लिए प्रकृति के रहस्य खोल देंगे, उस समय मेरे लिए करने लायक कितने ही काम सामने होंगे। ईश्वर की इस महान धरती पर जितना भी काम करूं, कम ही होगा।'

सूसान चाची बोली, 'उसे जाने दो। उसकी बात में सच्चाई है। ईश्वर से कभी भूल नहीं होती।'

डायमंड ग्रोव छोड़ने से पहले जार्ज ने मोजेस चाचा से चरखा मांग लिया। अपनी मां का चरखा।

चाचा ने भी बड़े प्यार से उसे वह चरखा दिया। मां की यादगार लेकर जार्ज फिर एक बार डायमंड ग्रोव छोड़कर निकल पड़ा बाहरी दुनिया की ओर।

अभागी मेरी का दुबला, कमजोर बालक कितना बड़ा हो गया था। उसे बचाने वाली, संभालने वाली सूसान चाची के मुख पर संतोष की आभा भर आयी।

ज्ञान की यात्रा के इस प्रवासी-जीवन की भेंट, कब होगी।

आरंभ का अंत

जार्ज ने स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा में बहुत अच्छे अंक पाये थे। स्कूल से मिले सर्टिफिकेट में भी उसे बहुत सराहा गया था। जार्ज ने कैन्सास के हायलैंड विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने की अर्जी भेजी थी। विश्वविद्यालय से अर्जी का उत्तर भी आ गया था। इस उत्तर को पढ़ते ही जार्ज तो खुशी से मानों पागल हो गया। प्रवेश तो मिल ही गया साथ में शिक्षावृत्ति भी मिलनेवाली थी। अब तो सिर्फ वहां जाने की देर थी।

1885 के सितम्बर महीने में जार्ज निकल पड़ा कैन्सास राज्य की ईशान्य दिशा में हायलैंड विश्वविद्यालय में दाखिल होने के लिए।

अपनी पूरी जिंदगी जार्ज कार्वर ने जिस घटना को भुलाना चाहा वह यही घटना थी। हायलैंड विश्वविद्यालय से आए पत्र के अनुसार जार्ज विश्वविद्यालय के प्रमुख अधिकारी से मिलने गया। किताबों से भरी अल्मारियां और जगमगाते फर्नीचर से सजा कमरा देखकर जार्ज दंग रह गया। अपने पास का पत्र उसने मेज पर रखा। प्रमुख अधिकारी ने उसे पढ़ा और बड़ी शांत, धीमी आवाज में कहा, 'माफ करना, कहीं कुछ गल्ती हो गयी है।'

उस एक वाक्य ने जार्ज के सपने जैसे चूर-चूर कर दिये, फिर भी किसी तरह धीरज बटोरकर उसने कहा, 'लेकिन आज ही का दिन लिखा है इसमें, आपका पत्र...।'

पहले ही जार्ज की जबान साथ नहीं देती थी। अब तो मुंह से शब्द निकलना मुश्किल हो गये। अपने ही दस्तखत वाले पत्र को वे गलत कह रहे थे। जार्ज कुछ समझ नहीं पाया। गलती थी तो किसकी थी?

गलती थी उसके रंग की, चमड़ी के काले रंग की! कृष्णवर्णी नीग्रो वंश की! जार्ज ने अपनी मर्जी के साथ मिनियापोलिस महाविद्यालय का सर्टिफिकेट भी दिया था। स्कूल द्वारा उच्चतर श्रेणी और अच्छे चाल-चलन का विश्वास दिलाया गया था! लेकिन यह सब एक नीग्रो छात्र के बारे में था। अर्जी देने वाला छात्र बुद्धिमान अवश्य था, किन्तु वह नीग्रो है इस बात का अध्यक्ष महोदय को कैसे पता चलता!

जार्ज के दिल का तूफान अब आंखों में उतर आया।

अध्यक्ष ने अपने बचाव के लिए कहा, 'आप नीग्रो हैं, इस बात का इस अर्जी में कहीं उल्लेख नहीं है। इसलिए...'

'लेकिन इस बात की कोई आवश्यकता थी नहीं।' जार्ज ने कहा।

'मुझे कहते हुए दुख होता है लेकिन नीग्रो छात्रों को यहां प्रवेश नहीं दिया जाता। ऐसी अर्जी भेजने वाले आप पहले छात्र हैं।'

जार्ज ने अपने कागज समेटे, बाहर जाने के लिए दरवाजे की तरफ चला। अध्यक्ष महोदय से रहा नहीं गया। उन्होंने उसे पुकार कर कहा, 'मुझे एक बात बताइये। अन्य नीग्रो छात्रों की अपेक्षा आपने काफी पढ़ लिया है और अधिक उच्च शिक्षा से क्या होगा? क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि आप बेकार समय गंवा रहे हैं?'

दरवाजे पर ठिठके हुए जार्ज ने कहा, 'भविष्य जानने वाला तो भगवान है, अपना लेखा-जोखा लिखने की ताब मुझ में कहां? ईश्वर इच्छा से आज तक मेरी कोशिश चलती रही है। मुझे कालेज में शिक्षा लेनी ही है, क्योंकि जो काम करने का मैंने निश्चय किया है उसके लिए मुझे अपनी तरफ से तैयारी करनी ही होगी।'

टूटे दिल सक जार्ज पूरे शहर में घूमा। हर कहीं छात्र जीवन की गहरी छाप थी। उत्साही युवक, किताबों की दुकानें, होटेल, रेडिमेड कपड़ों की दुकानें!

वापस गांव जाना तो अब संभव ही नहीं था। जब विश्वविद्यालय से पत्र आया था तब आस-पड़ोस के सारे परिचितों को दिखाया था। वे लोग भी तो कितने खुश हुए थे। नेट दादा ने तो हर आने-जाने वाले को अपनी बुलंद आवाज में जार्ज की यशोगाथा सुनाई थी। ल्यूसी मौसी ने सारी तैयारियां की थीं। होटल और नेट दादा की दुकान से कमाए हुए सारे पैसे तो खर्च हो गए थे कालेज की तैयारी में। अब पास में फूटी कौड़ी भी नहीं थी। फिर से कंगाल हो गया था जार्ज। क्या कभी छुटकारा होगा इस चक्र से? फिर काम ढूंढने की नौबत आ गयी थी।

उखड़े मन से चलते-चलते जार्ज गांव से बाहर आ गया। फसल की कटाई का मौसम था। फसल कट रही थी। चलो, कालेज शिक्षा नहीं, पेट भरने का सवाल हल हो गया। वहीं एक खेत में मजदूरी मिल गई। हाथ के हंसिए ने पेट की और पुआल की राशियों ने सोने की समस्या मिटा दी। अब फिर से एक बार कालेज शिक्षा के प्रबंध के लिए जी तोड़ मेहनत करनी थी।

फसल की कटाई खत्म होते ही जार्ज ने 'आयोवा' स्टेट की राह ली। विंटर सेट गांव में उसे एक होटल में काम मिल गया। होटल का नाम था 'शुल्झ'।

कितनी ही मुसीबतों का सामना करते हुए जार्ज आगे बढ़ रहा था। उसका व्यक्तित्व सोने जैसा निखर रहा था। वह देख रहा था अपने भाई-बंधुओं को, अपने समाज की बुरी हालत, उनकी सामाजिक स्थिति। डायमंड ग्रोव की दुनिया कितनी सुरक्षित थी और यह बाहरी दुनिया कितनी अलग थी उस दुनिया से? यहां का समाज चमड़ी के रंग को महत्व देने वाला, काले-गोरे में भेद करने वाल!

जार्ज अब पहले की तरह छोटा सा... कमजोर लड़का नहीं रह गया था। पिछले छह महीनों में वह अच्छा खासा छह फुट का जवान बन गया था। कपड़े वगैरा भी अब पहले से कुछ अच्छे, सलीकेदार। लोगों से कतराता नहीं था बल्कि थोड़ा बहुत घुलमिलकर रहने लगा था। फिर भी उसे प्यार था अपने छोटे दोस्तों से। वे अब भी याद आते उसे। और बार-बार याद आते बीते दिन। मोजस चाचा, सूसान चाची को कैसे भुलाता वह? कभी याद आता कैसे जॉन मार्टिन ने जबरन उसे चर्च में भेजा था।

उस दिन भी इतवार था। जार्ज ने सोचा, 'चलो आज चर्च जाना है।' तैयार होकर वह चर्च गया। विंटर सेन में नीग्रो लोगों का अलग चर्च नहीं था। अत: गोरों के चर्च में ही गया और बिल्कुल आखिरी कतार में एक कोने में जा बैठा। जब प्रभु के गीत

गाये जाने लगे तब उसे मन में कितनी ही पुरानी यादें जाग उठीं। कार्वर परिवार की शाम की प्रार्थना याद ही आयी और अनजाने ही जार्ज ने भी गाना शुरू कर दिया। थोड़ी देर बाद पाया, हर कोई उसी की ओर देख रहा है। तब उसे अहसास हुआ, अरे! और तो कोई भी नहीं गा रहा है, सिर्फ वेदी के पास बैठा हुआ गायक दल ही गा रहा है। जार्ज ने एकदम झेंपकर गाना बंद कर दिया। पास बैठी हुई वृद्धा ने कहा, 'गाओ बेटे! ईश्वर ने तुम्हें सुरों की दौलत दी है, कितनी मीठी आवाज है... चुप क्यों हो गये? गाओ!' जार्ज ने उसकी तरफ मुस्कराकर देखा, फिर भी चुप ही रहा।

अंत में जब सामूहिक गाना शुरू हुआ तब उसने भी अपना सुर मिलाया। सारे चर्च में उसका शुद्ध सुर गूंज उठा। प्रार्थना के बाद सबने उसे सराहा।

पादरी बाबा ने उसकी पूछताछ की और उसके लिए काम भी जुटा दिया। कितने ही लोगों से पहचान हुई और फिर काम भी मिलने लगे। फिर तो वह नियमित रूप से चर्च जाने लगा। गाने के अंतिम चरण में सुर मिलाते समय उसे एक अनूठा अनुभव होता। संगीत से अवर्णनीय आनंद मिलता था उसे।

शुल्ज़ होटल में काम करते समय अचानक एक दिन एक गोरे साहब उससे मिलने आए। जार्ज जल्दी से हाथ धोकर रसोईघर से बाहर आया। आए हुए सज्जन को देखकर वह सोच में पड़ गया, 'इन्हें तो मैं जानता नहीं, मुझसे क्यों मिलने आये हैं?'

आने वाले ने कहा, 'मैं मिलहालैंड हूं। पादरी बाबा ने कहा, तुम यहां पर काम करते हो, इसीलिए मिलने चला आया।'

'धन्यवाद! लेकिन यह तो होटल का रसोईघर है... आप जैसे लोगों के आने लायक यह जगह नहीं है।' जार्ज ने संकोच से कहा।

'अरे नहीं! मैं यहां पर आ गया तो क्या हुआ? मुझे और मेरी पत्नी को ऐसा महसूस हुआ कि तुम यहां बिल्कुल अकेले हो, कभी किसी शाम को घर पर बुलाने के लिए आया हूं।'

'ओह!...' जार्ज बेचारा को कुछ सूझ नहीं रहा था। पहली बार कोई उससे इस तरह की बात कर रहा था। घर आने का निमंत्रण दे रहा था। ऐसे समय क्या कहना चाहिए, वह जार्ज नहीं जानता था।

फिर श्री मिलहालैंड ही बोले, 'मेरी पत्नी चर्च के गायक दल की प्रमुख हैं। उसने विदेश जाकर संगीत की शिक्षा पायी है। आवाज की परख है उसे।'

'तो फिर... मैं...' जार्ज के लिए अब सीधी बात भी मुश्किल हो गयी थी।

'और हां, मेरी पत्नी का कहना है कि तुम्हारी आवाज बहुत अच्छी है।'

'ओहो! यह आप क्या कह रहे है? मेरी समझ में नहीं आ रहा है। मैं तो कितने ही सालों से बोल भी नहीं पाता था।'

'ऐसी अजीब बात है? तब तो तुम्हारी और भी सराहना करनी होगी। बोलो, कब आओगे घर पर?'

फिर मिलहालैंड के घर जाने का दिन तय हुआ। उनके जाने के बाद भी जार्ज कितनी ही देर तक उन्हीं के विचारों में खोया रहा। विदेशों में शिक्षा पाने वाले लोग, अमीर तो होंगे ही! और फिर भी मुझ जैसे गरीब को घर पर बुलाते हैं, अजीब बात है। और फिर मेरी आवाज को भी सराहते हैं, कमाल है।

आज श्री मिलहालैंड के घर जाना है। मन ही मन कितनी बार दोहराया होगा जार्ज ने। चरबी और स्टोव की कालिख मिलाकर जूते चमकाये। कपड़े धोकर, इस्त्री करके तैयार किये। हाथों को बार-बार धोया। पहली बार जार्ज ने खुद की तरफ ध्यान दिया था। तैयार होकर जब वह मिलहालैंड के घर की ओर चल पड़ा, तब मन में एक अजीब उत्कंठा थी, क्या पता कैसे लोग हों?

उनके घर के पास ही एक झाड़ी पर एक नन्हा सा फूल दिखाई दिया जैसे जार्ज की राह देख रहा था। जार्ज ने हल्के हाथ से उसे तोड़ा और अपने कोट पर टांक लिया।

दरवाजे पर ही श्री मिलहालैंड जार्ज के स्वागत के लिए तैयार खड़े थे। जार्ज को बैठक में बिठाकर अपनी पत्नी को बुलाने घर के अंदर गये।

बैठक का कमरा इतना सादा था कि जार्ज को थोड़ी निराशा ही हुई। अन्य अमीर लोगों की तरह नहीं दिखते ये लोग। नहीं तो और अमीरों के घरों की सजावट, बाप रे! कैसा प्रदर्शन रहता है अमीरी का! और यह बैठक तो एकदम खाली-खाली सी!

... नहीं! एकदम खाली तो नहीं, यह क्या है? ओह!... तो ऐसा होता है पियानो... अब तक तो सिर्फ तस्वीरों में देखा... पियानो देखकर जार्ज से रहा नहीं गया। हल्के पांव जा पहुंचा पियानो के पास। धीरे से छूकर देखा, उसी लंबी-लंबी उंगलियां चलने लगीं पियानो की पट्टियों पर। किसी की आहट हुई तो चौंककर दूर हटने लगा, तभी एक मीठी आवाज सुनी, 'बजाते रहो। तुम्हारी उंगलियां, तुम्हारे हाथ भी तुम्हारी आवाज की ही तरह हैं, असली कलाकार हो तुम!... ' श्रीमती मिलहालैंड कह रही थीं। जार्ज ने श्रीमती मिलहालैंड की तरफ देखा, सोचा, अरे! ये तो बिल्कुल भी अमीर महिलाओं की तरह नहीं दिखतीं। इनकी बातें भी कैसी मीठी हैं, खनकते संगीत की तरह!

श्रीमती मिलहालैंड ने जार्ज को कुर्सी पर बिठाया और बोलीं, देखो अब मैं इसे बजाकर दिखाती हूं। उनकी उंगलियां पियानो पर चलने लगीं। संगीत की लहर उमड़ पड़ी, सुरों के प्रवाह में सारा वातावरण डूबने लगा। जार्ज को क्या कुछ याद आने लगा, उसके छोटे दोस्त, ओजार्क की पहाड़ियां, नेओशो के यायगर साहब, उनका बगीचा, उनकी बातें उसके कानों में गूंजने लगीं, 'सारी धरती ईश्वर है... ' जार्ज का मन जाने कैसा हो आया। कहीं कुछ खोया है, कहीं कुछ हारा है, ऐसी एक अनामिक वेदना उभर आयी उसके हृदय में... उसे अपनी ही भावनाओं की तीव्रता ने झकझोर दिया। गला भर आया। अब और संभालना, अपने आपको संभालना उसके बस में नहीं रहा। दोनों हाथों में मुंह छिपा लिया फिर भी आंसू छिपे नहीं, बह चले। सन्नाटा छा गया।

श्रीमती मिलहालैंड उठकर जार्ज के पास आयीं, उसके कंधे पर हाथ रखकर बोलीं, 'मुझे माफ कर देना, दोस्त!'

बड़ी मुश्किल से जार्ज बोल पाया, 'वह संगीत इतना सुंदर था, इतना सुंदर कि...' और कुछ कहना संभव नहीं था।

'मैंने समझ ली तुम्हारी बात। मुझे इस बात को पहले ही सोच लेना चाहिए था।'

जार्ज समझ गया। फिर एक बार वह 'अपनों' के बीच आ गया है। मन की निराशा दूर हुई, आंखों में चमक आ गयी। उत्साह की लहर दौड़ गयी तन-मन में।

उस शाम जार्ज ने मिलहालैंड दम्पत्ति को अपनी पूरी कहानी सुनायी। हायलैंड विश्वविद्यालय में कैसे नकारा था यह सुनाया। अपनी कालेज शिक्षा पाने की इच्छा भी जाहिर की। आज तक उसने किसी से भी अपने मन की बात इस तरह नहीं कही थी। शायद आज तक कोई गौर से सुनने वाला सहानुभूति दर्शाने वाला मिला ही नहीं था। कालेज शिक्षा के बारे में जो बन पड़ेगा वह करने का आश्वासन इन दोनों ने दिया। अगली बार आते समय अपनी पेंटिंग्स लाने का वादा करके जार्ज वापस जाने के लिए निकला तब श्रीमती मिलहालैंड बोलीं, 'अपने हाथों कुछ और भी काम हो सके, इसलिए ईश्वर ने फुरसत दी है ऐसा समझो। जब तक तुम यहां पर हो मेरे पास संगीत सीखने आया करो।'

खुशी से पागल होकर जार्ज ने कहा, 'ओह! अवश्य!! इसके बदले में आपके घर के सामने एक सुंदर बगीचा तैयार करूंगा।'

तय हो गया। जार्ज की जिंदगी में इस बार वसंत आयी। होटल की नौकरी के अतिरिक्त मिलने वाला हर क्षण हर पल उसने मिलहालैंड के बगीचे में लगा दिया। जमीन तैयार करना, पौधे लगाना, उनकी देखभाल और फिर पियानो पर रियाज। बस और किसी बात की गुंजाइश ही नहीं थी।

बगीचा साकार हुआ, उसके लगाए पौधे बड़े होने लगे, फूल खिलने लगे और उसका हाथ भी अब पियानो पर सध गया, संगीत गूंजने लगा। मेहनत के नतीजे सामने थे। श्रीमती मिलहालैंड ने जैसा सोचा था वैसा ही छात्र था जार्ज। हर बात बड़ी जल्दी आत्मसात करने वाला। जार्ज की बनायी एक वाटर कलर की पेंटिंग बैठक में सज रही थी। घर पर आने वाले परिचित उस चित्र की प्रशंसा करते। चर्च में गाने वाले नीग्रो लड़के ने वह बनायी है इस बात का विश्वास ही नहीं होता उन्हें।

रोज शाम को जार्ज मिलहालैंड के घर जाता, उन्हें अपनी दिनभर की काम-काजी कहानी सुनाता। उस समय श्रीमती मिलहालैंड अपने दोनों बच्चों को भी वहां बुलातीं और जार्ज की कहानी सुनवातीं और फिर अपने बच्चों से पूछतीं, इससे आधा काम भी कर पाओगे तुम लोग?

मिलहालैंड परिवार के कितने ही काम जार्ज अपने कुशल हाथों से निबटाता था। उसकी कुशलता देखकर आसपड़ोस के घरों से भी उसे काम मिलता था। एक बार जार्ज को काम सौंप दिया तो वह पूरा हो ही गया समझो ऐसी तारीफ थी जार्ज के काम की।

मिलहालैंड की एक पड़ोसन थीं श्रीमती राबिंस। जार्ज को काम से फुरसत मिलते ही बुनाई के नये-नये बनाता था। उसके

पास ऐसे नमूनों का अच्छा खासा संग्रह हो गया था। श्रीमती राबिंस ने जार्ज से पूछा, 'तुम क्या करोगे, इतने सारे नमूने जमा करके?' जार्ज का उत्तर था, 'मैं जब वापस अपने गांव जाऊंगा तब अपने गांववालों को सिखाऊंगा।'

जार्ज के मन में बचपन से एक बात गहरी बैठ गयी थी कि अपने दो हाथों से करने लायक हर काम वह सीखे और उसमें माहिर हो।

मिलहालैंड परिवार में जार्ज ने बहुत प्यार और ममता पायी। जार्ज सोचता था कि जब तक इस दुनिया में मिलहालैंड जैसे लोग हैं तब तक मुझ जैसों को सहारा मिलता रहेगा। इस विश्वास से उसे अपने मार्ग पर आगे बढ़ते रहने के लिए बल मिलता था।

गर्मी का मौसम शुरू हुआ। जार्ज हमेशा की तरह मिलहालैंड के बगीचे में खुरपी चला रहा था कि श्रीमती मिलहालैंड ने उसे घर में बुलाया। हाथ का काम अधूरा छोड़ना पड़ा इसलिए जरा नाराजगी से वह आ खड़ा हुआ।

श्रीमती मिलहालैंड ने मेहमान से परिचय कराया। मेहमान था उनका भांजा, डेन ब्राउन। जार्ज की पूरी कहानी जानता था। डेन, जार्ज की कालेज शिक्षा के लिए जानकारी बटोर कर लाया था।

'जार्ज! डेन तुम्हारे लिए बड़ी अच्छी खबर लेकर आया है।'

जार्ज वहीं सीढ़ियों पर बैठ गया। श्रीमती मिलहालैंड की खुशी से चमकती आंखें देखकर मन में आस जाग उठी। मन की आशा का पंछी पल भर में कहां-कहां घूम आया। खुशखबरी क्या हो सकती है, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। डेन एकटक देख रहा था जार्ज की तरफ। जार्ज का वह प्रमाणबद्ध मस्तक, उत्सुक चेहरा, गंभीर पैनी आंखें। डेन ने सोचा, 'यह सीधा सादा मामला नहीं, निराली बात है।'

उसने जार्ज से कहा, 'ये लोग कह रहे हैं, तुम कालेज में पढ़ना चाहते हो। मेरे ख्याल से सिम्पसन कालेज तुम्हारे लिये बिल्कुल ठीक रहेगा।'

'सिम्पसन कालेज। कहां है वह? मुझे तो उसके बारे में कुछ नहीं मालूम। क्या मुझे वहां प्रवेश मिलेगा? तुम्हारी क्या राय है?' जार्ज ने पूछा।

'अरे! धीरे! भई धीरे! एक साथ कितने सवाल? हां! तो सुनो, यह कालेज है आयोवा स्टेट के इंडियानोला में। बिशप मॅथ्यू सिम्पसन ने यह कालेज शुरू किया। अब्राहम लिंकन का साथ निभाने वाले सिम्पसन अपनी पूरी जिंदगी गुलामी से लड़ते रहे। इस कालेज को बनाने में उन्होंने अपना सर्वस्य लगा दिया था। ऐसे कालेज में तुम्हें प्रवेश मिल के ही रहेगा। मैं भी वहीं पर पढ़ता हूं। प्रवेश शुल्क भी अधिक नहीं है। मैं तुम्हारे लिए सारी जानकारी ले आया हूं और फिर वह गांव भी अच्छा खासा है, इसलिए तुम्हें काम भी अच्छा ही मिलता रहेगा।'

'लेकिन वहां पर कोई नीग्रो छात्र है कि नहीं?' पिछला अनुभव भूला नहीं था जार्ज।

'अभी तक तो कोई नीग्रो छात्र नहीं है। लेकिन उससे कुछ नहीं होता। बिशप सिम्पसन का बनाया हुआ कालेज है और किसी नीग्रो को प्रवेश न दे ऐसा नहीं हो सकता है।'

जार्ज उठकर खड़ा हो गया। खुशी के मारे समझ में नही आ रहा था कि क्या करे। कितना बड़ा बोझ हट गया था दिल से दिमाग से। राह खुल गयी थी सामने। शायद मंजिल भी हो पास ही कहीं!!

'सिम्पसन कालेज का चित्रकला विभाग बड़ा ही समृद्ध है। मैं चाहती हूं, जार्ज चित्रकला सीखे।' श्रीमती मिलहालैंड कह रही थीं, 'वैसे तो जार्ज संगीत में भी बहुत कुछ कर सकता है, लेकिन चित्रकला में वह अधिक प्रतिभा रखता है।'

डेन ने कहा, 'बात तो ठीक है, जार्ज की चित्रकला बहुत ही अच्छी है, लेकिन... फिर भी...'

'डेन, अब और अलग क्या राय है तुम्हारी?' श्रीमती मिलहालैंड बोलीं।

'शायद मैं ठीक से समझा नहीं पाऊंगा, फिर भी मुझे ऐसा लगता है,' डेन अपनी बुआ को समझा रहा था, 'तुम्हारे घर का यह आंगन, यह बगीचा मैं बरसों से देख रहा हूं। लेकिन इस वसंत में यहां जैसी रौनक है, वैसी मैंने आज तक कभी नहीं देखी थी। वही बगीचा जैसे खिल उठा है। इसलिए मुझे लगता है कि जार्ज के हाथ सजीव सृष्टि को कागज पर उतारने के लिए नहीं बल्कि वे तो सजीव सृष्टि का जतन करने वाले हाथ हैं, संजीवनी है उन हाथों में।'

जार्ज भी सुन रहा था और सोच रहा था। 'शायद यही बात सही है।'

मिलहालैंड परिवार को छोड़कर जाते समय बहुत दुख हुआ। ऐसा प्यार अब कहां? भरे-पुरे परिवार की छाया से निकल कर फिर अकेले राह तह करनी थी। असुरक्षित, अनिश्चित राह। क्या पता फिर हायलैंड विश्वविद्यालय जैसी निराशा ही हाथ लगे। लेकिन इस बार मन को अच्छे से समझा लिया था उसने।

तीस मील लंबी राह काटकर वह सिम्पसन कालेज पहुंचा। साथ में थी उसकी प्रखर गरीबी और प्रखर ज्ञानपिपासा।

हर नया दिन अब आस जगानेवाला था। कालेज शुरू होने के दो दिन पहले ही वह इंडिआनोला जा पहुंचा था। इस बार कालेज के दाखिले में कोई अड़चन नहीं आयी। होस्टेल में रहने का प्रबंध भी हो गया। अब तो सिर्फ खाने-पीने के गुजारे का बंदोबस्त करना था।

पहले कुछ दिन तो वह छोटे-मोटे काम ढूंढता और गुजारा कर लेता। इसी कमाई से किफायत करके पैसे जमा किए और फिर कपड़े धुलाई का सामान खरीदा। एक टब और लकड़ी का पटिया। कालेज के प्रिंसिपल साहब से अनुमति लेकर एक टपरे में अपना धोबी घर शुरू किया। डंका पीटने के लिए डेन ब्राउन तो था ही। थोड़े ही दिनों में उस टपरे का बड़ा नाम होने लगा। कालेज के लड़कों की प्रिय जगह बन गया वह टपरा। जार्ज को भी अब नियमित आमदनी होने लगी। लेकिन शुरू के कुछ दिन बहुत बेहाल बीते थे। मिलहालैंड को लिखे पत्रों से पता चलता है कि जार्ज ने वे दिन कैसी-कैसी मुश्किलें पार करते हुए गुजारे होंगे।

जार्ज ने लिखा है, 'उन दिनों मुझे जानवरों की चरबी और प्रार्थना पर गुजारा करना पड़ा और कई बार सिर्फ प्रार्थना पर।'

टपरी में आने वाला व्यक्ति देखकर हैरान रह जाता कि कैसे कपड़े धोना, इस्त्री कना और किताब पढ़ना साथ-साथ चलता है।

जार्ज कपड़ों की धुलाई और इस्त्री के साथ-साथ बाकी देखभाल भी करता। फटे कपड़ों को रफू करता, पैबंद लगाता, टूटे बटन टांकता, काज ठीक करता और तो और मोजे भी रफू करता। इन कामों में भी जार्ज के हाथ अपनी कुशलता दिखाते। इस कारीगरी के साथ-साथ दोस्तों का मनोरंजन भी करता था। बाहर गांव घूमा हुआ जार्ज और उस पर गजब का नकलची! ऐसे-ऐसे किस्से सुनाता कि दोस्तों का हंस-हंस कर बुरा हाल हो जाता। टपरे की रौनक भी कम नहीं होती, और साथ-साथ कपड़े धुलाई का धंधा भी जोरों से चलता।

अपने इन गुणों के कारण तो जार्ज विद्यार्थियों का चहेता था ही, साथ ही उसकी बुद्धिमत्ता और बहुमुखी प्रतिभा के कारण वह कालेज में भी सबका लाडला बन गया था।

जार्ज चित्रकला विभाग की डायरेक्टर श्रीमती बड का विद्यार्थी था। जल्दी ही श्रीमती बड को जार्ज की कुशलता और कला निपुणता का अंदाजा हो चला। एक बार अपनी सहेली श्रीमती लिस्टन के पास उन्होंने जार्ज के बारे में कहा, 'बड़ा प्रतिभावान है, थोड़ी सी मदद से क्या कुछ कर सकता है। पिछले कुछ दिनों से मैं, इस बात पर गौर कर रही हूं कि उसकी मदद कैसे करूं? मुफ्त में वह कुछ लेता नहीं। मैंने उसकी फीस जमा करायी तो चार दिनों से मेरे घर पर आकर लकड़ी काट देता है। अगर किसी तरह काम करता रहे तो उसकी कला कब और कैसे चमके? तुम कुछ कर सको तो . . . '

श्रीमती लिस्टन तुरंत राजी हो गयीं। अपनी जान पहचान वालों से उन्होंने टेबल, कुर्सी, बिस्तर वगैरह इकट्ठा किया। कालेज के छात्रों ने भी योगदान दिया। फिर समय-समय पर सब मिलकर जार्ज की मदद करते रहे। जार्ज हमेशा इस मदद के लिए कृतज्ञ रहता।

श्रीमती मिलहालैंड को लिखे पत्र में जार्ज ने सिम्पसन कालेज के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए लिखा था:

'और लोगों की ही तरह अधिकार और कर्तव्य निभाते हुए जिंदगी जीने की मेरी इच्छा, सिम्पसन कालेज में पूरी हो गयी है। 'आदमी' की तरह जिंदगी जीने का अनुभव सिम्पसन कालेज ने ही दिया है। मेरा आत्मविश्वास बढ़ रहा है . . . और लोगों की तरह।'

तीन साल तक जार्ज ने श्रीमती बड के पास चित्रकला की शिक्षा पायी। उस समय जार्ज की बनाई तस्वीरें 'आदर्श' के रूप में विद्यर्थियों को दिखाई जाती थीं। (इस तीन वर्ष के काल में जार्ज ने जो ऑइल पेंटिग्स बनायीं उनमें से 27 चित्र 'कार्वर आर्ट कलेक्शन' में रखी हुई हैं।)

चित्रकला के साथ-साथ संगीत की साधना भी जारी थी। कालेज के कितने ही संगीत के कार्यक्रमों में जार्ज की बड़ी प्रशंसा होती। जार्ज को इस प्रशंसा से जितना आनंद मिलता उससे ज्यादा संतोष उसे इस बात का होता कि वह अपनी हटीली जबान को काबू में रख सकता था। शुद्ध उच्चारण कर सकता था।

चित्रकला में प्रवीण होने से जार्ज को संतोष नहीं हो रहा था। बार-बार उसका मन कसकता था कि कहीं कुछ कमी रह गयी है। यह फूलों पत्तों के चित्र उतारना तो अंतिम ध्येय नहीं है। यह तो सिर्फ सत्य का आभास है। तो फिर सत्य क्या है? सजीव सृष्टि?

दूसरे साल से जार्ज अपना अधिकांश समय प्रयोगशाला में बिताने लगा।

कुछ ही समय में सिम्पसन कालेज की पढ़ाई समाप्ति पर आ गयी। शिक्षकों ने जार्ज से कहा कि, 'जितना कुछ हम लोग तुम्हें पढ़ा सकते थे पढ़ा चुके, अब यहां सीखने के लिए तुम्हारे लायक कुछ बचा नहीं।'

श्रीमती बड का आग्रह था कि जार्ज पैरिस जाकर चित्रकला की उच्च शिक्षा प्राप्त करे। जार्ज को भी चित्रकला में विशेष रुचि थी। उसका भी मन था पैरिस जाकर उच्च शिक्षा पायी जाए। किन्तु उसे बार-बार श्री हरमन यायगर की कही हुई बात याद आती, 'ये हाथ सृजनशील हैं, छू कर ही संजीवनी देने वाले हैं।' जार्ज सोचता संजीवनी देना यानि कागज पर फूलों पत्तों के चित्र उतारना तो नहीं। फिर मुझे क्या करना चाहिए?

सन 1891 में जार्ज ने सिम्पसन कालेन से विदा ली और एम्स के आयोवा स्टेट कालेज में प्रवेश लिया। यह कालेज रसायन शास्त्र और वनस्पति शास्त्र के लिए प्रसिद्ध था। श्रीमती बड के पिता वहीं पर प्राध्यापक थे। कालेज प्रवेश में कोई रुकावट नहीं आयी।

जार्ज अब लगभग 27 साल का युवक हो चुका था। लंबा, तगड़ा और हट्टा-कट्टा जवान जिसमें आत्मविश्वास की कोई कमी नहीं थी। सिम्पसन कालेज ने उसे 'उत्तम छात्र' होने का सर्टिफिकेट दिया था। अत: आयोवा स्टेट कालेज में दाखिला लेते समय कोई कठिनाई नहीं आयी। कालेज और होस्टल की फीस के पैसे जार्ज के पास थे अत: वहां भी कोई मुश्किल सामने नहीं आयी। लेकिन इस बार एक नयी मुसीबत खड़ी हो गयी। होस्टल के संचालकों ने नीग्रो छात्र को होस्टल में रखने से मना कर दिया।

अमेरिका के राष्ट्रसचिव और कैबिनट सदस्य, श्री जेम्स विल्सन उन दिनों आयोवा स्टेट कालेज के युनाइटेड स्ट्रेटस एक्सपेरिमेंटल स्टेशन के संचालक थे।

उन्हें इस नीग्रो की समस्या का पता चला। उन्होंने जार्ज को अपने पास बुलकर, साफ शब्दों में अनौपचारिक ढंग से कहा, 'तुम तो बेशक मेरे आफिस में ही रहने आ जाओ।'

आफिस के सारे साजोसामान की रचना को बदलकर एक खाट के लिए जगह बनायी गयी। खाट कमरे में तो आ गयी लेकिन दरवाजे पर खरोंच के निशान छोड़कर। निशान देखकर जार्ज के दिमाग में आया, इन्हें तो मिटाना पड़ेगा और कमरा भी बेतरतीब हो गया है, इसे ठीक से लगाना पड़ेगा। कोई मदद करे और जार्ज भूल जाये, ऐसा तो हो ही नहीं सकता था। मददगार का कर्ज उतारना का कोई और भी अवसर जार्ज हाथ से नहीं जाने देता था। किसी न किसी रूप में वह लौटाने की कोशिश करता। इसीलिए हमेशा वह किसी के बगीचे की देखभाल करता या कहीं किसी के घर की रंगाई पुताई करता। बगैर कुछ काम किए उसे मदद लेना कदापि मंजूर नहीं था। उसने श्री विल्सन से पूछा, 'यहां आसपास कोई रंग की दुकान है।'

'रंग की दुकान? अरे भई! इसे क्या कालेज का चित्रकला विभाग समझ रखा है?'

'लेकिन अगर स्कूल कालेज में ही रंग की दुकान हुई भी तो उसमें बुरा क्या है? विद्यार्थियों को ईश्वर निर्मित रंगों की पहचान तो हो। एक न एक दिन मै एक ऐसी जगह बनाऊंगा जहां विद्यार्थी स्वयं आना चाहेंगे।'

श्री विल्सन ने जार्ज के काले चेहरे पर एक अलग ही तरह की उत्कट भावना देखी, जार्ज की चमकती हुई आंखें साफ-साफ कह देती थीं कि वह साधारण विद्यार्थी नहीं। यह तो कुछ और ही मामला है।

आने वाली जिंदगी में भी श्री विल्सन का जार्ज से स्नेह बना रहा, लेकिन जार्ज के बारे में उन्हें हमेशा एक तरह का कौतुहल

बना रहा।

पूरी रात जागकर जार्ज ने सारा फर्नीचर और दरवाजे की चौखट पर रंग चढ़ाया, फिर कमरे को ठीक से सजाया। रहने का बंदोबस्त तो हो गया, रही बात खाने की। इस बार भी चमड़ी के रंग ने नया रंग दिखाया। जार्ज को होस्टल की मेस में सबके साथ खाने की अनुमति नहीं थी। इस आनंद से वंचित कर दिया गया था। उसके लिए तो बस रसोईघर का कोना था। बड़े दुखी मन से जार्ज ने इस व्यवस्था को स्वीकार कर लिया। धीरे-धीरे यह बात प्राध्यापक बड तक पहुंची। उन्होंने अपनी बेटी को जार्ज की परेशानी के बारे में चिट्ठी लिखी। छह माही परीक्षाओं में व्यस्त होने के कारण श्रीमती बड स्वयं तो नहीं आ सकीं लेकिन उन्होंने अपनी सहेली श्रीमती लिस्टन को भेजा। श्रीमती लिस्टन ने एम्स आते ही 'मेस' की परेशानी हल कर दी।

दूसरे ही दिन से जार्ज अपने दोस्तों के साथ में खाने लगा। सप्ताह भर में मेस का रूप ही बदल गया। सारे भोजनगृह की रौनक बन गया जार्ज। अपनी बुद्धिमत्ता और नम्रता से उसने सबको जैसे जीत लिया था।

जार्ज ने मेस में एक नया ही खेल शुरू कर दिया। जो आज तक वहां चलता है। ऐसे खेलों से छात्रों के मन में होस्टल की 'मेस' एक यादगार बन जाया करती है। खेल ऐसा था कि यदि खाने की मेज पर कोई पदार्थ मांगना है तो उसे उसके रासायनिक या वानस्पतिक पारिभाषिक नाम से ही मांगा जाये। जैसे शक्कर के लिए सी12 एच22 ओ 11 या फिर आलू के लिए सोलेनम टयूबरोजम इत्यादि। जिन विद्यार्थियों को ये नाम याद नहीं आते थे वे तो जार्ज के पास ही बैठना पसंद करते। नहीं तो कहीं भूखे ही न रहना पड़े। जार्ज पास हो तो कोई मुश्किल नहीं, क्योंकि जार्ज महाशय तो ऐसी संज्ञाओं के 'सजीव कोश' थे।

इस कालेज में जार्ज ने वनस्पति शास्त्र, रेखागणित, रसायन शास्त्र, प्राणी-जीव शास्त्र इत्यादि विज्ञान शाखाओं की शिक्षा पायी। उसे रसायन शास्त्र विशेष रूप से अच्छा लगता था। क्योंकि उसके मन में उठने वाले कितने ही 'क्यों' के उत्तर इस शास्त्र विषय में मिलते थे। 'क्यों' के उत्तर के विश्लेषण की रीति इस शास्त्र में थी। किसी भी बात की तह तक जाकर जानकारी हासिल करना यह जार्ज की खासियत थी और रसायन शास्त्र के अध्ययन से ही यह संभव था। रसायन शास्त्र का गहरा अध्ययन शुरू हुआ।

कालेज की पढ़ाई और बाकी समय काम, इतनी व्यस्तता में भी जार्ज अपने कलासक्त हृदय के लिए समय निकाल ही लेता। कालेज के कार्यक्रमों में हिस्सा लेता।

एक बार एक संगीत के कार्यक्रम में जार्ज ने इतना अच्छा गाया कि बॉस्टन कंजरवेटरी ऑफ म्यूजिक के सभासदों ने उसे संगीत कला के अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति देनी चाही। लेकिन जार्ज का ध्येय संगीत में निपुण होना नहीं था। चित्रकला या संगीत की आराधना से उसके इरादे पूरे होने वाले नहीं थे। वह जानता था उसे क्या करना है इसलिए उसने इस छात्रवृत्ति को स्वीकार नहीं किया।

आयोवा स्टेट कालेज में विद्यार्थियों के लिए सैनिक शिक्षा विभाग भी था। जार्ज ने अपना नाम लिखवाया। फौजी बनने की तरफा उसका झुकाव नहीं था और नीग्रो होने के कारण फौजी अधिकारी तो वह कभी बन ही नहीं सकता था। लेकिन उसके मन में फौजी वर्दी और बैंड, मार्चपास्ट सबके लिए बहुत आकर्षण था। इसी आकर्षण के कारण उसने सैनिक शिक्षा विभाग में नाम लिखवाया था।

इतने सालों से धोबी काम करने के कारण जार्ज के कंधे झुक गये थे। परेड के समय कमांडर उस पर चिढ़ते। जार्ज ने फिर एक उपाय ढूंढ निकाला। एक लंबी लाठी को वह दोनों बगलों में दबा लेता और हाथ पीठ पीछे रखकर मील दो मील लंबी दौड़ लगाता। कितनी भी आकर्षक वनस्पति या और भी कुछ दिखाई दे तब भी वह झुकता नहीं, घुटनों पर बैठकर देखता, बगल की लाठी वैसी ही रखकर।

कालेज छात्रों को मिलने वाला कैप्टन का पद हासिल करने वाला वह पहला नीग्रो था। कालेज के शिक्षक जनरल लिंकन बड़े कठोर शिक्षक थे। उन्होंने जार्ज की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस लड़के ने अपने गुणों और योग्यता के बल पर ही इस पद को पाया है। उसकी इस सफलता में किसी की भी मदद नहीं रही।

संगीत और चित्रकला की आंतरिक चाह उसे कभी-कभी बेचैन कर देती। तब किसी छुट्टी में वह श्रीमती बड के घर जाता और चित्रकला की आराधना करता। उन्हीं दिनों जार्ज ने न्यू मेक्सिको के रेगिस्तानों में देखी हुई युक्का वनस्पति के रेखांकन सक एक चित्र बनाया।

प्राध्यापक बड जार्ज की चित्रकला की बड़ी प्रशंसा करते। जार्ज के चित्रकला में निपुण होने की बात श्री विल्सन तक पहुंची। श्री विल्सन सोच में पड़ गये कि यह इतना होनहार लड़का चित्रकला छोड़कर कृषि शास्त्र के पीछे क्यों पड़ा है?

आखिर उनसे नहीं रहा गया, उन्होंने जार्ज से पूछ ही लिया, 'कुछ दिनों के लिए पढ़ाई बंद रखकर तुम चित्रकला या संगीत की शिक्षा क्यों नहीं कर लेते?'

हमेशा की तरह शांत, नम्र उत्तर मिला, 'क्योंकि कृषि शास्त्र की पढ़ाई का ही अन्य नीग्रो, मेरे लोगों के लिए उपयोग हो सकेगा।'

जार्ज के इस उत्तर से श्री विल्सन आश्चर्यचकित हो गये। जार्ज के लिए उनका प्यार और सद्भाव दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा था।

जार्ज की एक बात अब सब को मालूम हो गयी थी। बिना कुछ काम किए वह किसी से मदद नहीं लेता था। लेकिन इस नियम में एक व्यक्ति अपवाद था। वे थे श्री विल्सन। उनके सामने जार्ज की एक नहीं चलती। कभी-कभार वे डांट-डपट के भी अपनी बात मनवाते। जार्ज के जूते बिल्कुल ही फट गये हों तो वे दो डालर्स देते और हुक्म सुनाते, 'अभी जाओ और नये जूते खरीदो। चलो, इसी वक्त!!' जार्ज के पास बात सुनने के अलावा और कोई चारा न रह जाता!

उस साल 'सीडर रैपिड्स' में 'अखिल आयोवा चित्रकला प्रदर्शनी' लगनेवाली थी। प्राध्यापक बड ने जार्ज से चित्रों के भेजने के बारे में पूछा।

जार्ज ने कहा, 'सीडर रैपिड्स' में जाकर प्रर्दशनी में भाग लेने का खर्चा मैं नहीं कर पाऊंगा।'

सहपाठियों का जार्ज की असमर्थता के बारे में पता चल गया। सारे के सारे जार्ज के कमरे में इकट्ठे हुए। बड़ा उदास और गुमसुम था जार्ज। सबने इसे जबरन कमरे के बाहर निकाला और एक बग्घी पर बिठाकर ले चले।

'अरे भाई, कहां ले जा रहे हो तुम।'

'क्रिसमस आ रहा है, इसलिए।'

'लेकिन कहां ले जा रहे हो यह तो बताओ, नहीं तो मुझे यही उतरने दो। अभी तो कितने की काम पड़े हैं।' जार्ज ने विनती की।

'अरे, रहने दो, बड़ा आया है, काम करने वाला, तुम्हारे सब काम हो जायेंगें। हम लोग सब ठीक-ठाक कर आये हैं, अब तुम चुपचाप चले चलो।'

जार्ज बेचारा चुप कर गया। अब सब लड़के क्रिसमस के गीत गा रहे थे। रास्ते में और भी लड़के मिले वे भी गीत गाते-गाते इनके साथ हो लिए। हर कोई अपने आप में मस्त होकर गा रहा था। जार्ज की शिकायत पर किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया। जार्ज बेचारा परेशान हो गया था, समझ नहीं पा रहा था कि आखिर बात क्या है?'

अंत में वह जलूस एक रेडिमेड कपड़ों की दुकान पर आ कर रुका।

'चलो, जार्ज उतरो। कब से खिटपिट लगा रखी थी, अब उतरो।'

'यहां? इस दुकान में मुझे कोई अंदर भी जाने देगा? मेरा हुलिया देख रहे हो?'

'नीचे तो उतरो पहले, फिर सुनाना भाषण।'

और उसके बाद सबने मिलकर जार्ज को उठा लिया और दुकान में ले गये। दुकानदार भी शामिल था साजिश में। उसने सारी चीजें तैयार रखीं थीं। फिर जार्ज की नाप का भूरे रंग का सूट सामने लाया गया। दुकानदार ने जार्ज से पहन कर देखने के लिए कहा।

जार्ज से अब बर्दाश्त नहीं हुआ। उसने गुस्से से कहा, 'शरारत बहुत हो गयी। अब बस, मैं कैसे यह कपड़े खरीद सकूंगा?'

लेकिन कोई सुन रहा हो तब! वहां तो कोई सूट पहनाने में मशगूल था तो कोई गीत गा रहा था। फिर सूट के हिसाब से शर्ट, टाई, दस्ताने, बूट हैट सब चुने गये। पूरी पोशाक सजायी गयी। सबने खुश होकर तालियां पीटीं और जार्ज को बग्घी में बिठाकर जुलूस वापस चल पड़ा श्री विल्सन के घर की ओर!

दरवाजे पर ही श्री विल्सन और प्रो. बड खड़े थे स्वागत के लिए। तो यह बात है! यह लोग भी शामिल थे इस कारनामे

में।

जार्ज कहने लगा, 'सर, देखिए ये लड़के मानते ही नहीं, अभी इस वक्त मुझे कालेज के बगीचे में जाना चाहिए था।'

'तो फिर?' प्रो. विल्सन ने उसे गौर से देखते हुए कहा।

'और आज तो मैंने प्रो. बड के घर आंगन की सफाई करने का वादा किया है।' फिर जार्ज की शिकायत शुरू हुई लेकिन प्रो. विल्सन ने कुछ ध्यान ही नहीं दिया, कहा, 'आज तुम सीडर रैपिड्स जा रहे हो।'

प्राध्यापक के यह कहने पर तालियों की आवाज से बरामदा गूंज उठा।

'जार्ज! उस प्रदर्शनी में अपने कालेज का प्रतिनिधित्व करने के लिए तुमसे बढ़कर और कौन हो सकता है। यह रहा तुम्हारा सीडर रैपिड्स का टिकट और यह चित्र जो श्रीमती बड की सलाह पर चुने हैं। प्रो. बड भी तुम्हें खुशी से अनुमति दी है।'

'लेकिन, इतना खर्चा, ये इतने सारे पैसे कैसे चुकाऊंगा मैं?' दया की भीख न लेनेवाला जार्ज पूछ रहा था।

प्रो. विल्सन ने जार्ज के कंधे थपथपाए और कहा, 'ये पैसे तो तुमने पहले ही चुका दिए हैं। तुम्हारे दोस्तों और शिक्षकों ने तो बस चंदा जमा किया है। तुम्हारी दोस्ती इस खर्चे से कहीं बढ़कर है। हमें तुम पर पूरा विश्वास है कि तुम सफल होकर लौटोगे।'

जार्ज की आंखें भर आयीं। उसने सब को भीगी आंखों से देखा और कहा, 'आप सब को मैं कैसे धन्यवाद दूं?!! और आंसू बह चले।

अपनी धीर-गंभीर प्रकृति और नम्र व्यवहार के कारण जार्ज विद्यार्थियों में सबका प्रिय था। आयोवा स्टेट कालेज को उस पर जो विश्वास था उसे उसने झुठलाया नहीं। प्रदर्शनी में रखे चारों चित्रों ने पुरस्कार जीते और तो और उनमें से एक चित्र 'न्यू मेक्सिको के युक्का' वनस्पति का चित्र शिकागो में होने वाली वर्ल्ड कोलंबियन एक्सपोजीशन के लिए चुना गया। शिकागो में विश्व के रथी-महारथियों के चित्र आये थे लेकिन वहां भी इस दुर्लभ वनस्पति के चित्र को विशेष सम्मान मिला। आयोवा स्टेट के हर अखबार में विशेष सम्मान पाने वाले इस चित्र और चित्रकार के बारे में लेख लिखे। लेकिन जार्ज तो फिर भी जार्ज ही था। उसे अचानक मिले इस मान-सम्मान से ज्यादा खुशी प्रो. विल्सन के घर के बरामदे के स्नेह सम्मेलन से मिली।

जार्ज अपने सहपाठियों से बहुत अलग था। उसकी निराली जिंदगी, निराली ही आदतें। विद्यार्थी जब मीठी नींद सोये होते, जार्ज कालेज के बगीचे में पहुंच गया होता या फिर गांव के बाहर की झाड़ियों में वनस्पतियों की खोज में। दूसरों को पुस्तकों द्वारा जो ज्ञान मिल रहा था उससे कहीं ज्यादा ज्ञान जार्ज हासिल करता। प्रकृति सान्निध्य में, प्रकृति के माध्यम से। इसीलिए पढ़ाई में वह सबसे आगे रहता।

जार्ज अब श्री विल्सन का दाहिना हाथ हो गया था। काम के लिए उसे चौबीस घंटे कम पड़ते। गर्मी की छुट्टियों में भी वह होस्टल में ही रहता, कालेज के बगीचे के सारे काम निपटाकर जंगल झाड़ियां में घूमता फिरता, अपने प्यारे छोटे दोस्तों के साथ, पेड़-पौधों के साथ।

एम्स गांव के आसपास बहुत जंगल झाड़ियां थीं। इन झाड़ियां में कई जगहों पर दलदल भी था। कहीं-कहीं तो वह इतना गहरा था कि पूरा आदमी धंस जाये। इस खतरनाक दलदल के बारे में जार्ज हमेशा चिंतित रहता। अक्सर प्रो. विल्सन से इस दलदल के बारे में चर्चा करता। जार्ज ने दलदल का इलाज पानी की निकासी के बारे में एक योजना भी तैयार की थी और प्रो. विल्सन को बतायी थी।

जार्ज अक्सर इन झाड़ियों में घूमता, अपना मैग्नीफाइंग ग्लास, एक जाली और वनस्पतियों के नमूने जमा करने का झोला अपने कंधे पर लटकाये। एक बार ऐसे ही घूमते समय उसने एक छोटे लड़के को वहां दलदल में खेलते हुए देखा। ऐसी जगह 'खेलने' का खतरा जार्ज जानता था इसलिए उसने उस लड़के को बाहर निकलने के लिए पुकारा और वही हुआ जो नहीं होना चाहिए था। वह छोटा लड़का कीचड़ में फिसल कर गिर पड़ा।

जार्ज ने दौड़कर उसे बाहर निकाला और अपने रूमाल से कीचड़ पोंछा, पूछा, 'बेटे, तुमने उन छोटे लोगों के घर क्यों तोड़े?' 'घर! मैंने तोड़े! कहां? कौन लोग?' छोटा लड़का तो एकदम बौखला गया, उसकी कुछ समझ में ही नहीं आया। फिर जार्ज ने उसे उस कीचड़ में रहने वाले प्राणी और उनके घर दिखलाये।

'ओह! सचमुच! इनते दिन मैं इनके घरों के छप्पर तोड़ता रहा!' इतना सा लड़का, आंखें भर आयीं, बड़ा दुख हुआ उसे। जार्ज

ने फिर उसे समझाया और भी कितनी ही बातें बतायीं। कीचड़ में और कौन-कौन से प्राणी रहते हैं, यह बतलाया। एक चमगादड़ पकड़कर उसके हाथ में थमा दिया, वह भी कैसे दलदल में घर बनाकर रहता है यह समझाया और चमगादड़ को छोड़ दिया। छोटे लड़के की बड़ी इच्छा थी कि चमगादड़ को अपने पास रखे। लेकिन नहीं, जार्ज ने उसे छोड़ दिया और साथ में यह भी समझाया कि इस तरह प्राणियों को पकड़कर क्यों नहीं रखना चाहिए। छोटा लड़का अब बड़ा खुश हो गया था, खुल गया था जार्ज से, मजे से गपशप कर रहा था। जार्ज ने उसका नाम पूछा, 'हेनरी वैलेस!' आगे चलकर अमेरिका का उपराष्ट्रपति पद की शान बढ़ाने वाले उस लड़के ने उत्तर दिया।

'ओह! वैलेस, इसका मतलब तुम तो हमारे प्रो. वैलेस के बेटे हो?'

दूसरे दिन... हेनरी वनस्पति उद्यान में आ पहुंचा जार्ज से मिलने। अब तो वह अपनी मां की अनुमति लेकर आया था, रोज शाम जार्ज के साथ जंगल झाड़ियों में घूमने की।

जार्ज ने हेनरी को एक गुलाब का पौधा दिखाया। उसकी एक डाली पर पीला फूल खिला था, दूसरी पर लाल फूल। कैसे? उस पौधे पर जार्ज ने कलम लगाई थी। फिर हेनरी को समझाते हुए जार्ज ने बताया, 'कलम करने से पौधा बड़ी जल्दी बढ़ता है। यदि किसी वातावरण में कोई खास पौधा अच्छे से नहीं पनप रहा हो तो उसी इलाके में पनपने वाले किसी पौधे पर इसे कलम किया जाये तो यह नया पौधा पनप सकता है। अब तो हर शाम ये दोनों भिन्न व्यक्स मित्र साथ-साथ घूमते थे। जार्ज के साथ रहकर हेनरी भी अब प्रकृति के रहस्यों को समझने लगा था, रुचि ले रहा था। वनस्पति जगत की कितनी ही बातें जान गया था। पौधों पर कलम करना सीख गया था।

यह दोस्ती सालों-साल चली। जार्ज के आखरी दिनों तक। एक अर्धशतक। जार्ज और हेनरी के बीच पत्र व्यवहार चलता रहा। हेनरी हमेशा जार्ज से सलाह लेते। मिडवेस्ट का वैलेस फार्म इसी हेनरी के कार्य कौशल का प्रतीक है। उसकी प्रेरणा थे जार्ज।

आगे चलकर अमेरिकी कृषि विभाग के पद पर और फिर उपराष्ट्रपति पद पर रहने वाले हेनरी वैलेस ने जार्ज कार्वर के कार्यों का गौरव करते हुए अपनी लड़कपन की यादें बतलायी थीं।

'मैं जार्ज से प्रकृति के चमत्कारों के बारे में ऐसे सुनता था जैसे कोई परीकथा सुन रहा हूं, उसी उत्सुकता के साथ उन्होंने मुझे प्रकृति को देखने की नयी दृष्टि प्रदान की। बचपन में जो बातें वे मुझे दिखलाते थे, उन सब बातों को उस उमर में मैं शायद ठीक से समझ नहीं पाता था। लेकिन एक बात निश्चित थी, वह यह कि मुझ जैसे छोटे बच्चे पर उनका जो विश्वास था, ज्ञान का भंडार लुटाया था, उससे मैं बहुत ही प्रभावित हुआ था।'

कालेज के कुछ लड़के हमेशा जार्ज की तलाश में रहते और जार्ज ने भी उन लोगों को कभी निराश नहीं किया।

बात ऐसी थी।

होस्टल के बरामदे में से जाते हुए जार्ज ने एक कमरे से कराहने की आवाज सुनी, अंदर झांककर देखा। एक छात्र असहनीय वेदना से तड़प रहा था। फुटबाल खिलाड़ी था खेलते समय पैर में मोच आ गयी थी। जार्ज ने उसे औंधे मुंह लिटाया, फिर हल्के हाथों से पैर में मालिश शुरू की। थोड़ी देर में कराहने वाला आराम से सो रहा था, दर्द का नामोनिशान नहीं था। दूसरे दिन खिलाड़ियों में इसी बात की चर्चा थी और तब से ही जार्ज कालेज के सब खिलाड़ियों का 'अधिकृत' मालिशवाला बन गया था।

कालेज के खिलाड़ी जार्ज की प्रशंसा करते नहीं थकते। कहते, 'जार्ज की उंगलियों में जादू है। उसकी उंगलियों ने छुआ और बस, दर्द गायब!'

जार्ज ने एक बार व्यायाम प्रशिक्षक से मालिश के लिए दिये जाने वाले तेल की शिकायत की। तेल बहुत गाढ़ा था और ठीक से फैलता नहीं था। प्रशिक्षक ने कहा कि इससे अच्छा तेल तो उपलब्ध ही नहीं है। इस बात पर जार्ज का उत्तर था, 'मैं ही किसी दिन मालिश का अच्छा तेल ढूंढ निकालूंगा।'

सचमुच कुछ सालों बाद जार्ज ने मालिश के लिए सर्वोत्तम तेल तैयार किया 'मूंगफली' से!!

सन् 1894 में जार्ज ने आयोवा स्टेट कालेज से विज्ञान शाखा की उपाधि प्राप्त की। यह दीक्षांत समारोह जार्ज के लिए कितना महत्वपूर्ण था। सही अर्थ में उसकी रात-दिन की अविरत मेहनत, कष्टों का फल उसे मिल रहा था। इस समारोह में उपस्थित रहने के लिए इंडिआनोला से श्रीमती लिस्टन खास तौर पर आयीं थीं।

श्रीमती बड और सिम्पसन के दोस्तों ने विशेष भेंट वस्तुएं और फूल भेज थे। अपने पुराने दोस्तों के प्यार ने जार्ज के मन में

हलचल मचा दी। पुराने दोस्तों की यादों में खो गया जार्ज। उसकी सफलता का गुणगान करनेवाला इस दुनिया में कोई है इस अनुभूति से ही उसे इतना आनंद मिला, इतनी खुशी मिली कि बस! उसने गुलदस्ते से एक छोटा सा सुंदर सा फूल चुना और अपने कोट पर टांक लिया। इसके बाद हमेशा उनके कोट पर एक छोटा सा फूल अवश्य होता, इस दिन की यादगार। स्नेह और प्रेम की यादगार!!

बड़ी लंबी दूरी तय करके पहुंचा था जार्ज इस मुकाम पर? उसने विपरीत परिस्थितियों में भी कितना कुछ हासिल किया था। उसके चार चित्र 1893 की वर्ल्ड कोलंबियन एक्सपोजीशन के लिए चुने गए थे। उसे आयोवा स्टेट कालेज का बुद्धिमान छात्र माना जाता था। उसे 'युनाइटेड स्टेट्स ऑफिसर्स रिजर्व' का पहला नीग्रो अफसर बनने का मान प्राप्त था।

समारोह में जब जार्ज उपाधिपत्र लेने के लिए मंच की ओर चला तो सारा वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। कालेज के दोस्तों ने ही नहीं, बाकी लोगों ने जोर-शोर से अभिनंदन किया। अभिनंदन की इस अभूतपूर्व वर्षा से जार्ज का मन एक अवर्णनीय भावना से भर उठा।

समारोह संपन्न होने पर वह अपने कमरे में आया। अपनी मां के पवित्र स्मारक चरखे के सामने घुटनो पर बैठ गया। काश! कम-से-कम आज के दिन तो मैं मां से स्नेहाशीष पा सकता।। मेरी इस उज्जवल सफलता के बाद मैं मां से शाबासी पा सकता। कहां होगी मां!!

कितना अकेला था जार्ज!

मां की यादों में विकल जार्ज कितनी ही देर तक वैसे ही बैठा रहा अकेला, गुमसुम सा सोचता हुआ। उसकी इस सफलता में कितनों का योगदान रहा था। मारिया बुआ, मार्टिन, श्रीमती मिलहालैंड, श्री विल्सन। सबने अपने-अपने तरीके से मदद की थी। जार्ज के व्यक्तित्व को संवारा था। आज इन सबकी बहुत याद आ रही थी।

सूरज डूब रहा था। कमरे में अंधेरा छाने लगा था। लेकिन जार्ज को इस बात का होश नहीं था। जार्ज को ढूंढते-ढूंढते श्री विल्सन आये। उन्होंने हौले से दरवाजा धकेला। अंधेरे कमरे में जार्ज उस समय किस जगह पर होगा इसका उन्हें सही अंदाजा था। वे जार्ज को सही मायने में 'जानते' थे। उन्होंने जार्ज को अपने आने का अहसास दिलाया। कांच की चिमनी जलाकर जार्ज बाहर आया। उससे श्री विल्सन ने कहा, 'अकेले क्यों बैठे हो। चलो मेरी पत्नी ने तुम्हें खाने पर बुलाया है! और एक बात और भी है, तुम्हें पता है? तुम्हें कालेज की विज्ञान शाखा का (फेलो) सभासद बनाया गया है।'

जार्ज के थरथराते हाथों से चिमनी छूट गयी, फूट गयी। उसकी मानसिक अवस्था की कल्पना करना विल्सन साहब के लिए कोई मुश्किल काम नहीं था। उनका भी गला रुंध गया। बोले, 'गिरने दो, अब उसके बारे में मत सोचो, चलो मेरे साथ।'

'आपने अभी क्या कहा था सर? फिर से कहिए एक बार?' जार्ज बोला।

'अरे भाई, सचमुच कालेज ने तुम्हें नियुक्त किया है, तुम वनस्पतिशास्त्र पढ़ाओगे और साथ में तुम्हारा लाडला, कालेज का बगीचा भी संभालोगे।'

जार्ज को लगा, कहीं उसके कान धोखा तो नहीं खा रहे हैं? लेकिन नहीं जो सुना था बिल्कुल सही था। नीग्रो हुआ तो क्या, गोरे विद्यार्थी भी खुशी से फूला न समाये। आयोवा स्टेट कालेज में पढ़ाने का अवसर? कितने सम्मान की बात है!!

सीमाएं असीम होती जा रही हैं। सारी धरती ईश्वर की। इस धरती की खोज करनी हो तो सीमाएं तो लांघनी ही पड़ेंगी।

प्रो. वॅलेस के निर्देशन में जार्ज का अनुसंधान कार्य शुरू हुआ। भविष्यकाल में कृषिशास्त्र में होने वाली क्रांति की राह थी। जमीन, वनस्पति और मनुष्य प्राणी का सुंदर संयोजन होना था, सुंदर मिलाप होना था। प्रो. वॅलेस हमेशा कहते, 'जब तक धरती की ऊपरी सतह सुरक्षित है, तब तक देश का भविष्य सुरक्षित है।'

जमीन की ऊपरी तह की रक्षा करने के लिए, उसे अधिक-से-अधिक सशक्त और उपजाऊ बनाने के लिए यह बेजोड़ गुरु-शिष्य की जोड़ी कार्यरत थी।

स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए जार्ज ने मायकॉलॉजी यह विषय चुना। पढ़ानेवाले थे प्रसिद्ध प्राध्यापक पामेल। जार्ज ने मायकॉलॉजी पढ़ते समय वनस्पतियों के करीबन बीस हजार नमूने इकट्ठे किये। अपने विषय के गहन अध्ययन के कारण जार्ज का नाम हो गया था। शास्त्रीय शोध पत्रिकाएं भी इस विषय पर जार्ज के अधिकार को मानती थीं।

आयोवा स्टेट रजिस्टर में प्रो. बड का लेख प्रकाशित हुआ। इस लेख की जानकारी की अधिकृतता के लिए उन्होंने जार्ज कार्वर

के शोधकार्यों का संदर्भ दिया था। गुरुजनों से ऐसा विश्वास पाना कोई आसान काम है? जार्ज ने इस मुकाम तक पहुंचने के लिए क्या कुछ नहीं किया? सारा आयोवा राज्य छान मारा। बाग-बगीचे, मशरूम्स की पैदाइश आदि विषयों पर भाषण देने के लिए गांव-गांव घूमा। इन भाषणों में उसने किसानों से वनस्पतियों के संभाव्य रोग और उनके प्रतिबंधक उपायों के बारे में बातचीत की। डायमंड ग्रोव का वह छोटा हकलाता बच्चा आज अपने ज्ञान का लाभ अपने किसान भाइयों को दे रहा था।

सन् 1986 में जार्ज ने एग्रीकल्चर एंड बैक्टीरियम बॉटनी में मास्टर ऑफ साइंस की सर्वोच्च उपाधि हासिल की।

स्वातंत्र्यग्रस्त

सन् 1865 के दिसम्बर महीने में अमेरिका की गुलामी की प्रथा नष्ट करने की घोषणा की गयी। नीग्रो जाति की स्वतंत्रता को अधिकृत रूप से मान्यता दी गयी।

आज तक जो लोग सिर्फ किसी के आधीन ही जिये थे, हुकुम सुनते और उसकी तामील करते-करते ही जिनकी जिंदगी कटी थी। कपास के खेतों में मजदूरी करने वाले, सिर्फ यही काम जानने वाले बेचारे अनाड़ी गुलाम स्वतंत्रता का अर्थ क्या समझ पाते? जिन्होंने ढाई सौ वर्ष गुलामी में बिताए हों उन्हें यकायक मिली स्वतंत्रता ने समस्या में डाल दिया। चालीस लाख लोगों के सामने बड़ी गंभीर समस्याएं खड़ी हो गयीं।

खाना, कपड़ा, मकान किसी एक का भी ठिकाना नहीं। भविष्यकाल के लिए कुछ इकट्ठा करना चाहिए इतनी सीधी सी बात की भी जानकारी नहीं। हर नीग्रो बिका हुआ, गुलाम। उनकी स्त्रियां, गोरे मालिकों की मिल्कियत। न थी कोई विवाह व्यवस्था, न ही कोई परिवार पद्धति। कोई भी आगा-पीछा न होने वाला यह समाज 'मुक्त' घोषित होने से एकदम ही बेघर हो गया।

जैसे कि रोगमुक्ति के लिए शल्यक्रिया तो की गयी हो किन्तु बाद में न तो दवा-दारू होए न ही कोई देखभाल।

इन बेचारों को अब गोरों की बराबरी से जीना था। दोनों समाजों के बीच का अंतर था खाई के बराबर। कैसे कटता? इस नवमुक्त समाज के सामने अनगिनत सवाल थे। रहने के लिए घर, कुटुम्ब संस्था का निर्माण, जीवनस्तर ऊपर उठाने की आवश्यकता, शिक्षा का प्रबंध। एक नहीं अनेक सवाल। कपास के खेतों की मजदूरी छोड़कर कभी कोई दूसरा काम किया ही नहीं। ना अपनी जमीन, ना कोई हुनर! शिक्षा नहीं अत: नौकरी भी नहीं। आज तक गोरे मालिक को छोड़कर कहीं गये ही नहीं। अब कहां जायें? वह भी इस ढलती उमर में?

अत: बहुत से तो अपने पुराने मालिकों के पास वापस आये। रोटी की कीमत स्वतंत्रता से अधिक थी।

स्वतंत्रता का असली अर्थ इन लोगों ने समझा ही नहीं था। 'स्वतंत्र' मतलब शारीरिक कष्टों से छुटकारा। बस! उनकी दृष्टि में स्वतंत्रता का यही अर्थ था। गुजारे के लिए अब भी मेहनत करनी होगी यह बात उन लोगों को मंजूर नहीं थी। ग्रीक, लैटिन जैसी भाषाएं सीख लेना, बैंकिंग, कामर्स जैसे विषयों की पढ़ाई करना, यही उनकी नजर में बड़प्पन का लक्षण था।

इस समाज की सामाजिक और आर्थिक स्थिति तो अस्थिर थी ही, साथ-साथ ये लोग राजनीति की लपेट में आ गये जिससे स्थिति और भी जटिल हो गयी।

राजकीय सत्ता दक्षिण के बागानवालों के कब्जे में थी। उन्हें तो हमेशा मजदूरों की जरूरत पड़ती, गुलामों के बगैर बागानवालों के कब्जे में थी। दक्षिण की संस्कृति और गुलामी साथ-साथ जुड़े हुए थे।

दक्षिण के राज्यों के कायदे-कानून भी गुलामी की प्रथा को संरक्षण देनेवाले थे। पुरातत्व बाइबिल प्राचीन ग्रीस की गुलामी की प्रथा को आधार मानकर गुलामी का समर्थन होने लगा। उत्तर की कपड़ा मिलें दक्षिण से आने वाले कपास पर निर्भर थीं अत: उत्तर के पूंजीवादी कारखानों के मालिक भी इस गुलामी की कुप्रथा को नजरअंदाज कर देते थे। आपसी युद्ध में फेडरल सरकार विजयी हो गयी थी। उसने दक्षिण के तथाकथित राज्यों में पुनर्रचित सरकारें स्थापित की। मुक्त नीग्रो गुलामों के पुनर्वसन का दृष्टि के फ्रीडमेन्स ब्यूरो की स्थापना हुई।

राज्य संविधान के 13वें संशोधन के आधार पर कानूनन गुलामी का अंत हो गया था, लेकिन क्या दक्षिण और क्या उत्तर नीग्रो को हीन माननेवाले गौरवर्णी वांशिक समानता के अधिकार के बारे में चुप्पी साधे बैठे थे। मुक्त नीग्रो गुलामों के पुनर्वसन की दृष्ठि से फ्रीडमैन्य ब्यूरो ने नया विधेयक रखा। 'अमेरिकन संघ राज्य में जन्मा और संघ राज्य की न्यायप्रणाली के अंतर्गत आनेवाला हर व्यक्ति, अमेरिकन संघ राज्य का नागरिक है।' इस विधेयक का उद्देश्य एक ही था, नीग्रो लोगों के अधिकारों का संरक्षण

हो।

सन् 1868 में दक्षिण के सात राज्यों को, अलाबामा, जार्जिया, फ्लोरिडा आदि सात राज्यों को फिर से संघ राज्य में शामिल कर लिया गया। फ्रीडमैन्य ब्यूरो का विधेयक 14वें संशोधन के रूप में मान्य हुआ।

नीग्रो अब मतदाता हुए। नीग्रो लोगों ने मतों के अधिकार से दक्षिण के बहुत से विधान मंडलों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये। उसी तरह उत्तर के गोरों ने बहुत से विधान मंडलों में अपनी स्थिति सुधारी। नीग्रो और उत्तरी राज्यों के गोरों के मेल के सामने दक्षिण के वर्णभेदी गोरों अब कमजोर सिद्ध होने लगे। नयी शक्ति को रोकने के लिए कोई भी उपाय नहीं ऐसी स्थिति में दक्षिण के गौरव का लोगों में अब गैरकानूनी हथियार अपनाने शुरू किए। दक्षिण में रोज हिंसाचार, आगजनी, लूटमार की वारदातें होने लगीं। इस आग में झुलस रहा था बेचार नीग्रो समाज।

इसी समय अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय ने चौदवें संशोधन का एक नया ही अर्थ निकाला। सिर्फ फेडेरल सरकार और प्रजाजनों के अधिकार तक ही यह संशोधन मर्यादित रखा गया। दक्षिण में स्कूल, यातायात के साधन और मनोरंजन के स्थानों जैसी जगहों पर वर्णभेद ज्यों का त्यों बना रहा। यहां तक कि फेडरल सरकार की सेना की नौकरी में भी वर्णभेद चलता था। कुल मिलाकर चौदवें संशोधन की प्राप्ति थी मात्र राजकीय समानता, सामाजिक समानता नहीं। यद्यपि राजकीय क्षेत्र में नीग्रो विधान मंडल का सदस्य बन सकता था, समाज के बाकी सब क्षेत्रों में उसे घोर उपेक्षा का सामना करना पड़ रहा था। वह अब भी बहिष्कृत ही था। कई नीग्रो प्रत्याशी अपने नीग्रो बांधवों के मताधिकार के कारण, ले, गवर्नर आदि पदों पर निर्वाचित होते किन्तु अवधि समाप्त होने पर बेकार हो जाते और उन्हें मजदूरी करनी पड़ती। क्योंकि दूसरा कोई काम नीग्रो लोग जानते ही नहीं थे।

डा वाशिंगटन ने उनकी 'अप फ्रॉम स्लेवरी' पुस्तक में एक ऐसा ही किस्सा बयान किया है।

डा वाशिंगटन एक बार दक्षिण के दौरे पर थे। एक भवन निर्माण के काम पर उन्होंने सुना:

'गवर्नर, जल्दी ईंटे लाओ।'

दो-तीन बार यही बात सुनी। उन्हें अचरज हुआ। साथ वालों से पूछा, बात क्या है? तब पता चला, 'गवर्नर एक नीग्रो था, पिछले चुनावों में जीता था। अवधि समाप्त होने पर फिर से ईंटे ढोने की मजदूरी पर आया था। अपने बांधवों के मतों से विधान मंडलों पर निर्वाचित होने वाले बहुत से नीग्रो प्रत्याशियों की यही हालत थी। अशिक्षित नीग्रो प्रत्याशी, प्रशासन का अनुभव न होने के कारण जो गल्तियां करते, वे और अलग।

कुछ भले, सुविचारी गोरे लोगों से नीग्रो समाज की ऐसी बुरी हालत देखी नहीं गयी। उन्होंने सोचा यदि नीग्रो को स्वावलंबी बनाना है तो सिर्फ किताबी शिक्षा से कुछ भी नहीं होगा। उन्हें तो स्वयंसिद्ध बनाना होगा। श्रम की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। यदि उचित अवसर मिले तो नीग्रो भी उन्नति कर सकता है। उसकी शारीरिक और बौद्धिक क्षमता को सही दिशा मिलनी चाहिए। इन सब बातों को ध्यान में रखकर कुछ नयी संस्थाओं का निर्माण हुआ।

आपसी युद्ध में नीग्रो बटालियन का नेतृत्व करने वाले आर्मस्ट्रांग ने वर्जिनिया में हैम्पटन नार्मल एंड इंडस्ट्रियल इंस्ट्टियूट शुरू की। बहुत से नीग्रो लड़कों ने इसका लाभ उठाया। अनेक शिक्षक भी तैयार हुए। दक्षिण के अलाबामा राज्य के टस्कगी गांव से आर्मस्ट्रांग के लिए चिट्ठी आयी -

'हम लोग नीग्रो विद्यार्थियों के लिए स्कूल शुरू कर रहे हैं। एक गोरा शिक्षक भेजिए।'

आर्मस्ट्रांग का उत्तर था, 'गोरा नहीं, काला शिक्षक भेज रहा हूं। उनका नाम है, बुकर टी वाशिंटन।'

विपन्न अलाबामा

सन् 1832 में अलाबामा स्टेट में टस्कगी नाम की एक छोटी सी बस्ती नयी-नयी बसी थी। जनसंख्या थी कोई 2000 के आसपास। उनमें से आधे थे नीग्रो गुलाम। आधी उमर गुलामी में बिताया हुआ लुइस एडम्स और उसका एक गोरा साथी जार्ज कॅम्पबेल। इन दोनों ने मिलकर नीग्रो लोगों के लिए स्कूल चलाने की सोची। इसी संबंध में उन्होंने जे आर्मस्ट्रांग को चिट्ठी लिखी थी। आर्मस्ट्रांग ने अपनी संस्था के होनहार नीग्रो युवक बुकर टी वाशिंगटन को भेजा था।

4 जुलाई 1881 टस्कगी के लिए बड़ा महत्वपूर्ण दिन सिद्ध हुआ। उसी दिन बुकर टी वाशिंगटन ने टस्कगी में ज्ञानदीप

प्रज्जवलित किया।

टस्कगी नार्मल एंड इंडस्ट्रियल इंस्ट्टियूट फॉर नीग्रोज एक पुराने टूटे-फूटे चर्च में स्कूल शुरू हुआ। तीस काले विद्यार्थी, चौदह साल की उमर से लेकर साठ साल तक के, और शिक्षक बुकर टी वाशिंगटन।

बातचीत के दौरान एक विद्यार्थी ने अपने शिक्षक को बताया कि वह अलाबामा में कैसे आया। इस विद्यार्थी का जन्म वर्जिनिया में हुआ था। सन् 1845 में, अलाबामा में बिका था। श्री वाशिंगटन ने पूछा, 'कितने थे तुम लोग?'

उत्तर मिला, 'पांच जन, मैं, मेरा भाई और तीन खच्चर।'

अज्ञान के बड़े भयंकर बोझ तले दबा हुआ यह नीग्रो समाज स्वतंत्रता के सही अर्थ को समझने की स्थिति में ही नहीं था। न ही उसे सीधा-साधा सहज जीवन जीना आता था। उन्हें यह सिखाना आवश्यक था। समाज को ऐसी स्थिति से उबारने की जिम्मेदारी पढ़े-लिखे युवकों की ही है। ऐसा सोचकर श्री वाशिंगटन ने इस कार्य की शुरुआत की थी।

इन विद्यार्थियों को नियमित रूप से पढ़कर ज्ञान प्राप्त करने की आदत डालना आवश्यक था। धीरे-धीरे ही सही, लेकिन उचित तरीके से काम करने कुछ ज्ञान प्राप्त करना था। गुलामी में सिर्फ कष्ट ही उठाये थे। अब मुक्त स्वतंत्र होने के बाद ज्ञार्नाजन के लिए परिश्रम करना आवश्यक था। मेहनत से जी चुराना तो सत्य झुठलाना होता है।

नीग्रो समाज को पूर्व इतिहास का आधार नहीं था। जहां परिवार संस्था का अस्तित्व नहीं था वहां वंश परंपरा के अभिमान, घराने का नाम आदि बातों से संबंध ही कैसे हो? सारे रिश्तेनाते सिर्फ मां तक ही थे, पूर्वज वंशज आदि बातें जहां ज्ञात ही नहीं थीं वहां घराने का नाम रोशन करने के लिए कुछ करने की बात कैसे कही जाती? यह स्थिति बदलनी होगी। कम-से-कम हमारे बाद की पीढ़ियों को ऐसी स्थिति में न रहना पड़े। उन्हें परिवार मिले। घराना मिले। जिनका नाम गौरव से लिया जा सके ऐसे पूर्वज उन्हें मिलें। नयी पीढ़ी को हम ज्ञान की वसीहत दे सकें। यह जिम्मेदारी हम कैसे पढ़े-लिखे उपाधिधारी स्नातकों की है। मैं इसीलिए राजनीति का मोह छोड़कर टस्कगी में आया हूं।

सन् 1881 के अंत में श्री वाशिंगटन ने टस्कगी गांव के आसपास की 100 एकड़ जमीन 500 डालर्स में खरीदी। पैसे श्री आर्मस्ट्रांग ने दिये।

उस वर्ष की समाप्ति के समय विद्यार्थियों की संख्या बढ़कर 50 हो गयी थी और साथ ही श्री वाशिंगटन के सपने पचास गुने हो गये थे।

श्री वाशिंगटन के लक्ष्य भी ऊंचे होने लगे। पचास विद्यार्थियों के सहयोग से उन्होंने उस 100 एकड़ जमीन पर अपने सपनों को आकार देना शुरू किया।

'गुलामी में उठाये कष्टों की अपेक्षा, स्वतंत्र होने के बाद स्वयं के विकास हेतु किए गए परिश्रम में प्रतिष्ठा है।' यह बात समझने के लिए श्री वाशिंगटन स्वयं भी विद्यार्थियों के साथ काम करते, खेतों में फावड़ा, कुदाली चलाते। उन्होंने लड़कों को पढ़ाना लिखाना सिखाने के साथ-साथ बढ़ई का काम, कुम्हार का काम भी सिखाया। इसी के साथ मोची काम, गद्दे बनाना, ईंटे बनाना भी सिखाया।

ईंटों के लिए भट्टा लगाने में बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। कई बार प्रयास किए, भट्टा जमता ही नहीं था। हर बार असफलता मिलती। पैसे की कमी तो हमेशा ही रहती। आखिर अपने हाथ की घड़ी गिरवी रखकर श्री वाशिंगटन ने पैसे जुटाये। इस बार भट्टा जम गया। लेकिन हाथ की घड़ी हमेशा के लिए गयी।

श्री वाशिंगटन के मार्गदर्शन में स्कूल के विद्यार्थियों ने अपने हाथों से बनायी ईंटों से ऐसी बढ़िया इमारत खड़ी की कि सब देखते ही रह गये। पहली बार उन लोगों को अपने हाथों से बनायी इमारत में रहने का अवसर मिला था। लेकिन उन्हें बनाने में कितने ही कष्ट उठाये थे उन्होंने। कई बार भूखे रहना पड़ा था। कभी खाने के सामान का अभाव, तो कभी-कभी खाना पकाने के लिए रखी हुई लकड़ी ईंटों की भट्टी में डालनी पड़ी थी। लेकिन भूखे रहकर भी कोई कर्तव्य से नहीं हटा था। उन विद्यार्थियों ने पूरी लगन से मेहनत करके अपनी इमारत बना ली थी।

अब इस स्कूल के विद्यार्थी ईंटे तैयार करने में इतने निपुण हो गये कि आसपास के इलाके में उनकी बनाई ईंटों की मांग होने लगी! स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा बनाये गुए गद्दे, चप्पल, चटाईयां, अलाबामा के बाजारों में बिकने लगीं।

स्कूल में तैयार होने वाला माल बाजारों तक पहुंचाने के लिए किसी साधन की जरूरत महसूस होने लगी। ठेलों से काम चल सकता था, लेकिन उन्हें खरीदने के लिए स्कूल के पास पैसे नहीं थे। अत: श्री वाशिंटन ने स्कूल में ही ठेले बनाने का प्रयोग किया। अब तो बाकी सामान के साथ-साथ ठेलों की भी मांग होने लगी।

अब तक की सारी जिंदगी गुलामी में बिताये हुए एक गुलाम के पास चाकू, छुरियां बनाने का हुनर था। उसने विद्यार्थियों को अपना कला सिखायी। ल्सूइस एडम्स ने धातु की चादरों से चीजें बनाना सीखा। श्री वाशिंटन का भाई जॉन भी हैम्पटन इंस्टीटयूट का स्नातक था। उसने स्कूल में मधुमक्खी पालन विभाग शुरू किया था। अब खाने में शहद भी मिलने लगा।

मेहनत, शारीरिक परिश्रम यही एक चीज थी जो नीग्रो कर सकता था। परिश्रम के आधार पर ही उसके लिए अपना अस्तित्व बनाये रखना संभव था। अगर गोरों से बराबरी करनी है तो पहले अपना अस्तित्व बनाए रखना आवश्यक था। समान अधिकार पाने के लिए अपनी योग्यता बढ़ाना आवश्यक था। गुजारे का निश्चित साधन हो, जिंदगी की रोज की जरूरतें पूरी करने की योग्यता हो, तभी कोई कला, कोई हुनर का काम सीख कर जिंदगी में समृद्धि लाने वाली कार्य कुशलता आएगी।

श्री वाशिंगटन जानते थे कि सिर्फ बैंकिंग और कामर्स क्षेत्र में पढ़ाई करने वालों से काम नहीं चल सकता। वे चाहते थे कि समाज को साथ लेकर चल सके ऐसे शिक्षक हों। जो विद्यार्थी पढ़कर निकले वह समाज को संपूर्ण प्रगति के लिए कटिबद्ध करे।

'टस्कगी में शुरू किये गए उद्योग रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने वाले थे। समाज की जरूरतों को पूरा करने वाले थे। समाज को स्थिरता मिलने के लिए ऐसे ही उद्योग धंधों की आवश्यकता थी। जो भी कार्य हम लोग स्वयं ही कर सकते थे उसके लिए हमने कभी दूसरों के आगे हाथ नहीं फैलाये। जो कुछ बन पड़ा, स्वयं ही किया।'

अप फ्रॉम स्लेवरी - बुकर टी वाशिंटन

टस्कगी के नीग्रो स्कूल गांववालों से मिलजुल कर रहना चाहता था, उनसे अलग-थलग नहीं। श्री वाशिंटन अपनी कथनी और करनी दोनों में गांववालों को विश्वास दिलाते कि स्कूल और गांव एक-दूसरे के सहयोग से रहे तो दोनों का ही भला होगा। टस्कगी नीग्रो स्कूल पूरे अनुशासन वाला स्कूलथा। कोई गलत बात हो ही नहीं सकती थी। श्री वाशिंटन की देख-रेख में कोई अनुचित बात संभव नहीं थी। धीरे-धीरे गांववालों के मन में भी स्कूल के लिए अपनापन जाग उठा था।

दक्षिण अमेरिका की बाकी गांवों की अपेक्षा टस्कगी की जो कुछ उन्नित हो रही थी उसका कारण वह यह नीग्रो स्कूल। इस स्कूल के विद्यार्थियों के कारण होने वाला व्यापार। 'श्रम' को प्रतिष्ठा देकर परिश्रम करने वाले टस्कगी नीग्रो स्कूल के विद्यार्थी।

शिक्षा पाने की अभिलाषा रखने वाला विद्यार्थी पैसों के अभाव में शिक्षा से वंचित न रह जाये इसलिए श्री वाशिगंटन ने रात्रिकालीन स्कूल शुरू किए दिन भर काम और रात में पढ़ाई। जो विद्यार्थी दिन में दस घंटे स्कूल के लिए काम करता उसे रात्रिकालीन स्कूल में निशुल्क शिक्षा मिलती थी।

जो मन लगाकर पढ़ना चाहता था वही इस परीक्षा में खरा उतरता। विद्यार्थियों को उनके श्रम के बदले कपड़ें, पुस्तकें, गद्दे आदि वस्तुएं मिलतीं। बचे हुए पैसे स्कूल के बैंक में जमा हो जाते। जब किसी विद्यार्थी के नाम जरूरी पैसे जमा हो जाते तो उसे उस दिन के लिए स्कूल भेजा जाता। ऐसी मेहनती लड़कों की तरफ श्री वाशिंटन खास ध्यान देते।

टस्कगी स्कूल की शिक्षा पद्धति बिल्कुल मौलिक थी। साफ-सफाई के बारे में जरा भी आनाकानी नहीं चलती। सब से पहले विद्यार्थियों को शारीरिक स्वच्छता सिखाई जाती। दांत कैसे साफ करें, नहाएं कैसे, कपड़े किस तरह धोएं, उनकी देखभाल इत्यादि कैसे करें इत्यादि ये सारी बातें पढ़ाई के साथ-साथ सिखाई जाती। मुंह अंधेरे 5 बजे पहली घंटी बजते ही विद्यार्थियों को उठना पड़ता। आखरी घंटी रात साढ़े नौ बजे होती। दिन भर में कुल सोलह घंटियां बजतीं और उनके अनुसार कामकाज होता। पहली घंटी पर उठकर अपना कमरा साफ करके नाश्ते के लिए मेस में हाजिर होना पड़ता। थाली में परोसी हुई हर चीज खानी पड़ती। हां शुरू-शुरू में स्कूल के रसोई घर में कुछ ज्यादा था ही नहीं, वह बात और है!

टस्कगी नीग्रो स्कूल के शुरू-शुरू के दिन ऐसे ही थे, आधे पेट रह कर भी मुसीबतों का सामना करने की लगन वाले। श्री वाशिगंटन पर अनगिनत जिम्मेदारियों का भार था। उसने भी उनके ऐसे स्कूल के विषय के विचार सुने थे, उसने ऐसे स्कूल का वास्तव में हो समना संभव ही माना था। श्री वाशिंगटन जानते थे कि यदि स्कूल के मामले में वे असफल रहें तो यह उनकी व्यक्तिगत असफलता न होकर पूरे नीग्रो समाज का दुर्भाग्य होता।

'जहां थे वहीं वापस' जाने की नौबत आ जाती। इस हार से बचने के लिए श्री वाशिंगटन को अपना खून-पसीना एक करना

पड़ा।

उन्होंने अपने विद्यार्थियों को सिर्फ किताबी शिक्षा न देकर ऐसी शिक्षा दी जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास हो। बाहरी दुनिया में भी सिर ऊंचा करके जीने का अधिकार मिले। विद्यार्थियों के मन में यह बात बस गयी कि उन्हें समाज में अपना स्थान बनाना है। बाहरी समाज में अपनी उपेक्षा और अवहेलना न हो वरन अपना स्तर बना रहे यह बात विद्यार्थियों ने शिक्षा के साथ-साथ ही सीखी। और स्कूलों की तरह अलग से यह बातें सिखाने वाले गोरे शिक्षक यहां नहीं थे। नीग्रो के लिए नीग्रो लोगों ने चलाया हुआ स्कूल था यह।

स्कूल मे काम के समय लड़का या लड़की ऐसा भेद नहीं किया जाता। श्री वाशिंटन ने अपने विद्यार्थियों को सिर्फ किताबी शिक्षा न देकर, वास्तव जीवन में अपने ज्ञान का उपयोग करने की आदत सिखायी थी। सारी पढ़ाई का लक्ष्य था विद्यार्थियों का मानसिक, नैतिक और शारीरिक विकास। शारीरिक श्रम को प्रतिष्ठा दिलाने में यदि कोई सफल हुआ तो वे थे श्री वाशिंगटन। विद्यार्थियों को अपने हाथों से या फिर यंत्रों के कम-से-कम उपयोग द्वारा वस्तुएं बनाना सिखाया गया था।

श्री वाशिंगटन इस बात के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहते कि टस्कगी नीग्रो स्कूल अपने समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा बने। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो, वे अपने ज्ञान का उपयोग अपने समाज के उत्थान के लिए करें। खुद की उन्नति के साथ-साथ समाज की उन्नति भी हो इसी महान लक्ष्य पर उन्होंने स्कूल की बुनियाद रखी थी। पर स्कूल में पढ़नेवाले लड़कों के मन में सेवा भाव जगाने में श्री वाशिंगटन निश्चित रूप से सफल रहे। 'हर व्यक्ति की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वह समाज के लिए काम करे' इस विचारधारा को अपने विद्यार्थियों के मन में जगाने का काम श्री वाशिंगटन ने किया। उनकी दिनरात की मेहनत का फल था कि उनके विद्यार्थी भी उनकी ही तरह समाज के लिए कुछ करने की इच्छा रखता। सपना देखता कि 'एक दिन मैं भी ऐसा ही स्कूल बनाऊंगा।'

अपने समाज के लिए पूरे पंद्रह सालों तक निरंतर परिश्रम करने वाले श्री वाशिंटन को 'हारवर्ड यूनिवर्सिटी' ने 'डाक्टरेट' की महत्वपूर्ण पदवी से सम्मानित किया और उनके आज तक के कार्य को पहचाना, उसका गौरव किया।

इन पंद्रह सालों में स्कूल के अहाते में चालीस इमारतें बनी थीं। ये सब इमारतें विद्यार्थियों ने बनायी थीं अपनी ही तैयार की हुई ईंटों से।

सन् 1894 में श्री वाशिंटन को अटलांटा कॉटन स्टेट एंड इंटरनेशनल एक्सपोजीशन के समारोह में भाषण के लिए आमंत्रित किया। किसी नीग्रो को, गोरे लोगों की सभा में बुलाया गया था। सारे राष्ट्र में चर्चा का विषय बनी यह बात। किसी भी समारोह में मंच पर गोरे नेताओं की बराबरी में एक काला शिक्षक बैठे और वह भी राष्ट्राध्यक्ष क्लीवलैंड के साथ अचरज सी बात थी।

श्री वाशिंगटन अपनी जिम्मेदारी समझते थे। पूरे देश में हुई प्रतिक्रिया का उन्हें अहसास था। खरी कसौटी की बेला थी। अपनी तरफ से पूरी तैयारियां करके ही वे अटलांटा गये।

सारे देश में उनके भाषण का प्रभाव दिखाई दिया। नीग्रो लोगों की स्थिति, उनकी समस्याएं सारे समाज के सामने मुखरित हुई। बंधु-प्रेम का आहवान किया गया। इसके बाद अनेक जगहों पर डा वाशिंटन के भाषण हुए। जिन्हें नीग्रो समाज के लिए सहानभूति थी, जो उनकी उत्कर्ष, उन्नित के लिए स्वयं ही कुछ करना चाहते थे ऐसे लोगों ने डा वाशिंगटन की तरफ मदद का हाथ बढ़ाया। अनेक स्थानों से मदद के रूप में निधि जमा होने लगी। डा वाशिंगटन ने अपने भाषणों द्वारा अपनी समस्याएं लोगों के सामने रखीं। टस्कगी स्कूल के कार्य-कलापों के बारे में उन्हें अवगत कराया। टस्कगी स्कूल के लिए आर्थिक मदद मिलने लगी। अमाघ वक्ता के रूप में डा वाशिंगटन का नाम हुआ। 'शिक्षा' को नया अर्थ प्रदान करने वाले और मनुष्य को 'सुजान' बनाने वाले 'शिक्षा महर्षि' के रूप मं उनका नाम हुआ।

लगातार 15 वर्ष परिश्रम करने वाले डा वाशिंगटन को एक बात में हार मानने की बारी आयी थी। बड़े हताश हो गये थे वे। कारण... ! यह कारण सिर्फ डा वाशिंगटन को ही दुख नहीं दे रहा था, अमेरिका के दक्षिण भाग का नाश करने वाला यह 'कारण' बहुत भयंकर था। बहुत ही विनाशकारी।

जैसे ही यूरोपीय राष्ट्रों ने गुलामों के व्यापार पर प्रतिबंध के कानून पर अमल करना शुरू किया, दलालों ने अमेरिका के दक्षिण भाग पर गुलामों का अवैध व्यापार शुरू किया। ये गुलाम थे अफ्रीका के अशिक्षित अनाड़ी नीग्रो। इन नीग्रो गुलामों के शारीरिक श्रमों पर, बढ़कर दक्षिण अमेरिका का 'कपास साम्राज्य' पल रहा था। गुलामों के खेतों में काम करने के कारण खर्चा 'नहीं के

बराबर' और कपास को मिलनेवाला ऊंचा भाव। ऐसे दोहरे फायदे के कारण दक्षिण के गोरे किसान मालदार हो गये थे। घर-घर में सोने के सिक्कों की गूंज थी। कपास-सम्राट दिन-ब-दिन अमीर होते जा रहे थे और नीग्रो बेचारे खत्म होते जा रहे थे। उनकी मेहनत से कपास साम्राज्य बढ़ रहा था। कपास को मिलने वाले ऊंचे भाव के कारण किसान तो जैसे अंधे हो गये थे। एक फसल हुई कि गुलामों द्वारा जंगल कटवाया जाता और उस जमीन पर भी कपास की पैदावार की जाती। हर मौसम में जंगल कटते और उस जमीन पर भी कपास लगायी जाती। जंगल कटाई के समय जड़ों को भी उखाड़कर जलाया जाता। कभी-कभी यह आग फैलती और अधिक वनस्पति स्वाहा ही जाती।

कपास सम्राटों की इस हवस का नतीजा अलाबाला राज्य को भुगतना पड़ा। पेड़ कट गये, जड़ें उखाड़कर नष्ट कर दी, तो जमीन का बुरी तरह से नुकसान हुआ। अलाबामा राज्य की जमीन ढलानों वाली थी। इसलिए बारिश के पानी ने और तेज हवाओं ने जमीन की ऊपरी उपजाऊ तह ही बहा दी। जमीन को पकड़कर रखने के लिए पेड़ बचे ही कहां थे। इन सब कारणों से पर्यावरण का बड़ा नुकसान हुआ। हिमपात के रूप में मिलने वाली सुखद नमी की जगह अब धुंआधार बरसने वाली बारिश होती थी, वह रही सही मिट्टी बटोर कर ले जाती थी। अलाबामा की उपजाऊ जमीन की सारी शक्ति नष्ट हो गयी।

पौधों के प्राकृतिक खाद्य समुद्र में बह गये। अब यह कमी पूरी करने के लिए कृत्रिम खाद, मंहगी पोटाश, नत्र और फॉस्फोरिक ऐसिड लाना पड़ा!

जमीन के ऐसे कटाव के साथ-साथ लगातार कपास की पैदावार के कारण जमीन की रही-सही शक्ति भी नष्ट हो रही थी। कपास की पैदावार पर कहीं कोई रोक भी नहीं लगा रहा था। सारी भूमि का नाश हो रहा था। पूरा अलाबामा उजड़ गया। लेकिन पैसों की चमक से आंखें चुंधिया गयी थी। सोच विचार कुछ नहीं, भविष्य की चिंता नहीं। विनाश की राह पर चल पड़े थे सब। आंखों पर डॉलर्स की पट्टी बांधें।

पिछले ढाई सौ सालों से नीग्रो गुलाम दक्षिणी राज्यों में अपना पसीना बहा रहे थे। लेकिन वह जमीन या उससे मिलने वाले धन से वंचित थे। स्वतंत्र नीग्रो को नये कानून के अनुसार, हर परिवार के लिए चालीस एकड़ जमीन और एक खच्चर मिलना चाहिए। ऐसा अगर होता तो इस समाज का जीवन थोड़ा तो सुधरता, किंतु ऐसा हुआ नहीं दो जून रोटी के लिए मोहताज होकर नीग्रो गुलाम अपने पुराने मालिकों की ही गुलामी करता था। मालिक के एक इशारे पर अपनी झोपड़ी की चौखट तक कपास ही बोता था। इस एक कपास के लालच के कारण दक्षिण के नीग्रो की हालत बद से बदतर हो गयी थी। सिर्फ कपास ही पैदा किया जाता था अत: अनाज की बेहद कमी हो जाती थी। अन्न का अभाव और उस पर जी-तोड़ मेहनत-मजदूरी। इस की वजह से नीग्रो की हालत इतनी बुरी हो गयी कि बस। कपास सम्राटों की लालच की आंच अब सिर्फ नीग्रो ही नहीं गोरे किसानों तक भी पहुंचने लगी थी।

कभी जो समृद्ध और वैभवशाली था ऐसा अलाबामा में अब बचा था सिर्फ उजड़ा हुआ दलित समाज और बेजान जमीन। जंगल कटाई, लगातार कपास की पैदाइश से विनाश का मार्ग स्वयं ही बन गया था और सारा अलाबामा तेजी से सर्वनाश की ओर बढ़ रहा था। अलाबामा को ही नहीं, सारी दक्षिण को बचाने वाले किसी 'तारणहार' की अब नितांत आवश्यकता थी।

मैं आ रहा हूं

सन् 1896 की बात है। डा बूकर टी वाशिंगटन अपने कार्यालय में निराश होकर बैठे थे। कितनी कोशिशों के बाद उन्होंने अपने भाई-बंधुओं को राजी किया था खेती के लिए, दूध देने वाले जानवर संभालने के लिए। छोटे-मोटे काम करके, थोड़े पैसे कमाना सिखाया था। अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए समझा-बुझाकर तैयार किया था। लेकिन अलाबामा की जमीन का ऐसा सर्वनाश हो गया था कि अब इस बंजर जमीन से कोई ढंग की उपज ही नहीं निकलती थी। जानवरों के लिए चारे तक की व्यवस्था नहीं हो सकती थी। किसी को पेटभर खाना ही नसीब नहीं होता। ऐसी स्थिति में बच्चे स्कूल में क्यों आते। चारों ओर निराशा का अंधकार था। बड़ी गंभीर समस्या थी।

इस समस्या को हल करने के लिए, सर्वनाश की तरफ तेजी से बढ़नेवाले अलाबामा को बचाने के लिए, अपने बांधवों को भुखमरी की खाई से निकालने के लिए किसी सामर्थ्यवान की आवश्यकता थी। आवश्यकता थी किसी ऐसे समर्थ व्यक्ति की जो इस समस्या का शास्त्रीय हल खोज सके। इस स्थिति में समाज को उबरने में डा वाशिंटन की मदद कर सके। समय रहते अगर

कोई उपाय योजना न हो सकी तो अलाबामा की जमीन, वहां के लोग, हर चीज विनाश की ओर बढ़ रही थी। हर तरफ निराशा ही निराशा थी, यह क्या कुछ कम था, उस उस साल बेवक्त की बारिश ने खेतों में तैयार कपास को बरबाद कर दिया था। संकट कभी अकेले नहीं आते।

सोचते-सोचते डा वाशिंटन थक गये। अचानक उन्हें याद आया। 'आयोवा' के भाषण के बाद एक श्रोता ने उनका अभिवादन करते हुए कहा था, 'और एक सुशिक्षित मुक्त मानव से मिलते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है।'

'अपनी तरफ से हम कोशिश कर रहे हैं, बस।'

'हर कोई तो अपनी तरह नहीं होता। हां, आप जैसा सिर्फ एक है, जार्ज वाशिंगटन कार्वर।'

'अरे, मैंने यह नाम कैसे नहीं सुना?'

'वह एक नीग्रो युवक है। आयोवा स्टेट कालेज में ऐग्रीकल्चर बॉटोनी पढ़ता है।

'एक नीग्रो कृषि विशेषज्ञ? आयोवा स्टेट कालेज में अध्यापक।'

'जी हां। और अब आपसे क्या कहूं? वह तो लकड़ी के भूसे में भी अनाज उपजा सकता है।'

डा वाशिंगटन अब उस नीग्रो युवा कृषि विशेषज्ञ के बारे में सोच रहे थे। उन्हें मन-ही-मन विश्वास हो चला था कि यह कार्वर ही कुछ-न-कुछ उपाय खोज निकालेगा। लेकिन उसे यहां कैसे बुलाया जाये? वह तो उच्च विद्याविभूषित प्रोफेसर है। उत्तरी अमेरिका के खुशहाली वाले विभाग में रहने वाला बहुत आदर-सम्मान पाते हुए, अच्छे खासे वेतन पर काम करने वाले। ऐसे व्यक्ति को अपनी संस्था में बुलाना, जहां सिर्फ मुसीबतें ही मुसीबतें हों। डा वाशिंगटन को कुछ उचित नहीं लग रहा था। वे बार-बार यही बात सोच रहे थे। किंतु अलाबामा की बुरी हालत सामने थी। इस जमीन से अब ईंटों के अलावा और कुछ भी पैदा नहीं हो सकता था। बड़े सोच विचार के बाद ही साहस करके उन्होंने आखिर, 'जार्ज कार्वर' को चिट्ठी लिख ही डाली। इस चिट्ठी में उन्होंने अलाबामा की सारी बातें विस्तार से लिखीं। टस्कगी का नीग्रो स्कूल, उसकी स्थापना, उनकी समस्याएं, बढ़ती हुई जरूरतें और साधनों की कमी। इन सबके बारे में लिखा और कहा:

'मैं आपको आर्थिक लाभ, उच्च पद या कीर्ति का प्रलोभन नहीं दिखा सकता। पहली दो बातें तो आपके पास हैं और तीसरी आप कहीं भी पा सकते हैं। इसमें संदेह नहीं। मैं तो आपसे यह बातें छोड़कर आने के लिए कह रहा हूं। उन सब के बदले में आपको अविरत श्रम और सेवाकार्य के लिए अनुरोध कर रहा हूं। मैं तो आपको सदियों से गरीबी में पिसने वाले, गुलामी की खायी में फंसे हुए दलितों को उबारकर उन्हें 'सचेत मानव' बनाने का कार्य सौंप रहा हूं।

चिट्ठी चार दिन बाद जार्ज तक पहुंची। उस पर की डाक मुहरों से उसे पता चला कि चिट्ठी बहुत दूर से आयी है, सुदूर दक्षिण से। बड़ी ही अधीरता से उसने चिट्ठी पढ़ ली। एक सांस में पढ़ ली। फिर प्रयोगशाला का सारा काम निपटाया और एम्स से बाहर, बस्ती से बाहर आने वाली अपनी प्रिय जगह पर जा पहुंचा। जेब से चिट्ठी निकालकर फिर एक बार पढ़ी, शांति से पढ़ीए पल-दो-पल सोचा। जेब से एक छोटी सी डायरी निकालकर उसका एक पन्ना अलग किया और उस पर लिखा।

'मैं आ रहा हूं।' बस! इतना ही! दिन नहीं, दिनांक नहीं, कोई प्रश्न नहीं, कोई संदेह नहीं। मन अजीब से एक आवेग से भर आया। साथ ही एक अनामिक मन:शांन्ति भी अनुभव हो रही थी। वहीं से सीधे पोस्ट आफिस गया। डाक लिफाफे पर डा वाशिंगटन का पता लिखा। वही छोटा सा पन्ना उसमें डाला। लिफाफा बंद करके डाक के डिब्बे में डाल दिया। शांत चित्त लौट आया, प्रयोगशाला के रोज के काम में व्यस्त हो गया।

मास्टर ऑफ साइंस की डिग्री मिली थी तब भी बहुत खुशी हुई थी। लेकिन उस खुशी में कहीं कुछ चुभ रहा था। आज जैसी खुशी पहले कभी नहीं मिली थी।

दक्षिण में उसके लाखों बंधु-बांधव भूखे कंगालों की जिंदगी जी रहे थे। ज्ञान का प्रकाश पाने के लिए तड़प रहे थे। जार्ज को उनका अपना ही था। उसे अपने ज्ञान से अपने बांधवों की उन्नित के लिए प्रयास करने थे। मारिया बुआ को दिया हुआ वचन पूरा करना था। अपनी आन निभानी थी।

ईश्वर द्वारा उनके कार्य की रूपरेखा निश्चित हुई थी अब उसे सर्वशक्तिमान के मार्गदर्शन में उस काम को पूरा करना था।

जार्ज को डा वाशिंगटन के महान कार्य की जानकारी तो थी ही। समाचार पत्रों में उनके अनेक भाषण पढ़े थे। जार्ज को ऐसा

लग रहा था कि उनके पास वांशिक समस्या का समाधान है। अब तो जार्ज भी उनके कार्य में सहभागी होने जा रहा था।

अगले कई हफ्तों तक जार्ज ने इस चिट्ठी के बारे में किसी को कुछ भी नहीं बताया। मन में पक्का निश्चय हो गया था। अचानक चले जाने से कॉलेज के काम में कोई बाधा न आये इसलिए जार्ज ने पहले सारे महत्वपूर्ण काम पूरे किए। उसके जाने के बाद अनुसंधान के कार्य में कोई रुकावट न आये इसलिए अपने सहायकों को सारे काम समझा दिये। पूरे काम का ढांचा बना दिय। जब ऐसा विश्वास हुआ की सारा काम सुचारू रूप से चलता रहेगा तब प्रो विल्सन से इस चिट्ठी के बारे में बातचीत करने के लिए मिलने गया। उनके सामने डा वाशिंगटन का पत्र रख दिया।

प्रो विल्सन ने पत्र पढ़ा। जार्ज ने इस पत्र का क्या उत्तर दिया होगा इस बात की उन्हें भलीभांति कल्पना थी। वे गंभीर होकर चुप बैठे रहे। जार्ज के कुछ कहने से पहले ही वह उसका निर्णय जान गये थे। उनकी गंभीर मुद्रा पर गौर करते हुए जार्ज ने कहा:

'मैंने लिख दिया।'

'हां! जार्ज यह तो होना ही था।' एकदम उदास स्वर में बोले प्रो विल्सन।

'आज नहीं तो कल यह बात होने ही वाली थी। हम अच्छी तरह जानते थे कि हम लोग अधिक दिनों तक तुम्हें यहां नहीं रख पायेंगे।'

'मेरे बाद, प्रयोगशाला और शोधकार्य के कामों में कोई रुकावट नहीं आयेगी। मैंने उन सब कामों का बंदोबस्त कर दिया है। मेरे सहायक भी अब बहुत कुशल हो गये हैं। मैं नहीं समझता मेरे जाने से यहां के काम में कोई अड़चन आयेगी।'

'हां, यह सब तो ठीक है। लेकिन तुम्हारी कमी कौन पूरी कर सकेगा।'

फिर वे दोनों संस्था के अध्यक्ष से मिलने गये। उन्होंने भी डा वाशिंगटन का पत्र पढ़ा। उन्हें भी उत्तर के बारे में अंदाजा हो गया। उन्होंने कहा, 'महान उद्देश्यों से मुंह मोड़ना कायरता है, मूढ़ता है। वे लोग तुम्हें मान-सम्मान छोड़कर आने की विनती कर रहे हैं लेकिन इसके बदले में वे तुम्हें चिरंतर शाश्वत मूल्यों की रक्षा करने के कार्यों में हाथ बंटाने का अवसर दे रहे हैं। अब पीछे नहीं हटना और कहीं रुकना भी नहीं।' अध्यक्ष महोदय ने जार्ज के हाथ अपने हाथों में लेकर भरे गले से कहा, 'जार्ज तुम्हें याद होगा इससे पहले भी एक कालेज में तुम्हें कृषि विभाग की नौकरी पर बुलाना चाहा था, उस समय प्रो विल्सन ने क्या कहा था? कहा था:

'हम जार्ज को ऐसे नहीं खोना चाहते। उसकी कमी पूरी कर सके ऐसा और कोई दूसरा हमारे पास नहीं। जार्ज सरीखे विद्यार्थी का मूल्य हम जानते हैं। ऐसा कहना उसके मुंह पर तारीफ करना है, लेकिन वह ऐसी तारीफ के योग्य है इसमें कोई संदेह नहीं।'

'किंतु, आज हम तुम्हें रोकर नहीं रख पायेंगे। तुम्हारी योग्यता, तुम्हारी क्षमता का हमें अहसास है। छोटी सी दुनिया में तुम्हें रोकर, जकड़कर रखने का पाप हम नहीं करेंगे। जाओ, तुम्हारी कर्मभूमि तुम्हें बुला रही है। ईश्वर तुम्हारे साथ है। ईश्वर तुम्हारे साथ है। शुभस्य शीघ्रम।

पूरे कालेज ने जार्ज को विदाई दी। इस विदाई समारोह में प्रो विल्सन ने विद्यार्थियों की ओर से एक अच्छा माइक्रोस्कोप जार्ज को भेंट दिया।

उत्तर देते समय जार्ज का मन भर आया। उसने कहा, 'आज मैं जो कुछ भी हूं इसी कालेज की वजह से। इसलिए आज की सुंदर भेंट के लिए में आप सब का शतश: आभारी हूं।

बुद्धिमान जार्ज के लिए मास्टर ऑफ साइंस के बाद पी एच डी करना कोई मुश्किल काम नहीं था। लेकिन डा वाशिंगटन की चिट्ठी मिलते ही वह अपने निजी विकास और उन्नित की बात छोड़कर अपने बांधवों की सेवा करने टस्कगी की तरफ चल पड़ा।

'टस्कगी नॉर्मल अॅड इंडस्ट्रियल स्कूल फॉर नीग्रोज' इस संस्था में 'डायरेक्टर एंड इंस्ट्रक्टर इन साइंटिफिक एग्रीकल्चर एंड डेयरी साइंस' इस पद पर वेतन था 125 डॉलर्स मासिक।

कर्मभूमि में

अक्तूबर माह की एक सुबह जार्ज कार्वर दक्षिण में अलाबामा राज्य की ओर जानेवाली रेलगाड़ी में बैठे। अनजान और अपरिचित भूमि की ओर जाने के लिए।

समृद्ध प्रदेश पीछे छूट गया था। अब तो जहां तक नजर आ सके वहां तक कपास के खेत दिखाई दे रहे थे। कहीं हरियाली नहीं, सिर्फ कपास के खेत, एक सफेद रंग। कपास साम्राज्य की शुरुआत हो गयी थी।

खेतों में कपास बीनने का काम चल रहा था। हर जगह काले आदमी यह काम करते हुए दिखाई दे रहे थे। प्रो कार्वर उदास हो उठे। उन्हें पता था कि अब जो दृश्य दिखाई दे रहा है, वहीं आगे भी दिखने वाला है और पूरब-पश्चिम, दक्षिण कहीं भी गये, 1000 मील तक गये तो भी यही एक दृश्य दिखायी देने वाला है।

टस्कगी गांव के करीब 'चेहा' स्टेशन पर वे रेलगाड़ी से उतरे। 8 अक्टूबर 1896। टस्कगी स्कूल के इस इलाके का सब्ज बाग होगा। थोड़ी तो हरियाली होगी, छोटा-मोटा बगीचा होगा। स्कूल की प्रयोगशाला में काम करते-करते यहां के किसानों की , अपने बांधवों की सेवा करूंगा।

टस्कगी स्कूल के विद्यार्थी अपने नये शिक्षक को लेने आये थे। प्रो कार्वर का सामान बग्घी पर चढ़ाकर सब स्कूल की तरफ चले।

बग्घी रुकी। स्कूल के अहाते में आकर रुकी, लेकिन प्रो कार्वर को कहीं कोई फर्क ही मालूम नहीं हुआ। वैसी ही उजाड़ बंजर जमीन जैसी रेल से आते समय देखी थी। स्टेशन से स्कूल तक देखी थी, उससे भी कुछ ज्यादा ही उजड़ा इलाका था। स्कूल के आसपास की जमीन तो और भी खराब थी। मटमैली बेजान पीली मिट्टी, कहीं कोई पेड़-पौधा नहीं, दूर ते नजर दौड़ाओ तब कहीं पर छुटपुट जंगली झाड़ी। स्कूल के पिछवाड़े गीदड़ मंडरा रहे थे। स्कूल के अहाते में मल-मूत्र निस्सारण की कोई ढंग की व्यवस्था भी नहीं की गयी थी।

प्रो कार्वर ने झुककर मुट्ठी भर मिट्टी उठायी, हाथ से रेती की तरह फिसल गयी। 'हूं! तो इस मिट्टी को खाद की जरूरत है।'

ऐसी उजड़ी बंजर जमीन, उसमें इतनी बड़ी-बड़ी दरारें कि पूरा घोड़ा अंदर धंस जाये। लाल, पीली, जामुनी रंग वाली रेतीली जमीन, बिल्कुल निकृष्ठ, मृतप्राय जमीन, कहीं पर घास तक नहीं। हरा रंग कहीं दिखता ही नहीं था।

प्रो कार्वर समझ गये कि यहां तो ज्ञान की, बुद्धि की खरी कसौटी लगनेवाली है। वे सोच रहे थे यदि मेरी जिंदगी सीधी, सरल, बिना अड़चनों के गुंजरने वाली होती, तो ईश्वर मुझे इस वंश में क्यों कर भेजता।'

'टस्कगी' कल तक इस नाम के उच्चारण से आश्वासन मिलता था लेकिन अब डूबते सूरज की साक्षी से उन्हें सामने दिखाई दे रही थी एक चुनौती सिर्फ एक चुनौती। उनकी परीक्षा की घड़ी थी। यहां मानव अब मुक्ति की ओर बढ़ने वाला था। सही अर्थों में मुक्त। वह भूख की खाई, अब मेरी कर्मभूमि!'

प्रो कार्वर से मिलने के लिए उत्सुक डा वाशिंगटन अपने कार्यालय में बैठे थे। मन में विचित्र भावनाओं का आंदोलन था, कहीं थोड़ा शंकित भाव भी। लेकिन प्रो कार्वर को देखकर सारे प्रश्न संदेह दूर हो गये। ऐसा ही था प्रो कार्वर का सीधा, सरल व्यक्तित्व।

उनकी पैनी नजर, चिकित्सक, निरीक्षण शक्ति और उस पर उनके पूछे हुए प्रश्न, इन सब से डा वाशिंगटन आश्वस्त हुए। उन्होंने सोचा था उससे भी अधिक गंभीर, गहरा और निर्मल है। टस्कगी का भविष्य अब सुरक्षित है। उन्हें साथी मिल रहा था। जिम्मेदारी का भार हल्का करनेवाला, साथ देनेवाला, चुनौती का सामना करनेवाला।

इस पहली भेंट में ही वे दोनों महान नीग्रो पुरुष परममित्र बन गये। मन के तार जुड़ गये और यह बंधन ऐसा अटूट कि डा वाशिंगटन की मृत्यु के बाद भी प्रो कार्वर ने इस बंधन को संजोये रखा। बड़े-बड़े सम्मान, धन-दौलत के आकर्षण उन्हें इस बंधन से नहीं छुड़ा पाये। पूरा जीवन उन्होंने इस बंधन को निभाने में सार्थक किया।

'कैसा है अपना स्कूल?' डा वाशिंगटन प्रो कार्वर से पूछ रहे थे।

'हां, बहुत कुछ करना है।' कार्वर ने कहा।

'जी हां! और 'अब' बहुत कुछ होगा ऐसा मुझे विश्वास है।' डा वाशिंगटन ने सूचित किया।

उनके 'अब' को समझते हुए प्रो कार्वर ने कहा, 'आपने तो बड़ा ही गौरवशाली कार्य किया है। इस कार्य में सहयोग देने का अवसर मुझे मिल रहा है, यह मेरा सम्मान है।'

'आपको यहां पर बहुत कुछ करना तो अभी बाकी है।'

'जी! मैं जानता हूं। यही करने के लिए ही तो मैं यहां आया हूं।' आश्वासन के स्वर में प्रो कार्वर ने उत्तर दिया।

'आपको इस कार्य में सफलता मिली तो सारी दक्षिण अमेरिका सर्वनाश से बच जायेगी। उसका भविष्य अब आप पर निर्भर है।'

'प्रयोगशाला कहां है?' कार्वर ने पूछा।

'प्रयोगशाला बनाने के लिए जगह की कमी नहीं, और फिर ईश्वर ने आपको तीक्ष्ण बुद्धि दे रखी है।' डा वाशिंगटन ने कहा।

'समझ रहा हूं। हमें अब प्रयोगशाला के बनाने से आरम्भ करना है। यही कहना है न आपका।' प्रो कार्वर की इस बात पर डा वाशिंगटन दिल खोलकर हंस पड़े। साथ हंसने वाला जो मिल गया था। साथी जो मिल गया था। मन की बात समझने वाला साथ निभानेवाला।

प्रयोगशाला नहीं थी, न ही था वनस्पति उद्यान! कहीं कोई बगीचा, हरियाली, पौधे, कुछ भी नहीं था, ऐसी जगह आए थे प्रो कार्वर! जमीन की, खेती की, वहां के जीवन स्तर की उन्नति के लिए उन्हें प्रयत्न करने थे। अपने कार्य की दिशा निश्चित करनी थी लेकिन जल्दी ही एक बात उनके ध्यान में आ गयी, टस्कगी स्कूल के विद्यार्थियों में कृषि विषय एकदम अप्रिय था। शायद खेती किसानी से दूर भागने के लिए ही ये छात्र टस्कगी आए थे। उन्हें तो वाणिज्य, कारीगरी या ऐसी ही कोई मान्यता प्राप्त प्रतिष्ठित कलाएं सीखना प्रिय था। 'खेती? वह तो कोई ऐरा-गैरा भी कर सकता था।' प्रो कार्वर समझ गये कि इन विद्यार्थियों के मन में कृषि विद्या के लिए यह जो अरुचि है, उसे दूर करना होगा। धरती माता के लिए यह अनास्था उपेक्षा दूर करना यही अपने कार्य की शुरुआत है। अध्यापन के पहले ही दिन उन्होंने अपने विद्यार्थियों से कहा:

'जो प्रकृति से प्यार करता है, उससे अपनापन रखता है, वही प्रकृति की बातें समझ सकता है। युवकों! सृष्टि को देखो, आंखें खोलकर देखो, उसकी सीखों पर ध्यान दो। ऐसा करने से हल पल, हर क्षण ज्ञानवद्धि होगी। जो प्रकृति से संपर्क रखता है, वही उसके रहस्यों को समझ सकता है। आपके कपड़े कितने अच्छे हैं या आपने बैंक में कितना पैसा जमा किया है इन बातों को सफलता का मापदंड मन बनायो। आप समाज की कितनी और कैसी सेवा कर सकते है, इस बात पर जीवन की सार्थकता निर्भर है।'

फिर पूरी क्लास पर अपनी प्रसन्न नजर दौड़ाते हुए उन्होंने कहा, 'चलो, आज हम लोग गांव जाएंगे। आज तक किसी ने नहीं किया होगा, ऐसा काम करेंगे। गांव में घूमकर, फेंकी हुई चीजें उठाकर लाना है। टूटे-फूटे बर्तन, चिमनी, दीये, डिब्बे, बोतल, जो कुछ मिले लाओ। हम लोग एक प्रयोगशाला बनायेंगे और उसके लिए उपकरण ऐसे जमा किए जाते हैं। फिर उन्होंने अपनी पेटी में से छोटे-छोटे उपकरण निकाले, सबको दिखलाये।

प्रोफेसर और छात्र एक अजीब काम के पीछे घूम रहे थे। सारा गांव घूमकर घर-घर से बेकार समझ कर फेंकी हुई या फेंकने के लिए सहेजी हुई चीजें बटोर रहे थे। शाम को जब सब लौटे तो जाने क्या-क्या जमा कर ले आए थे। प्रो कार्वर ने उस टूटे-फूटे सामान के भंडार के लिए भी अपने छात्रों को शाबासी दी और कहा, 'जो कुछ लाए हो उसमें से कुछ भी बेकार नहीं, कुछ सामान अभी उपयोग ने आयेगा, कुछ बाद में।'

आज भी आप टस्कगी के कार्वर म्यूजियम में जाकर देखेंगे, तो क्या पायेंगे? जिन बेकार वस्तुओं का उपयोग करके अलाबामा की प्रगति के कार्य का आरंभ किया गया था, उन वस्तुओं का संग्रह आज भी जतन से रखा हुआ है। मिट्टी के तेलवाला पुराना दिया, उसकी कांच पर एक छोटा सा गोला छोड़कर बाकी हिस्से पर कालिख लगा कर! चाय का कनफूटा कप खरक तो ईवार की खूंटी की मूसली! खाली टीनों पर लेबल लगाकर उनमें रासायनिक द्रव। टीन के पत्रों में कीलों से छोटे बड़े छेद बनाकर अलग-अलग आकार की छलनियां, उपयोग? मिट्टी छानने के लिए!

छात्र एक ऐसी प्रयोगशाला का निर्माण होते हुए देख रहे थे। उन्हें अपनी आंखो पर विश्वास नहीं होता था। बेकार समझी गयी चीजें यहां निर्माण कार्य में जुट गयी थीं। जो एक बार प्रोफेसर कार्वर का छात्र बना वह आगे जहां कहीं भी गया, रुका नहीं समाज सेवा के कार्य में, खेती किसानी के किसी भी कार्य में रुका नहीं, जो कुछ साधन उपलब्ध हुए, उन्हीं से काम चलाने में उन्हें कोई मुश्किल नहीं आयी। केवल मंहगे और आधुनिक साधनों से विकास कार्य होता हो, ऐसी बात नहीं। साधारण वस्तुओं से असाधारण सफलता कैसे प्राप्त हो यह बात देखो, जैसे भी हो, अपने भाईयों की थाली अन्न से भरे इस बात का महत्व समझो। उनके छात्र अपने शिक्षक का यह संदेश जीवन भर नहीं भूले।

प्रो कार्वर ने प्रयोग के लिए मिली हुई 20 एकड़ जमीन की जुताई शुरू की। जमीन को जोतने के लिए जब उन्होंने स्वयं हल जोता तो यह अपूर्व अजूबा देखने के लिए आसपास के किसान और गांववाले जमा हुए। क्योंकि उन लोगों ने आज तक सिर्फ कुदाली ही चलायी है। घोड़े जुता हुआ हल हो और चलानेवाला प्रोफेसर हो तो दोनों ही उनके लिए अजूबा थे। 'हमारी उमर बीत गयी जमीन जोतने में और ये क्या 'नया' सिखायेंगे हमें। ऐसा कहकर हंसी उड़ानेवाले तमाशाई भी थे। लेकिन प्रो कार्वर पूरी तरह शांत चित्त रहकर, हंसी खुशी सबसे साथ गपशप करते हुए अपना काम कर रहे थे। उन्होंने अच्छी तरह जमीन तैयार की, छात्रों को समझाया।

'जमीन में हल चलाते समय यदि मिट्टी के ढेले हल को चिपके रहे तो समझो कि जमीन ज्यादा गीली है। ऐसी मिट्टी जमी रहती है और जमी हुई मिट्टी में हवा जड़ों तक नहीं पहुंच सकती। इसलिए बुआई से पहले जमीन को भुरभुरी बनाने के लिए बहुत अच्छी तरह जोतनी चाहिए।'

जमीन जोतने के बाद उन्होंने सारा जमा किया हुआ कचरा, गोबर, निकास वाली कीचड़, सूखे पत्तों का कचरा सब खेतों में बिछा दिया। फिर एक बार जमीन अच्छी तरह जोती गयी। धीरे-धीरे तमाशाई भी ध्यान से देखने लगे। हंसी उड़ाने वाले भी देखने लगे। खूब गहराई तक जुताई हुई जमीन में प्रोफेसर ने अब जुताई शुरू करी। परंतु बीज देखकर सबको बड़ी निराशा हुई। इतनी मेहनत के बाद बुआई हो रही थी मटर जैसे दानों की। कपास नहीं।

प्रो कार्वर अपने विद्यार्थियों को बता रहे थे, दलहन वर्ग के अनाज की बुआई क्यों हो गयी, यह समझा रहे थे। बहुत सी वनस्पतियां जमीन की नाइट्रोजन सोख लेती हैं। कपास बहुत बड़े पैमाने पर जमीन की नाइट्रोजन लेती है। किन्तु दलहन वर्ग में हवा में से नाइट्रोजन खींचने की क्षमता रहती है और वे हवा से खिंची हुई नाइट्रोजन जमीन को देती है। अतः जमीन की नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती है। इसका फायदा इस फसल के बाद ली जाने वाली फसलों को मिलता है। मूंगफली की जड़ों से तो नाइट्रोजन के अतिरिक्त फॉस्फेट और पोटॉश भी जमीन को मिलते हैं, जिनके कारण बाद में उगाई जाने फसल को लाभ मिलता है।

असली मजा तो कटाई के समय आया। इतनी मेहनत के बाद भी फसल कोई खास अच्छी नहीं आयी थी। एकदम मामूली। मरियल पौधों पा मुश्किल से दो . . . चार फलियां और वे भी दो-एक दानेवाली।

विद्यार्थीगण आपस में चुहल कर रहे थे, 'जानवरों के लिए अच्छी है।'

लेकिन प्राध्यापक महाशह? वे बड़े उत्साहित थे, उन्होंने अपने विद्यार्थियों से कहा, 'चलो, अब मैं इन्हें पकाकर दिखाता हूं।' विद्यार्थी हैरान! लेकिन उस शाम जब वे लोग खाना खाने बैठे तो थालियों में उसी मटर की बनी चीजें परोसी गयीं थीं। एकदम स्वादिष्ट! प्रो कार्वर देख-देखकर खुश हो रहे थे।

गांव में भी इस बात की चर्चा होने लगी। प्रो कार्वर ने मटर के बाद शकरकंद लगायी। इस बार किसान प्रेक्षक चुपचाप देख रहे थे। उसी जमीन में एक एकड़ से 80 बुशल की फसल निकाली तो सारे गांववाले आश्चर्यचकित हो गये! ऐसी फसल? प्रो कार्वर के सामर्थ्य की झलक अब मिल रही थी।

आज तक स्कूल की 20 एकड़ जमीन से मिलता ही क्या था? 120 बुशेल शकरकंद, 5 छोटी गठान कपास ओर साढ़े सोलह डॉलर का घाटा!

आदर्श शिक्षक के प्रमुख गुण, पहला अपने विषय के बारे में विस्तृत जानकारी और दूसरा गुण, वह जानकारी अपने विद्यार्थियों तक पहुंचाने की मौलिक सहजता। प्रो कार्वर के विद्यार्थियों को उनके इन गुणों का पूरा-पूरा अनुभव मिलता था। प्रो कार्वर के एक सहायक जो कि कॉर्नेल कॉलेज के विद्यार्थी थे, कहा करते, 'डिग्री हमने कार्नेल कालेज से पायी किन्तु असली शिक्षा दीक्षा

प्रो कार्वर के पास पूरी हुई।'

टस्कगी में उन्होंने अपना काम 8 अक्टूबर 1896 को शुरू किया था। तब वहां कृषि विभाग में सिर्फ 13 विद्यार्थियों के नाम दर्ज थे। मई 1897 में जब वार्षिक छुट्टियां शुरू हुईं तक कृषि विभाग में 78 विद्यार्थी थे और उनमें तीन लड़कियां थीं।

इसी संस्था से कृषि विषय की स्नातक पदवी लेने वाले टी एम कैम्पबेल ने अपनी पुस्तक में लिखा:

'आसपास के वातावरण के कारण और अनेकों वर्षों से रुढ़ियों, बंधनों के कारण मेरी ऐसी धारणा हो गयी थी कि नीग्रो को खेती के अलावा और कोई काम करने की मनाही है। ये सब काम गोरों के लिए हैं। लेकिन जब से मैं टस्कगी संस्था में आया और यहां के नीग्रो लड़कों की बनायी तरह-तरह की वस्तुएं - ईंटें, बर्तन, चप्पल, गद्दे, ठेले, झाड़ू, कपड़े और अपने हाथों से बनाए भव्य भवन देखे तो मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया। हम नीग्रो लड़के कोई भी काम कर सकते हैं, हुनर सीख सकते हैं, इस सच्चाई को देखकर मुझे अपने पर विश्वास होने लगा।'

यही टी एम कैम्पबेल अमेरिका के कृषि विभाग के पहले नीग्रो फील्ड एजंट बने। प्रो कार्वर के पास पढ़कर निकले हुए छात्रों ने बाहरी दुनिया में अपनी योग्यता सिद्ध कर दिखायी थी। कार्वर हमेशा अपने विद्यार्थियों के गुणों का बखान करते। उनका कहना था, 'आप किसी को कुछ 'नया' तो नहीं सिखा सकते, बस उसके पास जो कुछ मौजूद है उसी का विकास कर सकते हैं।' अपने विद्यार्थियों के मौजूद अच्छेपन को ढूंढकर उसका विकास करने का काम प्रो कार्वर बड़ी आत्मीयता से कर रहे थे।

डा वाशिंगटन को अपने इस गुणवान सहयोगी पर जो अभिमान था वह कितना सही था इसका अनुभव उन्हें जल्दी ही मिला। प्रो कार्वर की सूचनानुसार उन्होंने अटलांटा के एक खाद कारखाने के कुछ बोरियां फॉस्फेट खाद मदद के तौर पर मांगे। उसी कारखाने वालों ने खाद नहीं एक पत्र भेजा।

'आपके कार्य में हमें आस्था है इसलिए हम आपको यह पत्र लिख रहे हैं। दक्षिण प्रदेश की जमीन पर खाद का सही उपयोग हो सके, शास्त्रीय अनुसंधान कर सके, ऐसा सिर्फ एक ही कृष्णवर्णी कृषि विशेषज्ञ है, लेकिन वह तो आयोवा स्टेट में है, उसका नाम है 'जार्ज कार्वर'।

डा वाशिंगटन ने लौटती डाक से उत्तर भेजा, वही कृषि विशेषज्ञ हमारी संस्था में कार्यरत है। उन्हीं के मार्गदर्शन में यहां अनुसंधान कार्य चल रहा है। इसलिए हमें तीन सालों तक के लिए लगने वाली खाद की आवश्यकता है।'

दूसरे ही हफ्ते टस्कगी में खाद की बोरियां आ पहुंची।

किन्तु इसके बाद प्रो कार्वर को कभी कृत्रिम रासायनिक खादों की मदद नहीं लेनी पड़ी।

यह सच है कि जमीन की ताकत बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों की आवश्यकता होती है। किन्तु ऐसी खाद तो सिर्फ टस्कगी स्कूल इस्तेमाल कर सकता था, गरीब किसान तो ऐसे मंहगी खाद नहीं खरीद सकता। जो कुछ साधन सहज उपलब्ध हो उनका उपयोग करना अधिक अच्छा होता। अत: प्रो कार्वर ने स्कूल के ही अहाते में, खासकर रसोईघर के पीछे कम्पोस्ट खाद बनाने के लिए गहरे गड्ढे खुदवाये। शास्त्र शुद्ध पद्धति अपनाकर, सेंद्रीय खाद कैसे तैयार किया जाता है यह सिखाया। रसोईघर की या फेंकी चीजें, हरी सब्जी के डंठल, फलों के छिलके, जूठन सब अब गड्ढों में जाने लगे।

स्कूलवालों का अनुकरण करके टस्कगी के कुछ किसानों ने भी कम्पोस्ट खाद बनाकर उपयोग में लाना शुरू किया। उससे मिलनेवाला लाभ देखकर और किसानों ने भी यही राह अपनायी। अलाबामा राज्य में कम्पोस्ट खाद का उपयोग होने लगा। सारे अलाबामा राज्य की खेती पनपने लगी।

अपने उस प्रयोग को याद करते हुए प्रो कार्वर कहते, 'जब मैं टस्कगी में आया था तब हर एक सक यही बात सुंनता था कि अलाबामा की सबसे बेकार और बेजान जमीन अगर कहीं है तो यहां की है। मेरे हिस्से तो यही जमीन आयी थी। अब दो ही बातें संभव थीं या तो उस जमीन को लेकर रोना चाहिए था या फिर उसे सुधारने का प्रयास करना था। मैंने दूसरी बात चुनी।'

प्रो कार्वर ने शकरकंद के बाद कपास बोयी। जब फसल तैयार हुई तक उसे देखने के लिए सारा गांव उमड़ पड़ा। कपास की ऐसी फसल आज तक किसी ने नहीं देखी थी। एक एकड़ से 500 पौंड के गट्ठे। क्या काले, क्या गोरे सभी ने प्रो कार्वर को सराहा। आज से पहले उन्होंने ऐसी फसल न देखी थी न सुनी थी।

प्रो कार्वर ने अपने विद्यार्थियों को और किसानों को भी, फसलें अदल-बदल कर उगाने के कारण समझाए।

फसल बदल कर लगाने की योजना से जमीन को थोड़ा आराम मिलता है। जमीन के लिए यह आराम अत्यावश्यक होता है।

आराम मिलने से जमीन तरोताजा हो जाती है और उसकी उर्वरशक्ति बढ़ जाती है। इसका फायदा बाद की फसल को मिलता है।

अपनी सारी उमर कपास की ही खेती करने वाले किसानों से कितना अधिक उत्पादन करके दिखलाया था एक स्कूल मास्टर ने। ऐसे स्कूल मास्टर ने जिसने आज तक कभी कपास का खेत देखा भी नहीं था और टस्कगीवालों को यही बात बड़ी अनोखी लग रही थी। इस कपास की फसल के बाद लगातार तीन सालों तक अपने विद्यार्थियों को और गांववालों को यह बात समझा दी कि वनस्पतियों को कुछ विशेष चीजों की आवश्यकता होती है, जमीन भी अपनी तरफ से कुछ चीजें ही दे सकती है। ऐसी परिस्थिति में किसान यदि फसल की बुआई के समय इन बातों को ध्यान में रखे, जमीन की क्षमता, फसल की जरूरतें, इन दोनों बातों का समन्वय साथ सके तो जमीन और फसल दोनों एक-दूसरे को अधिक लाभदायी हो सकते हैं। अच्छे किसान को चाहिए कि वह बुआई के समय यह सभी बातें सोचें।

अब आसपास के किसान अपनी समस्याओं के समाधान के लिए प्रो कार्वर की मदद लेने आते थे। हर एक से सलाह मशविरा करके व्यक्तिगत रूप से बताना तो बड़ी अच्छी बात थी। लेकिन अगर वही बात उसी समय अधिक लोगों को समझायी जाये तो सहूलियत हो, ऐसा सोचकर प्रो कार्वर ने एक नयी प्रथा की शुरुआत की।

अब मैकॉन काऊंटी के किसान हर महीने के तीसरे गुरुवार को स्कूल में इकट्ठे होते। शुरू-शुरू में साठ-सत्तर किसान आया करते, लेकिन जैसे-जैसे इस सलाह के फायदे फसल की पैदावार पर दिखाई देने लगे, किसानों की संख्या बढ़ने लगी। इसी में से आगे चलकर किसान संगठन का निर्माण हुआा। प्रो कार्वर इस किसान संगठन की सभा का संचालन करते। सरल और सहज भाषा में अपनी बात समझाते। छोटे-छोटे आसान प्रयोगों द्वारा कृषि के विषय में शास्त्रीय जानकारी करवाते। जमीन की शक्ति का नाश रोककर उसकी उर्वरा शक्ति बढ़ाने के उपाय बतलाते। इस जानकारी को पत्रिका में छापकर किसानों में वितरित करवाते। कपास बोने से पहले जमीन को जलाकर सेंकने का जो तरीका है उससे जमीन का बेहद नुकसान होता है। इस नुकसान से बचने के लिए जमीन जलाने का तरीका नहीं अपनाना चाहिए। बल्कि उस की जगह बुआई से पहले जमीन की खूब गहरे तक जुताई करनी चाहिए। जिससे जमीन के अंदर के हयूमस जलेंगे नहीं और उपयोग खाद जैसा होगा।

किसानों को अब प्रो कार्वर की शास्त्रीय पद्धति की खेती से होनेवाला लाभ दिखाई दे रहा था। जो लोग अब तक संगठन के सदस्य नहीं बने थे वे भी अब किसान संगठन के सदस्य बनने लगे। संगठन की सदस्य संख्या बढ़ने लगी। कृषि उत्पादन भी बढ़ने रहा था। किसानों का उत्साह बढ़ रहा था।

प्रो कार्वर ने अब इस राह पर एक और कदम आगे बढ़ाया। कृषि क्षेत्र की प्रगति का समाज को ज्ञान हो इसलिए गांव-गांव जाकर कृषि (उत्पादनों) विषयक प्रदर्शनियां लगवायीं।

क्या होता था इन प्रदर्शनियों में? कपास बिनाई के बाद जो डंठल और ठूंठ बचते हैं, उनके रेशों से बनया हुआ कागज, रस्सियां, कंबल आदि। ओकरा (भिंडी) जैसी बेकार समझी गयी वनस्पतियों के रेशों से बने रग्ज और कंबल, दक्षिण के किसानों का भ्रम था कि टमाटर एक विषैला फल है। इस भ्रम को दूर करने के लिए टमाटर से बनी अलग-अलग चीजों का प्रदर्शन और फिर वह विषैला नहीं है, इस बात के प्रमाण के लिए उसे खाकर दिखाने का प्रदर्शन। युक्का और मूंगफली के छिलकों से बनाया हुआ चिकना कागज जो कपड़े जैसा दिखता था। अलाबामा में पायी जानेवाली चीनी मिट्टी से बने बर्तन। इस तरह बेकार समझी हुई चीजों से अच्छी-अच्छी चीजें बनाकर उनका प्रदर्शन।

शुरू-शुरू में तो प्रदर्शनियों का सारा सामान एक खटारे पर रखा जा सकता था। लेकिन जैसे-जैसे कृषि उत्पादन में तरक्की होती गयी, प्रदर्शनियों का विस्तार काफी बड़ा होता गया। सन् 1903 में प्रो कार्वर ने मोंटगोमेरी में प्रदर्शनी लगायी। इस प्रदर्शनी में रखे विविध सामान देखकर, कृषि क्षेत्र की क्रांतिकारी प्रगति देखकर किसानों के मन में आशाएं जाग उठीं। अब दृष्टिपथ में निश्चित भविष्य था।

टस्कगी स्कूल में हर साल फरवरी महीने में 'किसान संगठन' की वार्षिक सभा होती। टस्कगी में मेला लग जाता। स्कूल के अहाते में घूमने-फिरने में, डा वाशिंगटन, प्रो कार्वर से बातचीत करने में उन गरीब नीग्रो किसानों को कितना आनंद मिलता। इस वार्षिक सम्मेलन के बाद सारे बखेड़े को निबटाने में स्कूल वालों को पूरा हफ्ता भर काम करना पड़ता था लेकिन किसी को इस काम से शिकायत नहीं रहती। डा वाशिंगटन और प्रो कार्वर जी-तोड़ मेहनत करके जिस भविष्य की ओर समाज को ले जा रहे थे उस बात के साक्षी थे वे लोग!

अपने मृदु स्वभाव से, विनयपूर्ण व्यवहार से और अनूठे कार्यों से प्रो कार्वर ने गांववालों के हृदय में स्थान पा लिया था। आदर और विश्वास का स्थान। पेड़-पौधों की बीमारियां, जमीन के, खेत के रोग पहचानने वाले इस प्राध्यापक को जीते-जागते इंसान की बीमारियों का भी ज्ञान है ही, ऐसा मानकर गांववाले अपनी हर शिकायत उनके पास लेकर आते। प्रो कार्वर के लिए भी अब ये शिकायतें 'नयी' नहीं रह गयीं थीं। दक्षिण के निवासियों के खाने-पीने की चीजों में जीवन सत्वों का सर्वथा अभाव था। प्रो कार्वर इस बात को जान गये थे। इसलिये वे गांववालों की बीमारियों का इलाज कर सकते थे। विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों का अर्क और रस निकालकर उन्हें दवा के रूप में प्रयुक्त करते और फिर उन्होंने यह जड़ी-बूटी का बटुआ छिपा कर नहीं रखा। गांववालों को विभिन्न वनस्पतियों का आहार की दृष्टि से क्या महत्व है, वे कितनी पौष्टिक हैं, यह बात समझा दी। इन वनस्पतियों का अर्क निकालने का तरीका सिखलाया। सब की बीमारियों का चाहें वह इंसान की हो या वनस्पति की, इलाज करनेवाले प्रो कार्वर को गांववाले लाड़ से डाक्टर कहने लगे। शिक्षा संस्था की दी हुई डाक्टरेट से कितने ही पहले गांववालों ने उन्हें डॉक्टरी दे रखी थी।

इन डॉक्टर साहब की खासियत यह थी कि उनका खेती के बारे में या फिर स्वास्थ्य के बारे में दिया हुआ सलाह-मशविरा एकदम मुफ्त होता था। सिर्फ यही नहीं, कभी-कभी तो डॉक्टर साहब कोस-दो-कोस किसी गरीब किसान के खेत में खाद डलवाने की व्यवस्था करवाते। उनकी इस 'विजिट' के समय वे आसपास के किसानों को, उनके बाल-बच्चों का वनस्पति, प्राणी, मिट्टी, सूर्य हवा और पानी का परस्पर संबंध समझाते। प्रकृति के चक्र के बारे में अवगत कराते। विषैली वनस्पतियों की पहचान बतलाते। उन्हें पहचान कर नष्ट कैसे करना चाहिए यह बात समझाते।

सारे गांव वालों का ऐसा विश्वास था कि इस पृथ्वी तल पर ऐसी कोई वनस्पति है ही नहीं जिसे डॉक्टर कार्वर न जानते हों। इसलिए गांव वालों को एक आदत पड़ गयी थी कि कहीं कोई नयी वनस्पति दिखी नहीं कि उसे वे डॉक्टर कार्वर के पास ले आते। फिर डॉक्टर साहब उसकी उत्पत्ति, उससे लाभ-हानि, हर बात विस्तार से बताते। इस आदत के कारण उनके ज्ञान में तो वृद्धि होती ही, साथ में एक लाभ यह भी होता कि समय रहते ही विषैली वनस्पतियां नष्ट हो जातीं। किसी वनस्पति पर यदि कोई विशिष्ट रोग या इल्ली नजर आती तो डॉक्टर सावधानी का आदेश देते। उस रोग को हटाने का उपाय करते। डॉक्टर साहब का कहना था 'माइकौलोजिस्ट को सिर्फ रोगों की पहचान होने से काम नहीं बनता, उसे तो पचास वर्षों बाद होने वाले रोगों का इलाज करने की दूर दृष्टि होनी चाहिए।'

टस्कगी गांव वाले अब प्रो कार्वर के वनस्पति जगत के लगाव से भली भांति परिचित थे। राह चलते कभी कोई वनस्पति या फिर कभी कोई पत्थर उठाकर उसका निरीक्षण करने वाले कार्वर को सारा गांव जानता था और फिर उस वनस्पति के बारे में कितनी ही जानकारी देते। टस्कगी गांव में आते-जाते राह में मिलने वाले गोरे लोग भी अब डा कार्वर से पेड़-पौधों, फूल-पत्तों के बारे में बातचीत करते। उन्हें अपने बगीचे दिखाने के लिए ले जाते। अपनी समस्यायें उनके सामने रखते। प्रो कार्वर तुरंत, वहीं खड़े-खड़े उनके सारे प्रश्नों का हल बताते। दुबारा कहीं मिलते तो याद से पूछताछ करते। ऐसे समय वर्णवंश के सारे भेद मिट जाते। फूलों के दीवानों की उनसे कब दोस्ती हो जाती, पता तक नहीं चलता।

जब से प्रो कार्वर अलाबामा में आये थे, टस्कगी स्कूल में कार्य करने लगे थे, तब से ही हर वक्त किसी-न-किसी समस्या का समाधान करने में ही व्यस्त रहे थे। डा वाशिंगटन द्वारा किसी समस्या का उल्लेख करने भर की देर, डा कार्वर उसके हल में जुट जाते। फिर उसे पूरा करके ही चैन लेते।

टस्कगी स्कूल का अहाता एकदम रूखा-सूखा था, कहीं पर हरियाली का नामोंनिशा नहीं। इसी कारण से डा वाशिंगटन दुखी रहते। जब स्कूल में कोई कार्यक्रम होता तो छात्रगण काम चलाने के लिए दो-चार गमले सजा देते, अन्यथा स्कूल में कोई बाग-बगीचा नहीं था। डा वाशिंगटन ने अपने मन की बात कही। बस! अब स्कूल का अहाता 'हरियाला' कैसे हो इस बात पर विचार शुरू!

डा कार्वर ने पगडंडी की जगह छोड़कर बाकी अहाते में बरमुडा जाति की घास लगाई। जरा कहीं हरी घास उग आयी कि विद्यार्थियों और शिक्षकों के पैरों तले रौंदी गयी। प्रो कार्वर ने दुबारा प्रयास किया लेकिन नतीजा वही था। नोटिस बोर्ड लगाकर देखे लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। घास नष्ट हो जाती और फिर से 'जैसे थे'। अब प्रो कार्वर ने अपनी योजना पर पुनः विचार किया, नये सिरे से सोचा। कुछ ही दिनों में नयी योजना का परिणाम सामने आया। स्कूल का अहाता हरा-भरा दिखने लगा। डा वाशिंगटन की बरसों की साध पूरी हुई। उन्होंने प्रो कार्वर से योजना की सफलता का रहस्य पूछा। प्रो कार्वर ने कहा, 'मैंने सोचा,

कुछ भी करो, कितना ही क्यों न समझाओ, लोग बाग अपनी ही राह चलते रहते हैं, कोई भी अपना 'रास्ता' बदलने के लिए तैयार नहीं होता। इसलिए मैंने कुछ दिनों तक उनकी आने-जाने की आदतों पर ध्यान दिया, उनके रास्तों के शार्ट-कट सब का निरीक्षण किया, फिर अपनी योजना में थोड़ा सा परिवर्तन किया और रास्ते को ही उनके पैरों तले लाकर रख दिया। बस! अब तो घास अच्छी पनप रही है, नहीं?' डा वाशिंगटन को प्रो कार्वर की चतुर बुद्धि, उनकी सर्वसमावेशक दृष्टि का ज्ञान था। अत: वे हर मामले में उनकी राय लेते। प्रो कार्वर भी हर काम उतनी ही लगन और जिम्मेदारी से करते थे। सिर्फ कृषि विभाग ही नहीं अन्य विभागों में भी प्रो कार्वर की देखरेख के कारण मनमानी नहीं होती, बल्कि किफायत से काम होता। इससे बचत ही होती।

नीग्रो लोगों में भी उत्तर वाला और दक्षिण वाला ऐसा भेद था। दक्षिण के नीग्रो, प्रो कार्वर को पराया समझते। उत्तर वालों के आचरण, विचार पद्धति, उच्चारण दक्षिण वालों को 'उच्च वर्गीय' लगते। डा कार्वर को वे लोग यैंकी शास्त्रज्ञ कहते। प्रो कार्वर की पहली जिंदगी उत्तर में गुजरी थी। इसलिए उनके रहन-सहन में बातचीत में उत्तर की संस्कृति साफ-साफ झलकती थी। अत: दक्षिण के नीग्रो समाज से वे अलग पड़ जाते। डा वाशिंगटन का बड़ा भाई जॉन टस्कगी स्कूल का कर्मचारी था। शुरू-शुरू में जॉन और उसके साथी कर्मचारी प्रो कार्वर का हर बात में विरोध करते। कारण सिर्फ यही कि प्रो कार्वर उत्तर के रहने वाले हैं। डेयरी विभाग और कृषि विभाग के लिए अलग से शास्त्रज्ञ और वह भी उत्तर वाला हो ही क्यों? इसी बात पर प्रो कार्वर का विरोध! प्रो कार्वर को रहने के लिए दिया हुआ क्वार्टर भी एक दम छोटा सा था। इसलिए बहुत से संदर्भ ग्रंथ और बहुत सा सामान भी अभी पिटारों में बंद पड़ा था। कभी-कभी तो ऐसा भी हो जाता कि कोई किसान या कोई ग्वाला अपनी समस्या हल करवाने आता और उसके लिए किसी संदर्भ ग्रंथ की आवश्यकता होती जो किसी पिटारे में बंद पड़ा होता। इन कर्मचारियों की हेकड़ी सिर्फ छोटे निवास स्थान की अलाटमेंट तक ही सीमित नहीं थी, वे लोग रोजमर्रा के कामकाज में भी दखलंदाजी करते। प्रो कार्वर को किसी बात की आवश्यकता होती, तो उसे कार्यालीन लाल-झंडी अवश्य दिखाई जाती। प्रो कार्वर इन बातों पर ध्यान ही नहीं देते। कर्मचारी को यह बात भी अच्छी नहीं लगती। अंत में जब इस व्यवहार के कारण कामकाज में बड़ी असुविधा होने लगी तब प्रो कार्वर ने डा वाशिंगटन को अपनी सब आवश्यकताओं के और कामकाज में आने वाली मुसीबतों के संबंध में एक लिखित निवेदन दिया।

डा वाशिंगटन ही एक ऐसे व्यक्ति थे जो प्रो कार्वर का मूल्य जानते थे। उन्होंने उनकी सारी मांगें मंजूर कर लीं। प्रो कार्वर को बड़ा निवास स्थान दिया गया और व्यवस्थापकीय कर्मचारियों को भी 'समझाया' गया।

प्रो कार्वर की सवेरे चार बजे ही उठकर घूमने जाने की आदत बन गयी थी। अपनी इस प्रभात फेरी के समय प्रो कार्वर अलाबामा की बची-खुची वनस्पतियों का अध्ययन करते। इसी अध्ययन में ही उन्हें कितनी ही अनमोल वनस्पतियों का पता चला। इनमें से कुछ जाति के पेड़ों से बड़ी मजबूत और टिकाऊ लकड़ी मिल सकती थी। प्रो कार्वर ने वहां के निवासियों को इन पेड़ों के उपयोगों से अवगत कराया। वनस्पतियों के साथ-साथ मिट्टी के बारे में भी अनुसंधान जारी था। उन्होंने मिट्टी के अलग-अलग नमूने इकट्ठे किये थे और उनकी काफी जांच-पड़ताल की थी किंतु अलाबामा की मिट्टी अभी तक वैसी ही पहेली बनी हुई थी।

एक दिन जब वे हमेशा की तरह घूमकर लौट रहे थे तब अपने ही ख्यालों में डूबे होने के कारण उन्हें रास्ते का कीचड़ भरा गड्ढा दिखाई नहीं दिया, पैर फिसल गया और सारे कपड़े कीचड़ से सन गये। अपने रूमाल से उन्होंने कपड़ों पर से कीचड़ के छींटे साफ करने की कोशिश की। लेकिन यह क्या? दाग थे कि निकलते ही नहीं! जरा और जोरों से पोछा, कीचड़ तो निकल गयी लेकिन दाग वैसे ही बने रहे। देखा तो रूमाल ही रंग गया था, सुंदर नीले रंग में। रूमाल धोकर देखा, 'रंग वैसा ही बना रहा। फिर रूमाल को ध्यान से देखा, 'ओह! तो यह बात है?'

धन्यवाद! प्रकृति देवता, धन्यवाद! आज तुमने मेरी पहेली बुझा दी!' सृष्टि देवता ने मिट्टी के रहस्य की गुत्थी सुलझा दी थी।

प्रो कार्वर तुरंत प्रयोगशाला में गये। मिट्टी के दाग कपड़ों पर वैसे ही सज रहे थे। वे प्रयोगशाला में मिट्टी पर अनुसंधान करते रहे। उन्होंने इस मिट्टी से गाढ़ा रंग निकालने में सफलता हासिल की। 'ओह! तो यहां के लोग एक बढ़िया किस्म के रंग पर चलते-फिरते हैं।' अपने आप से कह रहे थे प्रो कार्वर!!

अनुसंधान अभी जारी ही था। रात-दिन एक करके, मिट्टी के कितने ही नमूनों की छानबीन करके उन्होंने कितने ही द्रव्य

मिट्टी से अलग किए। इन रंग द्रव्यों का चूर्ण, तेल पानी आदि सब मिलाकर उनसे उन्होंने पक्के रंग बनाये। इन रंगों को लकड़ी, कैनवस पर लगाकर उनकी परख की। जब उन्हें स्वयं को संतोष हुआ तब उन्होंने अपने विद्यार्थियों को इन प्रयोगों के विषय में मिट्टी के रंगों के महत्वपूर्ण अनुसंधान के बारे में बताया।

कुछ ही दिनों में उनके इन रंगों की परीक्षा करने वाली घटना घटी। मांटगोमेरी गांव के पास ही एक छोटी सी बस्ती में प्रो कार्वर कृषि विषयक चर्चा करने गये थे। चर्चा के लिए बुलाने वाले थे गोरे किसान और सभा का स्थान था एक आधा-अधूरा बना हुआ चर्च। सभा बड़ी अच्छी हुई। सभा की समाप्ति के बाद की गपशप में प्रो कार्वर को पता चला कि पैसे कम पड़ गए थे इसलिए गांववालों को चर्च को बगैर रंग लगाये ही रखना पड़ा था। किसान कह रहे थे, 'अगर समय रहते पुताई नहीं हुई तो हमारी सारी मेहनत बेकार हो जायेगी। तेज हवाओं और बरसात में तो हमारा बनाया हुआ चर्च नहीं टिक पायेगा।'

'क्या रंग इतना मंहगा है?' प्रो कार्वर ने पूछा। 'हां! मंहगा तो है। वैसे देखा जाये तो बहुत ही मंहगा है। क्योंकि अगर कपास की फसल अच्छी हुई तो ही हम लोग पैसे जमा कर पायेंगे। लेकिन उससे पहले तो पूरी बरसात निकालनी पड़ेगी और बरसात में यह टिकेगा नहीं।'

'तो ऐसी बात है। अच्छा, आप लोग बिल्कुल चिंता मत कीजिए। मैं आप लोगों के लिए बढ़िया रंग का इंतजाम किये देता हूँ।' प्रो कार्वर ने आश्वासत दिया।

उनकी इस बात पर किसी को जरा भी विश्वास नहीं हुआ। यह काला डाक्टर नाम का प्रोफेसर पूरे चर्च के लिए रंग का इंतजाम करेगा भला।

लेकिन जल्दी ही उनका यह भ्रम टूटा! एक दिन एक छोटा ठेला चर्च के सामने आकर खड़ा हुआ। साथ में प्रो कार्वर और उनके विद्यार्थी। उन सब ने मिलकर खटारे से रंगों के बर्तन नीचे उतारे और फिर डाक्टर साहब के कुशल नेतृत्व में विद्यार्थियों ने सारे चर्च पर बढ़िया रंग चढ़ा दिया।

रविवार को जब बस्ती वाले चर्च में आये तो उन्होंने देखा, 'आसमान के रंग से होड़ लेने वाले रंग में रंगा हुआ उनका चर्च। झिलमिलाता नीला रंग। जगमग चमकता हुआ। बारिश हुई, तेज हवाएं बहीं, लेकिन इस रंग की न पपड़ी निकली, न दरारें पड़ी।

कुछ समय बाद इसी मांटगोमेरी की मिट्टी से उन्होंने गाढ़ा नीला रंग निकाला। इतना गहरा नीला कि प्रचलित गहरे नीले रंग से सत्तर गुना अधिक गहरा नीला। यही गहरा नीला रंग प्राचीन काल में 'शाही' नीला रंग के नाम से जाना जाता था। ऐसा माना जाता था कि प्राचीन मिस्त्र संस्कृति के साथ ही वह नष्ट हो गया। प्रो कार्वर के अथक शोधकार्य से इस रंग का पुनर्जन्म हुआ था।

रंगों के उत्पादन करने वालों को जब इस रंग की खोज की भनक पड़ी तो उनमें इस रंग को व्यापारी पद्धति से मार्केट में लाने के लिए होड़ शुरू हो गयी। प्रो कार्वर से पत्र व्यवहार शुरू हुआ। एक व्यवहार कुशल उत्पादक ने यूं भी कहा, 'हम लोग अपने उत्पादन को 'आपका' ही नाम देंगे। इससे आपका नाम होगा।'

'नहीं, हरगिज नहीं।' डा कार्वर ने बिल्कुल साफ और पक्की 'ना' कर दी। अपनी पूरी जिंदगी में उन्होंने किसी एक के या उनके स्वयं के लाभ के लिए अपने नाम का उपयोग नहीं करने दिया। अपने अनुसंधान को 'व्यापार' नहीं बनने दिया। समाज के गरीब-से-गरीब तबके को, मामूली किसान को भी उपलब्ध हो सके ऐसी कीमत पर चीजें बिकें, इस बात के लिए वे हमेशा प्रयत्नशील रहे।

हर कहीं उनके 'शाही नीले रंग' के चर्चे हो रहे थे। 'आयोवा स्टेट रजिस्टर' में उसे पर लेख लिखा गया। आयोवा छोड़कर टस्कगी आने के बाद से अविरत कार्य कर रहे थे डा कार्वर। महान ध्येयवाले साथियों का साथ देते हुए उन्होंने अपनी खोजों का उपयोग बांधवों के उत्कर्ष के लिए ही किया था। समाज में अपना विशिष्ट स्थान निर्माण किया था। आयोवा स्टेट रजिस्टर के लेख में उनका बड़े गौरवपूर्ण शब्दों में गौरव किया गया।

सिम्पसन कॉलेज के भूतपूर्व प्राध्यापक विल्सन जो कि अब कृषि मंत्रालय में सचिव थे डा कार्वर के अनुरोध पर टस्कगी स्कूल को भेंट देने के लिए पधारे थे। सन् 1898 की बात है। सारी टस्कगी में उत्सव का वातावरण था। क्योंकि इससे पहले आज तक कभी कोई सरकारी हस्ती इस स्कूल की ओर आयी ही नहीं थी। टस्कगी स्कूल की तारीख में यह अभूतपूर्व दिन विशेष था। टस्कगी में उत्सव का वातावरण था।

टस्कगी के समारोह में भाषण देते हुए प्रो विल्सन ने डा कार्वर की तरफ निर्देश करते हुए कहा:

'टस्कगी में कृषि विद्या की शिक्षा शुरू हुई इतना ही कहना काफी नहीं है, बल्कि अब लोगों के सामने कृषि विद्या का एक नया आयाम रखा जा रहा है। कृषि शास्त्र अब एक नयी दिशा में प्रगति कर रहा है। यह युगान्तर का लक्षण है।

'डा वाशिंगटन ने उत्तर में लाकर जो पौधा दक्षिण में लगाया था वह अब बड़ा ही अच्छा पनप रहा था।'

ज्ञान की गंगा, समृद्धि की गंगा

टस्कगी में संगीत था। सुनकर मन झूम उठे ऐसा मधुर संगीत। डा कार्वर ने पहले कभी सुना नहीं था ऐसा संगीत। हर रविवार शाम को टस्कगी स्कूल के छात्र प्रार्थना मंदिर में इकट्ठे होते और मधुर संगीत से सारा अवकाश भर देते। वातावरण को विभोर कर देते। डा वाशिंगटन का नाम सुनकर देश-विदेश से लोग उनसे मिलने आते। गुलामी में जन्में इन बच्चों के संगीत को सुनकर मेहमान विभोर हो उठते। एक अनोखे अनुभव की स्मृति उनके मन में बस जाती।

डा कार्वर को इस रविवार की शाम की प्रतीक्षा रहती। वह संगीत उन्हें पुराने दिनों की याद दिलाता। मां के गीतों की गुनगुनाहट मन में जाग उठती। वह संगीत डा कार्वर की अकेली जिंदगी में रौनक लाता, जीने की आस जगाता।

ऐसी ही एक रविवार को प्रार्थना मंदिर से लौटते समय उनकी नजर होस्टेल के पिआनो पर पड़ी। कितने सालों से उन्होंने पियानो बजाया ही नहीं था। वे उस पियानो के करीब पहुंचे, हौले से उनकी उंगलियां पियानों पर चलने लगी। उन्हें कितनी ही संगीत रचनाएं याद आने लगीं। श्रीमती मिलहालैंड की सिखाई हुई रचनाएं। आज उनकी उंगलियों से अब 'यादें' झर रही थीं।

अंधेरा घिर आया। डा कार्वर को कुछ होश ही नहीं था। वे अपनी ही धुन में धुन-पर-धुन बजाते चले जा रहे थे।

सिम्पसन वालों के बताए हुए भविष्य के अनुसार कार्वर चित्रकार या संगीतकार नहीं बने थे, वे तो बन गये थे एक किसान, दक्षिण का भूमिपुत्र। एक छोटे, लेकिन मेहनती स्कूल का शिक्षक और जड़ी-बूटी वाले डॉक्टर और हां, रंगरेज भी। क्या यह असफलता थी? एक ऊसर बंजर जमीन को उन्होंने नवजीवन दिया था। वही बंजर जमीन अब फल-फूल रही थी। उन्होंने वहां के लोगों की आंखों पर बंधी डॉलर्स की पट्टियां हटाकर उन्हें 'देखना' सिखाया था। वे लोग भी अब मिट्टी में जड़ी-बूटी में, फूल में पत्तों में समाये ईश्वर को खोज लेते थे, प्रकृति के रहस्यों को समझने लगे थे। उजड़ा वीराना अब फलफूल रहा था। हर बीतनेवाला दिन नया कुछ दे ही जाता था। क्या यह असफलता थी?... अब भी वे सोच रहे थे, यह तो सिर्फ आरंभ है, अभी तो और कितना आगे चलना है।

पियानो पर चलते-चलते उंगलियां थक गयीं, वे रुके। आहट पाकर पीछे मुड़कर देखा, किसी ने दिया जला दिया था। रोशनी में देखा, दरवाजे पर कितने सारे विद्यार्थी खड़े थे। वादन रुकते ही वे सब आगे बढ़े।

'सर! कितना अच्छा बजाते हैं आप... ?' डा कार्वर की जन्मजात विनम्र वृत्ति उन्हें कुछ सूझ ही नहीं रहा था, वे अपनी जगह से उठने लगे।

'नहीं सर! उठिये नहीं, कुछ और बजायें!'

'आज तक हमने इतना शुद्ध और ऐसा सुरीला संगीत कभी नहीं सुना था।'

'लेकिन बच्चों, मैं कोई वादक नहीं हूं।'

'सर! आप ही तो हमेशा कहते हैं न? कि अपने पास जो कुछ है, उसे 'देते' रहना चाहिए।

उसी समय होस्टल की घंटी बज उठी। रोजाना रात को सोने के समय बतानेवाली। निरुपाय होकर सब अपने-अपने कमरों की ओर चल पड़े। डा कार्वर भी लौटे, 'कल सवेरे अपने 'पिता' से इस बारे में पूछना है।'

अभी पिछले कुछ दिनों से कृषि विभाग के काम की व्यापकता बहुत बढ़ गयी थी। खर्चा पूरा नहीं पड़ता था। डा कार्वर ने अब तक जो प्रयोग किये थे उनसे बहुत ही लाभ हो रहा था इसलिए अब उनके कृषि विभाग के लिए अधिक-से-अधिक जमीन उपलब्ध करवायी गयी थी। लेकिन पैसों के अभाव में काम आगे नहीं बढ़ पा रहा था। डा वाशिंगटन क पास अमोघ वक्तृत्वा की शक्ति थी। उसके बल पर वे संस्था के लिए फंड जमा करते। डा कार्वर के पास भाषण देने की यह अलौकिक देन नहीं

थी। लेकिन कल शाम के पियानो वादन और छात्रों की प्रशंसा से मन में एक नया विचार जन्मा था।

थोड़ा सकुचाते हुए उन्होंने स्कूल के कोषाधिकारी श्री वॉरेन लोगन के सामने एक प्रस्ताव रखा। स्कूल के विद्यार्थियों का वाद्यवृन्द बनाकर, उनके जलसे द्वारा पैसे जमा करने का। श्री लोगन डा कार्वर को अच्छी तरह जानते थे। उत्तर से आये हुए इस मितभाषी विनम्र शास्त्रज्ञ के अनमोल गुणों से अवगत थे। आज तक डा कार्वर ने जिस कार्य में भी हाथ दिया था उसे आशा से कहीं अधिक सफल कर दिखाया था। मिट्टी से सोना उपजानेवाले कार्वर सिर्फ प्रस्ताव पर ही निर्भर होकर श्री लोगन ने पूरे दौरे की रूपरेखा बना डाली।

डा कार्वर अब पियानो पर नियमित रियाज करने लगे। इतने दिनों के अनुभवों के बाद विद्यार्थियों को अपने 'सर' की किसी भी बात से अचरज नहीं होता था। अचरज करें भी तो कौन-कौन सी बात की! और वह भी रोज-रोज!

दौरा बड़ा ही सफल रहा। इस वाद्यवृंद के कार्यक्रमों से वे लोग आवश्यक निधि जमा कर ले आये। उनका और भी एक लाभ हुआ इस दौरे में, वे असली 'दक्षिण अमेरिका' भी देख आये। वहां के अपने दलित नीग्रो बांधव उनकी गरीबी, भुखमरी, उनकी अज्ञान . . . उनकी उपेक्षित और अभावों से भरी जिंदगी, सब कुछ अपनी आंखों से देख आये।

अब भी दक्षिण में गुलामी की प्रथा बरकरार थी। बल्कि उसे स्वाभाविक माना जाता था। नीग्रो को दूसरे दर्जे का मानव ही माना जाता था। मुक्ति के बाद भी नीग्रो के सामाजिक स्थान में कोई फर्क नहीं हुआ था। आज भी सार्वजनिक स्थानों पर, सार्वजनिक वाहनों में, यहां तक कि उद्यानों में भी नीग्रो को प्रवेश मनाही थी। सड़क चलते कभी किसी गोरे आदमी से आगे निकलने का मतलब था कोड़ों की मार। सामने से कोई गोरा आदमी आ रहा हो तो रास्ता छोड़कर अलग हटकर खड़ा होना पड़तरा था। अपने बल पर, मेहनत करके शिक्षा पाकर अगर कोई नौकरी या व्यवसाय करता भी था तो उसे भी रोज की जिंदगी में अपमान के घूंटे पीने ही पड़ते। किसी ने जरा भी प्रगति करनी चाही तो उसे दमन का सामना करना पड़ता। आज भी नीग्रो अपने नाम के साथ श्रीमान या श्रीमती नहीं लिख सकते थे। अगर लगा दिया तो सजा भुगतनी पड़ती, चमड़ी उधेड़ने तक कोड़ों की मार! और फिर इस अन्याय की कहीं पर सुनवाई भी नहीं। न्याय मांगते किससे? न्याय देवता भी गोरों के ही। ऐसी असुरक्षित स्थिति में फिर चेहरे पर लाचार हंसी का उदास आवरण चढ़ाकर जिंदगी गुजारने की बेचारी कोशिश। दक्षिणवाले कहते, 'हमारे नीग्रो के चेहरे पर हरदम 'हंसी' ही रहती है। कौन कहता है, कि वे गुलामी में सुखी नहीं हैं? उनके लिए यही स्वाभाविक अवस्था अच्छी है।'

बहुजन समाज तो किसान ही था। लकड़ी के बने टूटे-फूटे झोपड़े, उनमें रहने वाले वे नीग्रो बांधव। अपना अस्तित्व बनाये रखने की कोशिश में जी-तोड़ मेहनत करनेवाले। एक झोपड़े में रहने वाले भी कितने सारे छोटे-बड़े सब एक साथ साथ-साथ उठना, साथ ही रहना, खाना। खाना भी कैसे? चलते-चलेत या फिर दीवार से टिक कर उकड़ू बैठेकर, हथेली पर लेकर!! बिस्तर-बिछौना ऐसा कोई झंझट नहीं। झोंपड़े में ना तो खिड़की, न परदे, कुछ भी तो नहीं। ज्यादातर झोंपड़ों के लिए पाखाना भी नहीं बना था। जहां कहीं बना था वह भी जैसे-तैसे बोरे के परदे लगाकर।

खाने का सामान भी दूर-दूर के बाजारों से खरीदा हुआ। बरसों से चली आ चीजें, कुछ इनीगिनी चीजें मांस, आटा और कच्चा गुड़। बस यही! अपने झोपड़े के आसपास की जगह पर कुछ उपजाया जा सकता है, जानवर पालकर दूध, अंडे, मांस की व्यवस्था हो सकती है, इस बात की उन्हें जानकारी ही नहीं थी। बरसों से यही अपूर्ण आहार चला आ रहा था। वहां के लोग जीवन सत्व के अभाव के कारण पेलाग्रा, स्कर्व्ही जैसे रोगों के शिकार होते थे। पीने का पानी भी कोस-दो-कोस दूर से लाया हुआ इसलिए पानी का अभाव। जब पीने के लिए ही पानी की कमी हो तो और कामों के लिए पानी कहां से मिलता? इस कमी के परिणाम भी भुगतने पड़ रहे थे। सारी चमड़ी फट रही थी।

जमीन में भी दरारें पड़ रही थीं। जमीन पर बीस-पच्चीस फीट खाई बन जाती तो भी किसी को उसकी चिंता नहीं। सारा जीवन एक सर्वनाश की कगार पर आकर खड़ा हुआ। पता नहीं कब खत्म हो जाये।

दौरे से लौटने के बाद प्रो कार्वर के मन में एक नया विचार जाग उठा। 'सामाजिक चेतना' की अब नितांत आवश्यकता थीं इस दिशा में विचार करने का एक निराला उपक्रम उनके मन में आकार लेने लगा। 'मुझे अपने बंधु-बांधवों को जागृत करना है। यह मेरी अपनी नैतिक जिम्मेदारी है।'

जैसे ही मन में कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार हुई, उन्होंने उसे डा वाशिंगटन के सामने रखा। अपने समाज को अब यह सिखाना आवश्यक है कि किन चीजों का उत्पादन करना है, कैसे करना है कि उनका उपयोग कैसे हो। यह सब सीखना है। रहने के

लिए घर बनाना, दूध और अन्न के लिए जानवर पालना यह भी सिखाना होगा। इस काम के लिए हमें टस्कगी स्कूल को उनके झोपड़ों तक ले जाना है।'

डा वाशिंगटन ऐसे कार्यक्रम को सहमति न दर्शाते तो ही आश्चर्य की बात होती सन् 1899 में पहले 'चलते-फिरते कृषि विद्यालय' का जन्म हुआ। प्रो कार्वर ने अपने सारे कार्यक्रम की निश्चित रूपरेखा बनाकर, सारी आवश्यक चीजें इकट्ठी कीं। विद्यार्थियों में से कुछ को चुना। सारे उपकरणों को एक ठेले पर चढ़ाकर प्रो कार्वर अपने विद्यार्थियों के साथ एक नये अभियान पर चल पड़े। टस्कगी स्कूल अब किसानों के घर-आंगन में पहुंच गया था।

ये लोग गांव-गांव घूमते हुए घर-घर में जाकर अपनी बात सप्रयोग समझाते थे। इन प्रयोगों के लिए उपकरणों की आवश्यकता होती। उपकरणों को ठीक से रखने के लिए योग्य ठेले की जरूरत थी। प्रो कार्वर ने पूरी प्रयोगशाला ही सजाने लायक ठेलागाड़ी बनवायी। अब यह चलती-फिरती प्रयोगशाला गांव-गांव जाती और वहां के पानी, मिट्टी की जांच के प्रयोगों में सहयोग करती।

इस दौरे पर प्रो कार्वर अपने बांधवों के बीच रहते। उनके झोपड़ों में उन्हीं के साथ उठते-बैठते। अपने मृदु बोल, विनयपूर्ण व्यवहार और स्वाभाविक स्नेह से उन्होंने उन गरीब किसानों से अपनापन जोड़ लिया था। जब वे लोग अपनी झिझक छोड़कर खुलकर बातें करना शुरू करते तब प्रो कार्वर उन्हें अपनी बातें समझाते। जमीन की जुताई कैसे हो, गहरी तह तक खुदाई क्यों करनी चाहिए, बीज कौन से हों और कैसे हों? उन पर प्रक्रिया कैसी हो? आदि सारी बातें सहज सरल भाषा में समझाते। अपने आंगन का एक हिस्सा हरी भाजी के लिए रखने की सलाह देते। बिल्कुल कम खर्च करके मिलनेवाली हरी भाजी जैसी चीजें उन गरीब किसानों को आज तक के तीन दुष्ट 'म' कारों से छुटकारा दिला सकती थी। यह तीन 'म' कार थे मीट (मांस), मील (आटा) और मौलासिस (कच्चा गुड़)। सम्पूर्ण संतुलित आहार के अभाव में इस समाज को पेलग्रा और स्कर्व्ही जैसे रोगों ने सता रखा था। प्रो कार्वर ने इन लोगों को हरी भाजी और टमाटर जैसी चीजें खाना सिखाया। अब तक टमाटर को विषैला फल माना जाता था। इसलिए जगह-जगह पर टमाटर खाकर दिखलाना पड़ता, यह सिद्ध करने के लिए कि वह विषैला नहीं है। उसी तरह इन लोगों को दलहन वर्ग के अनाज उपजाने की सलाह देते। कमजोर जमीन की ताकत बढ़ाने में दलहन की पैदावार से सहायता मिलती है। टस्कगी स्कूल की बीस एकड़ निष्कृष्ठ जमीन से भी कैसी बढ़िया और भरपूर उपज निकलती है यह बताने के लिए वे अपने साथ टस्कगी के अनुसंधान केंद्रों के खेतों से उपजे आलू, पत्तागोभी, प्याज, तरबूज आदि साथ ले जाते थे। किसानों को अच्छे बीज दिलवाते। यह अच्छे बीज उन्हें सेक्रेटरी श्री जेम्स विलियम्स ने भेजे थे। उनका ऐसा अच्छा उपयोग होता।

प्रो कार्वर का कहना था कि फसलें अदल-बदल कर लगायी जायें। इसका कारण वे इस तरह समझाते कि, 'जमीन को भी आराम की आवश्यकता होती है। जैसे दिन भर काम की थकान मिटाने के लिए हमें आराम की जरूरत होती है वैसे ही जमीन को भी आराम की जरूरत होती है। बार-बार एक ही फसल लगाने से जमीन को यह आवश्यक आराम नहीं मिल पाता। आप लोगों के बचपन के दिनों में कपास कैसी निकलती थी? भरी-भरी? अब ऐसी छोटी, सूखी क्यो निकलती है? आप लोगों ने जमीन को कभी जरा भी आराम दिया ही नहीं।'

'बात तो सही है, लेकिन ऐसी गरीब जमीन को आराम देने लगे तो खायेंगे क्या? बच्चों को क्या खिलायेंगे? मिट्टी?'

'नहीं, नहीं। मिट्टी क्यों? मैं आप लोगों को शकरकंद के बीज देता हूं। इतने दस एकड़ के लिए काफी होंगे। इस एक फसल से पूरा साल आराम से गुजर सकता है और फिर शकरकंद के पत्ते, डंठल सुअरों को खिलाने के काम आयेंगे। आप लोग साल में दो बार ऐसी फसल ले सकेंगे। फिर भी जमीन का जरा भी नुकसान हीं होगा। इन्हीं दस एकड़ों से तीन साल बाद जब कपास की फसल उपजाओगे तो देखना कैसी बढ़ी गुनी फसल मिलेगी। अभी पूरे खेत से जितना कपास मिलता है उतना तो इस एक टुकड़े से मिलेगा।'

इतना सब समझाने-बुझाने के बाद भी कोई-न-कोई बूढ़े बाबा बोल ही उठते, 'अरे बाबू, तुम मुझे कैसे सिखाओगे? तुम क्या मुझसे ज्यादा जानते हो खेती-किसानी? पूरी उमर मैं खेती ही कर रहा हूं, जानते हो? आज तक तीन खेतों का सफाया कर चुका हूं। अब बोलो!'

यह शान, यह मर्दानगी!

यदि किसी आंगन में बीमार मुर्गियां दिखाई दीं तो प्रो कार्वर उनके दड़बे देखते। फिर मालिक को समझाते, 'इन मुर्गियों के दड़बों में सूर्यप्रकाश पहुंच नहीं पाता, इसलिए वहां पर बड़ी नमी रहती है, जिससे मुर्गियां बीमार हो जाती हैं।'

जवाब मिलता, 'नहीं वैसी बात नहीं है। इन अंडों को पूनम को सेने थे इसलिए यह मुर्गियां ऐसी हैं।' ऐसा था जंतर-मंतर का प्रभाव।

प्रो कार्वर ने ऐसी स्थितियों में भी हार नहीं मानी थी। वे घर-घर में जाकर अपना काम कर ही रहे थे। बार-बार अपनी बात समझाते थे। गांव-गांव घूम रहे थे। कभी कोई समझदार किसान उनकी बात मान लेता। अपने खेतों में उनके कहे अनुसार कदल करता, फिर उसे जो लाभ होता वह देखकर उसका पड़ोसी भी कार्वर की बात मानता। प्रो कार्वर बी बात मान लेने से, उनका फायदा ही होता था। फायदा भी इतना अधिक कि आज तक कभी देखा ही न था। धीरे-धीरे लोगों का विश्वास बढ़ रहा था। प्रो कार्वर की तपस्या अभी जारी ही थी, बिना थके, बिना हारे।

छुट्टी के दिन प्रो कार्वर अपना ठेला लेकर मॅकान कॉउंटी में घूमते थे। मेले में जाते, हाट-बाजार में जाते। वहीं पर अपना ठेला लगाते और अपनी बात समझाते। लोग बात शांति से सुनते, लेकिन एकाध अहंकारी गोरा बोल उठता, 'बड़ा आया है कल्लू, हमें सिखाने के लिए।'

कार्वर ऐसी अवहेलना अनसुनी कर देते, ध्यान ही नहीं देते।

शुरू-शुरू में अनाड़ी किसानों को लगता कि यह प्राध्यापक महाशय कुछ कठिन, समझ में आने वाली बात बतलायेंगे। लेकिन जब वे एक बार प्रो कार्वर की बातें सुन लेते तो उनके मन का सारा डर निकल जाता, सारी शंकाएं, सारे संदेह मिट जाते।

प्रो कार्वर ने अपना ठेला लगाने के लिए अच्छा ठिकाना ढूंढ लिया था - चर्च। बहुत से लोग एक साथ मिलने की जगह। अपने साथियों के साथ वे चर्च के दरवाजे पर तैयार खड़े होते। सामाजिक और आर्थिक समस्याओं की गंभीरता को न समझनेवाला महाभाग - विशेषत: धर्मगुरु - इस प्रबोधन से बड़े नाराज रहते। उनका कहना होता कि ईश्वर के विश्राम के दिन ऐसे झंझट न हो। कुछ गोरे तो ऐसी सभाएं भंग करने के लिए तैयार ही बैठे होते। कहते, आज तक हमारी दया पर जीने वाले ये निग्गर यहां पर क्यों? सच बात यह थी कि गोरों से अधिक अच्छी खेती कर सकने वाले 'काले' उन्हें अच्छे नहीं लगते थे। वास्तव में दक्षिण में स्थिति ऐसी थी कि गरीब गोरा किसान और नीग्रो किसान, आर्थिक दृष्टि से दोनों में कोई फर्क नहीं था। लेकिन गुलामी प्रथा नष्ट होने से पहले नीग्रो को बिल्कुल दबाकर रखना संभव था। अब स्वतंत्रता के बाद नीग्रो को बराबरी के अधिकार प्राप्त थे और उस पर इस कृषि सुधार से तो उनके आगे बढ़ने का डर था। यह बात गोरों को कैसे सहन होती? लेकिन सभी गोरे ऐसे दकियानूसी विचारों के नहीं थे। कुछ समझदार गोरे किसान, धर्मगुरु भी इस चलते-फिरते कृषि विद्यालय से लाभ उठाते। प्रात्यक्षिक प्रयोग देखते, कृषि सुधार अपनाते। प्रो कार्वर भी किसी से सौतेले व्यवहार नहीं करते। दक्षिण में सब की समस्याएं एक सी ही थीं। सभी को भूख की खाई से उबारना था। 'जहां हो, वहीं से आगे बढ़ो।' प्रो कार्वर का यह संदेश समूचे दक्षिण के लिए था।

Start where you are
With what you have
Make everything of it,
Never be satisfied.
G. W. Carver

प्रो कार्वर के प्रयासों से धीरे-धीरे ही सही, लेकिन दक्षिण के निवासियों की भोजन की आदतें बदलने लगीं। अकाल के दिनों में काम आ सके इसलिए अन्न धान्य को सुखाकर रखने की पद्धति अपनायी जाने लगी। मांस को लंबे अर्से तक सुरक्षित किस प्रकार रखा जा सकता है, सब्जी-भाजी को धूप में सुखाकर उसका संचय कैसे किया जा सकता है, इन बातों का प्रात्याक्षिक करके दिखलाया जाता। मेडिकल साइंस वालों के कहने से कितने ही पहले प्रो कार्वर ने दक्षिण के लोगों को फल खाकर भोजन तत्वों के अभाव को दूर करना सिखा दिया था। श्रेष्ठ दर्जे के बीज उपलब्ध कराये। उपजाये हुए अनाज से विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन बनाना सिखाया। अचार-मुरब्बे बनाना सिखाया। इन पदार्थों से रोज के आहार को सम्पूर्ण रूप से संतुलित बनाना सिखाया।

परिपक्व फलों के रस को सुखाकर संचय करना सिखाया।

लोगों के आहार विषयक आदतें बड़ी पुरानी होती हैं। बरसों से चली आने के कारण उनसे एक प्रकार का मोह भी होता है। इन आदतों को अगर बदलना हो तो जो नए पदार्थ आहार में समाविष्ट करने हैं वे आकर्षक और स्वादिष्ट होना आवश्यक है। अब प्रो कार्वर इस काम के पीछे लगे थे। नये-नये व्यंजन बनाकर देखते जो सुस्वाद होते साथ-साथ आहार की दृष्टि से भी परिपूर्ण हों। उन्हें यूरोप में प्रचलित पदार्थों का स्वाद लेने का अवसर कैसे मिलता? वे तो बस अपनी तरफ से पूरा प्रयत्न कर रहे थे। नये-नये व्यंजनों से दक्षिण के आहार में विविधता ला रहे थे। यह सामाजिक जागरण सिर्फ आहार तक ही सीमित नहीं था। कपड़ों की धुलाई कैसे हो, शारीरिक स्वच्छता कैसे रखी जाये, परदे कैसे बनाये जाये, बच्चों का संगोपन, पशु-संवर्धन, कुक्कट पालन ऐसे विषय भी इस प्रबोधन में सम्मिलित थे। साथ ही झोपड़े के बाहर एक ही बड़ी सीढ़ी बनाने की अपेक्षा तीन छोटी सीढ़ियां किस तरह लाभदायसी सिद्ध होती हैं। पाखाना कैसे और कहां पर बनाया जाये, वनस्पति के रेशों से कंबल कैसे बने और मिट्टी से रंग बनाकर घर की रंगाई-पुताई करना आदि कलाओं का भी प्रसार किया जाता।

प्रो कार्वर ने अनाड़ी अशिक्षित किसान समझ सकें ऐसी सहज सरल भाषा में पत्रिकाएं छपवायीं। गांव-गांव में बंटवायीं।

इन पत्रिकाओं में विविध विषयों का विवेचन होता। उदाहरण के तौर पर मूंगफली से तैयार होने वाले 105 पदार्थ, टमाटर की पैदावार, उससे बन सकने वाले 115 पदार्थ। शकरकंद को संभालकर रखने के उपाय। सुअर पालने की जानकारी। अलाबामा में पशु-पालन से कितना लाभ हो सकता है, गर्मी के दिनों में मांस को नमक लगाकर सुखाने के तरीके, जमीन की ताकत बढ़ाने के, उर्वराशक्ति बढ़ाने के तरीके आदि।

इन सब बातों के साथ-साथ और एक महत्वपूर्ण बात, बचत के फायदे। अगर रोजाना 5 सेंटस् बचायें जायें तो एक साल में तीन एकड़ जमीन खरीदी जा सकती है, यह काम उन्होंने अपने बांधवों को करके दिखलाया। बस, फिर तो गरीब किसानों के घरों में मटके, हांडियों में 5 सेंट्स के सिक्के जमा होने लगे। वर्ष के अंत में जमीन की खरीदारी होने लगी। 'अपनी जमीन' यह भावना गरीब किसानों को बड़ी सुखदायी मालूम होने लगी। आत्मसम्मान में वृद्धि हुई। किसानों को जमींदारों के शिकंजे से बाहर निकलने का मार्ग मिला। आर्थिक स्थिरता की शाश्वत राह दिखाई दी।

प्रो कार्वर जान गये थे कि जब तक दक्षिण का किसान समृद्ध नहीं होगा, तब तक दक्षिण की संस्कृति का भविष्य उज्जवल नहीं होगा। किसानों की समृद्धि ही राष्ट्र का विकास कर सकती है। इसलिए किसानों का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। यदि सर्वसाधारण किसानों ने आत्मविकास का प्रयास किया, नये-नये सुधारों को अपनाया, तो वे अपनी संस्कृति निर्माण कर सकेंगे। प्रो कार्वर ने सर्वसामान्य किसानों की, समाज के निचले तबके के लोगों की आवश्यकताओं को पहचान कर अपने अनुसंधानों को एक निश्चित विशिष्ट दिशा दी। अपने कार्य को गतिमान रखा।

प्रो कार्वर के सीधे-सरल स्वभाव ने, अपनेपन के व्यवहार ने दक्षिण के किसानों का मन जीत लिया था। किसानों को अब वे पराये नहीं लगते थे इतने पढ़े-लिखे, ऐसे बड़े कृषि विशेषज्ञ लेकिन इतना सीधा बर्ताव! बात का अनोखापन सबको मोह लेता।

यह चलती-फिरती प्रदर्शनी गांव-गांव घूमती। बैलगाड़ी पर वस्तुएं सजाना, फिर दोबारा पिटारों में बंद करना यह सब काम प्रो कार्वर स्वयं अपने हाथों से करते। कहीं कोई चीज खो न जाये, चीजों का दुरुपयोग न हो, कोई चुरा न ले, इस बात के लिए वे बहुत सतर्क रहते।

इस सावधानी के पीछे एक और भी कारण था। वे अपने आप को टस्कगी संस्था का प्रतिनिधि मानते थे। इसलिए प्रदर्शनी में रखी वस्तुओं को वे संस्था की सामग्री मानते थे। उन पर अपना व्यक्तिगत अधिकार न मानते हुए संस्था का अधिकार मानते थे। अतः इस कार्य को वे संस्था का कार्य समझ कर करते, सारी सामग्री की देखभाल करते। जिन लोगों को उनके कृषि सुधार प्रयोग के उत्पादनों में रुचि होती वे लोग अपने पुराने रीति-रिवाजों को छोड़कर प्रो कार्वर को अपनी संस्था में आमंत्रित करते। इस बात का परिणाम यह हुआ कि नीग्रो को प्रवेश न देने वाली कितनी ही संस्थाओं ने प्रो कार्वर को आमंत्रित किया।

यह 'चलता-फिरता विद्यालय' चलाना बड़ा मेहनत का काम था। प्रो कार्वर इस काम में हाथ बंटा सके ऐसा एक अच्छा विद्यार्थी साथी मिला। अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में काम करते-करते वह भी इस काम में एकदम सिद्धहस्त हो गया। यह विद्यार्थी था थॉमस कैम्पबेल। आगे चलकर यह टी एक कैम्पबेल पहले नीग्रो फील्ड एजंट के रूप में मशहूर हुआ। अब यह थॉमस कैम्पबेल प्रो कार्वर के साथ कैसे आया, यह एक अनोखी घटना है।

थॉमस कैम्पबेल का बड़ा भाई विली पहले से ही टस्कगी स्कूल में पढ़ रहा था। अपने भाई के साथ पढ़ने के लिए थॉमस जार्जिया के अथेन्स गांव से भागकर आया था। 200 मील की दूरी से, माता-पिता को छोड़कर और बड़े भाई की बात न मानकर। विली ने उसे कहलवाया था, 'टस्कगी की तरफ रुख भी न करना यहां पर माता का प्रकोप है।' लेकिन ऐसी छोटी-मोटी बात से कौन डरता है।' कहकर थॉमस तो टस्कगी तक आ ही पहुंचा।

जब थॉमस टस्कगी आया तब बेचारे विली को माता निकली थी और वह बस थोड़े ही समय का साथी था। आखिरी समय दोनों भाई मिले। विली ने मरते समय कहा, 'मुझे यहीं पर दफनाना और तुम अब यहीं पर रहना। जो कुछ सोचकर आये हो उस काम को करना और इतना अच्छा करना कि कोई और तुमसे आगे न बढ़ पाये।'

भाई की मृत्यु से दुखी थॉमस अब एकदम अकेला हो गया। उसकी हालत तो बिना पाल के जहाज जैसी हो गयी। ऐसी ही अकेली निरुद्देश्य अवस्था में उसे देखा प्रो कार्वर ने। उन्होंने प्यार से, ममता से, उसकी पूछताछ की, फिर उससे पूछा, 'तुम्हें खेती करना अच्छा लगेगा?'

'ऊहूं, नहीं।'

अभी तक सिर्फ खेती ही तो की थी। उसे तो अपने भाई विली की तरह कोई आकर्षक काम, जैसे कि बाल-काटना, लुहार काम, बढ़ईगिरी, ऐसा कुछ सीखने की इच्छा थी। प्रो कार्वर को पहली नजर में ही यह गंभीर प्रकृति और तगड़ा, तंदरुस्त लड़का भा गया था। अब उन्होंने पूछा, 'अच्छा तो फिर, तुम्हें कृषि विज्ञान सीखना कैसा लगेगा?'

थॉमस सोच रहा था, 'बाप रे, बड़ी कठिन विद्या दिखती है। नाम ही कितना मुश्किल है। कुछ भी हो, खेती से तो अच्छा ही होगा,' थॉमस ने कहा, 'हां! मुझे ऐसा ही कुछ नया सीखना है। कृषि विज्ञान!'

अर्थात आगे चलकर थॉमस को कभी भी इस बात के लिए पश्चाताप नहीं करना पड़ा।

खेतों पर मजदूरी करना और प्रो कार्वर से खेती करना सीखना इन में बहुत फर्क था। 'कैसे?' और 'क्या?' के साथ-साथ 'क्यों?' इस प्रश्न को पूछा जा सकता था। प्रो कार्वर को भी यह 'क्यों' पूछनेवाला विद्यार्थी अच्छा लगता था। उनके चलते-फिरते विद्यालय के काम में भी यह विद्यार्थी बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ। लंबे, दुबले कार्वर और तगड़ा-तंदरुस्त थॉमस, यह जोड़ी पूरे इलाके में प्रसिद्ध थी। इस जोड़ी को न पहचान सके, ऐसा आदमी उस इलाके में मुश्किल से मिलता। कारण यह था कि छोटे-से-छोटे, दूरदराज के गांवों में भी यह जोड़ी पहुंच जाती। यहां ठेला नहीं जा पाता उस रास्ते पर खच्चरों पर सामान लादकर टीले-पहाड़ियां लांघकर यह जोड़ी जा पहुंचती। प्रो कार्वर के भागीरथ प्रयत्नों से दक्षिण के किसानों के आंगनों में गंगा चलकर आ गयी थी। ज्ञान की गंगा, समृद्धि की गंगा।

प्रो कार्वर के इस कार्य से अमेरिका के पूरे दक्षिण प्रदेश का कायापलट हुआ। वहां का जीवन-स्तर ऊंचा उठा। 'चलते-फिरते विद्यालय' ने दक्षिण के जीवन में अभूतपूर्व क्रांति कर दी। दक्षिण की शान बढ़ गयी।

डा वाशिंगटन ने अपने साथी की उपलब्धियों पर उसका अभिनंदन किया। देश-विदेशों में भी इस कार्यक्रम पर विचार हुआ। रूस, पोलैंड, चीन, जापान, भारत, अफ्रीका आदि देशों से लोग टस्कगी आने लगे। 'चलते-फिरते कृषि विद्यालय' के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए। अपने-अपने देश के संदर्भ में इस कार्यक्रम के बारे में विचार होने लगा। जगह-जगह पर प्रो कार्वर को भाषण के निमंत्रण आने लगे। उनके बुद्धि वैभव से और मौलिक अनुसंधानों ने सारे विश्व को विस्मित कर दिया।

टस्कगी को अपनी मेहनत का फल मिला। स्कूल की बहुत प्रगति होने लगी। गांव भी पनपने लगा। आयात-निर्यात लोगों की और सामान की भी, बढ़ने लगी। टस्कगी स्टेशन पर उतारा हुआ माल, स्कूल तक पहुंचाने का झंझट कम करने के उद्देश्य से पास के 'चेहा' स्टेशन से टस्कगी स्कूल तक नया रेलमार्ग बनाया गया।

डा वाशिंगटन ने अपने इन 'सपनों को साकार' करने वाले सहयोगी को वेतन में वृद्धि का प्रस्ताव रखा किंतु प्रो कार्वर ने मनाही कर दी यह कह कर, 'अधिक पैसे लेकर मैं क्या करूं?'

यह बात भी सच ही थी। सारी धरती ही जिसकी अपनी हो, सारे जगत को जो अपना घर मानता हो, वह अपने लिए अलग से कुछ क्या मांगता?

डा वाशिंगटन जहां भी जाते अपने भाषण में अपने उस निस्वार्थी निरंकारी सहयोगी का गौरवपूर्ण उल्लेख अवश्य करते।

'इस देश में जम्मे लोकोत्तर पुरुषों में से प्रो कार्वर एक हैं। काश! हमें ऐसे आधा दर्जन कार्वर और प्राप्त हो सकते।'

'चलते-फिरते कृषि विद्यालय' द्वारा समाज के प्रबोधन का कार्य शुरू करने में सफलता मिली, इस बात के लिए प्रो कार्वर हमेशा कृतार्थता अनुभव करते। वे इस काम को अपने जीवन का महत्वपूर्ण कार्य मानते थे। इस हरितक्रांति से दक्षिण के गरीब किसानों के जीवन में खुशहाली आयी, वहां के जीवन को एक नया अर्थ मिला।

इस 'चलते-फिरते कृषि विद्यालय' का आगे चलकर बहुत विस्तार हुआ। सन् 1918 में अलाबामा सरकार ने इस कार्य के लिए एक बड़ा ट्रक दिलवाया। किसानों ने भी अब इस विद्यालय के महत्व को पहचान लिया था। जब पहला ट्रक पुराना होकर निरुपयोगी हो गया तब किसानों ने चंदा जमाकर 5000 डॉलर्स का एक और बड़ा ट्रक खरीदकर टस्कगी स्कूल को भेंट दिया। किसी समय अमेरिका का यह आग्नेय दिशा का प्रदेश खनिज सम्पत्ति, मनुष्यशक्ति, वनस्पति के लिहाज से भाग्यशाली था। लेकिन अब अपने ही किये कराये से कंगाल बन गया था। फिर उस पर वंशवर्ण भेद के झगड़े। सुजलाम सुफलाम भूमि को बंजर बना डाला था। ऐसी स्थिति में प्रो कार्वर ने अपना कार्यक्षेत्र सिर्फ अपने बंधु-बांधव ध्यान में रखते हुए अपने प्रयासों की बाजी लगा दी थी। दक्षिण को स्वयंपूर्ण बनाने की दृष्टि से अनुसंधान करते रहे। अपनी प्रयोगशाला को किसानों के खेतों, घरों में ले गये।

प्रो कार्वर की समाजसेवा को स्थल काल के बंधन नहीं थे। उनकी अपनी निजी जिंदगी कुछ बची ही नहीं थी। शायद 'मेरा' ऐसा कुछ रहा ही नहीं, अखंड समाज कार्य में कभी कोई बाधा ही उपस्थित न हो, इसलिए वे अविवाहित ही रहे।

उनके बांधवों को उनकी अत्यंत आवश्यकता थी, मौजमस्ती के लिए नहीं, बल्कि अपना जीवनमान संभालने के लिए। प्रो कार्वर ने अपने इस कर्तव्य से कभी आंख नहीं चुरायी।

अमेरिका के गृह-युद्धों के समय नीग्रो समाज में साक्षरता प्रमाण था 3 प्रतिशत और सन् 1910 में वह 70 प्रतिशत हो गया था। डा वाशिंगटन और प्रो कार्वर अभी भी संतुष्ट नहीं थे। शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग कर रहे थे।

वहां के स्कूल का पाठ्यक्रम पूरा करके निकलने वाले विद्यार्थियों का डा वाशिंगटन का उपदेश होता, 'तुम लोग जहां से आये हो, वहीं अपने गांव वापस जाओ। अधिक पैसे वाली नौकरी ढूंढने में समय नष्ट न करो। पैसे मिलें न मिलें, बिना वेतन काम कर लेना लेकिन काम करने का अवसर न छोड़ना।'

अपने प्राचार्य का यह उपदेश प्रो कार्वर भी शिरोधार्य मानते। छुट्टियों का उपयोग वे अपने 'कृषि सुधार' को गतिमान करने के कामों में लगाते।

ऐसी ही छुट्टियों में उन्होंने अलाबामा की खूम्बियों (मशरूम) पर एक लेख लिखा। कृषि विभाग की तरफ से लगायी हुई राष्ट्रीय प्रदर्शनी में खूम्बीयों के पूरे सौ नमूने भेजे। औषधि वनस्पतियों पर शोधकार्य प्रकाशित किया। रोग निवारक वनोषधियों की सूची प्रसिद्ध की।

और एक बार की छुट्टियों में वे 'पॅन अमेरिकन मेडिकल कांग्रेस' में कोलैबरेटर के रूप में वॉशिंगटन गये। वहां पर अमेरिका की औषधि वनस्पतियों की सूची बनाने का काम चल रहा था। इस सूची के लिए प्रो कार्वर ने कुछ वनस्पतियों की जानकारी दी। इनमें से कुछ वनस्पतियां वहां के विशेषज्ञों के लिए पूर्णतया अपरिचित थीं। जब नाम भी मालूम नहीं थे तो वे लोग गुण क्या जानते।

केमर्जिस्ट

दक्षिण अमेरिका में उस साल कपास की बहुत अच्छी फसल हुई। किसानों ने डा कार्वर की सलाह के अनुसार जमीन के गहरे तक खुदाई की थी, खाद पानी ठीक से दिया था। इससे पहले फसलें अदल-बदल कर लगाने से जमीन की ताकत भी बढ़ गयी थी। नतीजा सामने था, फसल बढ़िया हुई थी। दक्षिण के किसानों का डॉक्टर साहब की बुद्धिमत्ता पर, उनकी आंतरिक लगन पर, उनकी कार्यपद्धति पर अनुसंधानों पर पूरा विश्वास हो गया था। डॉक्टर साहब की प्रयोगशाला, अनुसंधान केंद्र के द्वारा सबके लिए खुले रहते थे। कोई भी, कभी भी आ सकता था। अपनी कठिनाई को उसी समय हल करवा सकता था। प्रयोगशाला में प्रात्यक्षिक देख सकता था। इन सब सुविधाओं का असर अब वहां की जिंदगी पर दिखाई देने लगा था। कपास के लिए बाजारों में मांग भी जबरदस्त थी। किसान अब इस खुशी में थे कि इस बार तो छप्पर फाड़कर पैसा मिलेगा।

लेकिन हाय! यह क्या हुआ! एक सुबह एक हादसा हो गया। सब की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। खड़ी फसल के कपास के डोडे जमीन पर गिरे हुए थे। सारी फसल को आध इंची घुन खा गयी थी। घुन कपास पर नहीं, किसानों की आशाओं पर लग गयी थी। बिल्कुल हाथ आयी फसल अब नष्ट हो गयी थी। सर्वनाश हो गया था। पूरी दक्षिण से आक्रोश उठा। टस्कगी तक पहुंचा। अजीब बात यह थी कि सारी दक्षिण के कपास खेतों में हंगामा करने वाले इस संकट ने टस्कगी की तरफ रुख भी नहीं किया था। सिर्फ टस्कगी की कपास सुरक्षित बची थी। प्रो कार्वर इस बात का रहस्य जानते थे। पिछले कई सालों से वे मूंगफली का अध्ययन कर रहे थे। इस मूंगफली की उपज ने ही टस्कगी की कपास को बचाया था। बात ऐसी हुई थी कि सन् 1904 के आसपास ही यह कीटाणु मेक्सिको से टेक्सास प्रदेश में प्रविष्ट हुई। वहां की कपास को तहस-नहस कर 1910 के करीब अलाबामा में घुसी। मायकॉलॉजिस्ट होने के नाते प्रो कार्वर उसके विध्वंसक रूप को जानते थे। कपास की फसल का नाश करने वाली इस कीटाणु का बंदोबस्त तीव्र रासायनिक दवाईयों से हो सकता था। लेकिन गरीब किसान इतनी मंहगी औषधियां कैसे खरीदते? औषधियां छिड़कने के अलावा जमीन की गहरी तह तक खोदकर इस विषाणु को खत्म करना आवश्यक था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि कपास पर बारबार आनेवाले इस संकट से बचने के लिए कपास की पैदावार का क्षेत्र ही मर्यादित करना आवश्यक था। जिससे अगर कभी किसी संकट का मुकाबला करना पड़े तो किसानों के बलबूते की बात हो। कपासी की लागत कम करके उसकी जगह दूसरी ऐसी फसलें उपजाना आवश्यक था जिन पर इस विषाणु का प्रभाव न पड़ता हो। जमीन की उर्वराशक्ति बढ़ाने वाली दलहन वर्ग की, शकरकंद या मूंगफली जैसी उपजें मानवी जीवन के लिए उपयोगी थीं। इस तरह फसलें बदल कर लगाने से लाभ हो सकता था किंतु फसल बदलने की सलाह लेने से पहले इन नयी फसलों की उपयुक्तता की, उनके गुणधर्मों की जांच-पड़ताल करना जरूरी था। उनका खाद्यान्न के रूप में उपयोग और औद्योगिक उत्पादन में महत्व के बारे में जान लेना जरूरी था। उनके उपयोगी होने के बारे में स्वयं को विश्वास होना जरूरी था। इसीलिए पिछले वर्ष से डा कार्वर मूंगफली और शकरकंद पर शोधकार्य कर रहे थे। उन्होंने देखा कि, 'किसी खास फसल पर विशिष्ठ प्रकार के विषाणु ही पनपते हैं। वह फसल उन्हें रास आती है। यदि फसल बदल दी जाये तो नयी फसल पर यह विषाणु पनपते नहीं बल्कि भुखमरी के कारण नष्ट हो जाते हैं। प्रकृति की इस विविधता के कारण अलग-अलग किस्म के कृमि कीटकों का जीवनसंग्राम चलता रहता है और प्रकृति का स्वाभाविक संतुलन बना रहता है। यदि बरसों तक एक ही फसल बारबार लगायी जाये तो उस पर पलने वाले कीटाणुओं की संख्या बढ़ती ही चली जाती है। कीटाणुओं का शक्तिशाली साम्राज्य बन जाता है। प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाता है और परिणाम भुगतने पड़ते हैं अनाड़ी किसानों को।' टस्कगी की कपास को बचाया था फसलों के बदलाव ने। मूंगफली ने, शकरकंद ने। निराशाग्रस्त किसानों को प्रो कार्वर ने मूंगफली का महत्व समझाना शुरू किया। मूंगफली की पैदावार से जमीन की बढ़ने वाली ताकत और उसके कारण मूंगफली के बाद ली जानेवाली पुसल को होनेवाला लाभ ये दोनों ही बातें किसानों को बतलायी जातीं। लेकिन इस अनाड़ी किसानों को समझ में यह बात कैसे आती? उनके हिसाब से मूंगफली तो बस सुअरों को खिलाने लायक थी। अब कभी-कभी मुट्ठी-दो-मुट्ठी दाने सेंककर नमकीन बनाकर बच्चों को खिलायें बस! फिर भी अपनी बात ऐसे ही अधूरी छोड़नेवालों में से नहीं थे डा कार्वर। उन्होंने उपायों की खोज जारी रखी।

बड़े-बड़े जमींदार किसान भी मूंगफली लगाने के लिए तैयार नहीं थे, तो मोटे-मोटे किसानो की बात क्या?

आखिर डा कार्वर ने एक उपाय खोज ही निकाला।

डा वाशिंगटन की तरफ से मकान काऊंटी के नौ-दस जाने-माने किसानों को भोजन का निमंत्रण भिजवाया। स्कूल की छात्राओं की मदद से पूरा खाना तैयार किया। सूप, मुर्गी, सब्जी, डबलरोट, सलाद, आईस्क्रीम, कूकीज, कॅन्डी और अंत में कॉफी!

'खाना बड़ा स्वादिष्ट था,' मेहमानों ने दिल खोलकर तारीफ की। अब प्रो कार्वर ने रहस्य खोला। खाने में हर चीज मूंगफली से बनायी गयी थी। यहां तक कि मुर्गी भी नकली थी।

धीरे-धीरे किसानों के मन से मूंगफली की तरफ से उदासीनता दूर होने लगी। थोड़ी सी चाह निर्माण होने लगी। घुन, कृमी, कीटकों का डर एक तरफ और दूसरी तरफ प्रो कार्वर की निरापद उपज। किसानों ने अब सुरक्षित राह चुनी।

अब प्रो कार्वर ने मूंगफली के बारे में संपूर्ण जानकारी देने वाली पत्रिका छपवायी। मूंगफली की खाद्यान्न के रूप में गुणवत्ता, उससे मिलने वाले प्रोटीन, मूंगफली से निकलने वाला श्रेष्ठ दर्जे का खाद्य तेल, उसके पत्ते, डंठलों की पशु खाद्य के रूप में उपयुक्तता और उसकी पैदावार के बाद जमीन की बढ़ने वाली ताकत। इस पत्रिका का ठोस परिणाम देखने में आया। कुछ समझदार किसानों ने मिलकर विचार-विनिमय किया। डॉक्टर साहब की सलाह के अनुसार मूंगफली की बुआई की। भरपूर उपज निकली। उसमें से कुछ माल तो उत्तर अमेरिका के बाजारों में बिका। बचे हुए माल से उन लोगों ने आइस्क्रीम, पनीर, केक्स

आदि पदार्थ बनाये। मूंगफली लगानेवालों को जो लाभ हुआ उसे देखकर और किसानों ने भी मूंगफली की पैदावार की। उस साल जबरदस्त फसल हुई।

उत्तर अमेरिका के मूंगफली खरीदनेवालों को सिर्फ नमकीन मूंगफली के बारे में ही जानकारी थी। अत: उतना ही माल बिका जितना इस काम के लिए आवश्यक था। बाकी का माल पड़ा रहा। फिर से भाव गिरने लगे। फिर किसानों का आक्रोश। अब क्या हो? प्रो कार्वर के आज तक के परिश्रम को भूलकर दक्षिण के किसान उन्हें कोसने लगे। गोरे किसान तो 'निग्गर' कहकर दोष देने लगे। सारी मुसीबत की जड़ प्रो कार्वर को माना गया।

प्रो कार्वर ने एक भूत गाड़ा था। लेकिन दूसरा अब सामने आ खड़ा हुआ था। आसपास के खेतों का मुआयना किया। हर जगह इस भुतही परिस्थिति का दर्शन हुआ। हर खलिहान में मूंगफली की राशियों का अंबार लगा था। कहीं-कहीं तो माल सड़ने भी लगा था। अगर इसे ऐसे सड़ने के लिए ही छोड़ना है तो फिर लगाया ही क्यों? अब तो बूढ़े किसान भी कोसने लगे।

प्रो कार्वर जिम्मेदारियों को टालने वालों में से नहीं थे। 'मैंने सलाह दी, उसके इच्छा अनुसार अच्छी उपज आयी। अब इसका आप चाहें जो करो, उपज का क्या करना चाहिए, यह बताना मेरा काम नहीं।' ऐसी विचारधारा नहीं थी डा कार्वर की। उनका विचार था कि कपास की जगह लगायी हुई फसल की बाजारों में भी मांग होनी चाहिए। कपास की जोखिम से बचने के लिए मूंगफली निश्चित ही अच्छी थी, सहज उपजनेवाली, जमीन के लिए लाभदायी लेकिन 'आर्थिक व्यवहार' में भी वह कपास की बराबरी का होना आवश्यक था। प्रो कार्वर ने इस काम को अपनी ही जिम्मेदारी माना और अपने आप को प्रयोगशाला में कैद कर लिया।

हमेशा का बोरे का ऍप्रन चढ़ाकर अपने 'पिता' के साथ में शोधकार्य आरंभ हुआ।

मूंगफली के थोड़े से छिले हुए दाने लिए। उन्हें पीसा, महीन पीसा। फिर थोड़ा गरम किया हाथ मशीन में डालकर उस पर तेल छूटने तक दबाव दिया। एक कटोरी तेल निकाला। इस तेल की अलग-अलग तापमानों पर परीक्षा की। आशा से कहीं अधिक सफलता मिली। इस तेल के सामान बनाने में प्राणियों की चरबी के दोष नहीं थे। मार्जरीन साबुन, रसोई और प्रसाधन के सामान बनाने में प्राणियो की चरबी की जगह इस तेल का उपयोग अधिक सरलता से हो सकता है।

तेल निकाल कर बचे हुए अवशेष में थोड़ा पानी मिलाया, गरम किया, चखकर देखा। स्वाद के लिए चुटकी भर नमक और शक्कर मिलायी, चम्मच चलाकर थोड़ा ठंडा किया, चखकर देखा। अरे! यह तो एकदम स्वादिष्ट है।

दूध तो तैयार हो गया था। अब थोड़ी सी मूंगफली की गंध आ रही थी। लेकिन कोई हर्ज नहीं, इसे तो हटाया जा सकता है। मुट्ठीभर दाने से गिलास भर दूध! और फिर यह दूध गुणधर्मों में गाय के दूध से जरा भी कम नहीं था।

फिर प्रयोगों का दौर शुरू, प्रयोग के बाद प्रयोग, और प्रयोग! फिर से प्रयोग, और प्रयोग! खाने के सुध नहीं। खाने की थाली अनछुई बाहर आती। किसी का दिल न माना, ना रहा गया और दरवाजा खटखटा दिया, जवाब मिलता, 'हमें (!) परेशान न करो।' ऐसे ही छह दिन पूरे बीत गये। सातवीं रात डा कार्वर प्रयोगशाला से निकले, अपने कमरे में आये और थोड़ा सोये।

सवेरे अपने गिने-चुने विद्यार्थियों को प्रयोगशाला में ले गये। विद्यार्थियों का पूरा-पूरा विश्वास था कि कुछ अपूर्व अनुपम बात देखने को मिलेगी। प्रयोगशाला में टेबलों पर सजी थीं मूंगफली से बनायी हुई दो दर्जन वस्तुएं।

इसके बाद उन्होंने मूंगफली के दानों का रासायनिक विश्लेषण करके, उसके घटकों का रासायनिक विघटन करके अलग-अलग घटकों का विभिन्न पद्धतियों से, भिन्न प्रमाणों में संयोग करके तीन सौ वस्तुएं बनायीं। उदाहरण के तौर पर रेझिन, चरबी, शक्कर, स्याही, बूट-पालिश, रंग, खाद, दाढ़ी बनाने का साबुन, चिकना कागज, कृत्रिम टॉइल्स, ग्रीझ, मक्खन, दूध, पनीर, लॅस्टिक, सौन्दर्य प्रसाधन के सामान, शैम्पू, सिरका, तैयार कॉफी, पर्यायी क्विनाइन, लकड़ी के लिए रंग, बालों की रूसी निकालने की दवाई, खाने का तेल आदि। मानवी जीवन में आवश्यक करीब-करीब सभी चीजें उन्होंने मूंगफली से बनायी थीं।

अपने अनुसंधान का स्पष्टीकरण करते हुए वे कहते, 'विधाता ने हमें तीन राज दिए हैं। खनिज, वनस्पति और प्राणीजगत, अब उसने एक नयी सृष्टि के द्वार खोले हैं। इस चौथी सृष्टि में संयोग करके कृत्रिम रीति से वस्तुएं बनायी जायेंगी। मनुष्य ने अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए अपने आपको तीन बार बदला। पहले तो उसने प्राकृतिक अवस्था में उपलब्ध वस्तुओं से अपनी आवश्यकताएं पूरी कीं। फिर उसने इन वस्तुओं को अपनी आवश्यकता के अनुसार बनाकर उनका प्रयोग किया। उसके बाद उसने

इन वस्तुओं को संपूर्णतया या अंशत: बदलकर नयी चीजों को निर्माण कर अपनी बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा किया। सृष्टि की सीमाएं बढ़ायीं।

दक्षिण की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था को औद्योगिकरण का साथ मिला। आधुनिक कृषि पद्धति में उत्पादन के काम में औजारों की आवश्यकता होती है। इन औजारों के निर्माण में और आर्थिक संतुलन बनाये रखने में नये-नये उद्योगों से मदद मिलती है। प्रो कार्वर का विचार था कि दक्षिण अमेरिका के सर्वांगीण विकास के लिए कृषि के साथ-साथ इन नये उद्योग समूह के निर्माण को भी गति मिलनी चाहिए। यही सोचकर उन्होंने वहां की मिट्टी, कपास, मूंगफली इन से और क्या-क्या उत्पादन हो सकते हैं यह देखने के लिए अपनी प्रयोग मालिकाएं जारी रखीं।

प्रो कार्वर ने वनस्पतिजन्य पदार्थों का रासायनिक विश्लेषण कर अलग-अलग निकाले हुए घटकों को विभिन्न पद्धतियों से, भिन्न अनुपातों में संयोग करके बिल्कुल ही नये पदार्थ तैयार किए, उनके इस कार्य से एक नये शास्त्र का उदय हुआ। इस शास्त्र का नाम था 'केमर्जी'।

'केमर्जी' के माने कार्यरत 'पायोनिअर्स ऑफ प्लेन्टी।'

इस पुस्तक में खिस्ती बोर्थ ने कहा है, 'प्रो कार्वर एक आद्य केमर्जिस्ट, सर्वश्रेष्ठ केमर्जिस्ट। 'केमर्जी' इस शब्द के जन्म से 25 वर्ष पहले ही प्रो कार्वर की प्रयोगशाला में इस शास्त्र का जन्म हो चुका था। उनके द्वारा वनस्पतिजन्य पदार्थों से बनाये हुए प्लास्टिक, कृत्रिम संगमरमर का फर्श इस बात का साक्षी है।

यद्यपि कृषि का प्रमुख उद्देश्य अन्न धान्य उत्पादन होता है, फिर भी कुछ कृषि उत्पादनों का उपयोग कारखानों में लगने वाले कच्चे माल के रूप में हो सकता है। कृषि उत्पादनों से रासायनिक द्रव्य मिलते हैं। इस काम में रसायनशास्त्र की 'केमर्जी' शाखा का उपयोग होता है। डा कार्वर की 'केमर्जी' के कारण कृषि पद्धति में और उत्पादन में बहुत सुधार हुए। उद्योग धंधों के लिए कच्चा माल जुटाने में किसानों को रुचि उत्पन्न हुई। जमीन में छिपे इस 'गुप्त धन' की खोज हुई।

'अब नये सुनिश्चित भविष्यकाल में प्रयोगशालाएं खेतों में ही हुआ करेंगी। कृषि उत्पादनों के सान्निध्य में ही वे पनपेंगी।' डा कार्वर का यह सपना अब साकार हो रहा था।

आज डा कार्वर के कार्य का वृक्ष कितना विस्तार पा गया है। कितने ही कृषि विशेषज्ञ तैयार हुए हैं। कृषि विभाग ने अनेक प्रयोगशालाएं, कितने ही अनुसंधान केंद्र स्थापित किए हैं। कृषि विज्ञान की दिन-ब-दिन प्रगति हो रही है।

डा कार्वर के कारण टस्कगी का महत्व असाधारण रूप से बढ़ गया था। देश-विदेश से जाने-माने विशेषज्ञ लोग डा कार्वर से मिलने, उनकी सलाह लेने, उनसे विचार-विनिमय करने टस्कगी आने लगे। वर्ण भेद, वंशभेद की दीवारे ढह गयीं। डा कार्वर के नाम आने वाली चिट्ठियों की संख्या इतनी बढ़ गयी, सिर्फ 'मूंगफली वाला टस्कगी' इस पते पर आनेवाली अनगिनत चिट्ठियां डा कार्वर तक पहुंचाने के लिए पोस्ट ऑफिस को टस्कगी स्कूल के पास एक स्वतंत्र शाखा खोलनी पड़ी।

उत्तर अमेरिका से आये हुए एक मेहमान ने जब डॉ कार्वर की मेज पर चिट्ठियों का अम्बार देखा तो कहा,

'डॉ कार्वर, सचमुच आपने आपके समाज पर कितने उपकार किये हैं! बहुत बड़ा कार्य किया है आपने!!'

'बेटे, मैंने तो सिर्फ ईश्वर के कार्य में हाथ बंटाया है। मुझे विश्वास है कि इस काम के लिए मेरा चुनाव करते समय ईश्वर ने वर्ण की अपेक्षा मानव जाति की जरूरतों को अधिक महत्व दिया होगा।'

सन् 1915 में अलाबामा की कॉफी काऊंटी ने डॉ कार्वर की सलाह के अनुसार मूंगफली की पैदावार की। कपास की फसलों पर आने वाले कीटाणुओं के संकट ने कॉफी काऊंटी का दीवाला निकाल दिया था। फिर भी उन लोगों ने हिम्मत बांधी और फसल बदलने का निर्णय लिया।

डॉ कार्वर का कहना माना, खेती की पद्धति में आमूल परिवर्तन किया। चार वर्षों में कॉफी काऊंटी की काया पलट हो गयी। हर कहीं खुशहाली छा गयी। सन् 1919 में काऊंटी के मुख्य शहर में मूंगफली छीलकर दाने साफ करने का कारखाना लगाया गया। डॉ कार्वर के उपकारों की स्मृति में गांव के बीचोंबीच एक स्मारक बनाया गया। उस पर लिखा है:

'कपास पर आने वाले कीटाणुओं का अध्ययन करके, उसके संहारक रूप जानकर हमें उस संकट से बचाने वाले डॉ कार्वर के हम शतश: आभारी हैं।'

डॉ कार्वर अब शकरकंद पर अनुसंधान कर रहे थे। दक्षिण के किसानों को अब डॉ कार्वर पर पूरा विश्वास हो गया था। उनकी बतायी राह कभी गलत नहीं हो सकती। मूंगफली की उपज से बहुत लाभ हुआ था, शकरकंद से वैसा ही लाभ होगा। इस विश्वास से किसानों ने शकरकंद की पैदावार के लिए बड़े उत्साह से हामी भरी थी।

शकरकंद की उपज तो बेहिसाब हुई लेकिन वही हमेशा का रोना, बाजारों में माल की मांग नहीं। खलिहानों में, गोदामों में माल पड़ा हुआ था, सड़ने का डर था। फिर घबराये हुए किसानों का आक्रोश शुरू हुआ। लेकिन इस बार डॉ कार्वर पहले से ही सावधान थे। गोदामों के, खलिहानों के माल की 'व्यवस्था' लगाने के काम में जुट गये थे। हमेशा की तरह अपने आप को प्रयोगशाला में जकड़ लिया था। प्रयोग के बाद प्रयोग हो रहे थे। उन्होंने शकरकंद से क्या कुछ नहीं बनया! करीब-करीब सवा सौ उपयुक्त वस्तुएं! स्टार्च, आटा, खाद्यान्न, कपड़े और रेशम के लिए रंग, सिरका, स्याही, कृत्रिम रबर आदि। सन् 1917 में प्रथम महायुद्ध के समय अमेरिकन सेना को गेहूं के अभाव का संकट झेलना पड़ा। अमेरिकन सेना के अधिकारियों को जानकारी मिली की टस्कगी स्कूल की प्रयोगशाला में शकरकंद से डबलरोटी बनायी जाती है। अत: उन्होंने डॉ कार्वर को वॉशिंगटन बुलवाया। डॉ कार्वर ने वॉशिंगटन जाकर सेना प्रमुख अधिकारी को शकरकंद के गुणधर्म, उसकी उपयुक्तता, उससे बन सकने वाले पदार्थ, डबलरोटी, बिस्कुट्स आटे के रूप में संचय आदि बातें प्रयोगों के साथ बतलायीं। उन्होंने कहा, 'यह पदार्थ सिर्फ पर्याय के रूप में नहीं, स्वतंत्र रूप से आहार के अभावों को दूर करने में समर्थ है। यह पदार्थ सर्वगुण सम्पन्न है।'

शकरकंद की विशेष बात यह थी कि निर्जलीकरण (सुखाने) करने के बाद 100 पौंड शकरकंद का आटा एक छोटे से डिब्बे में रखा जा सकता है। और दीर्घकाल तक टिका रह सकता है। अमेरिकन सरकार को यह सारी बातें पसंद आयीं। उन्होंने युद्ध समाप्त होते ही निर्जलीकरण प्रकल्प लगाने की योजना बनायी।

दुख की बात एक ही थी। यह अपूर्व सफलता देखने के लिए डॉ वांशिंगटन जीवित नहीं थे। (मृत्यु 1915)

किन्तु डॉ वांशिंगटन अपनी मृत्यु से पहले एक बड़ा नेक काम कर गये थे। प्रो कार्वर अपना पूरा समय अपने अनुसंधान के कार्य में दे सकें इसलिए उन्हें अध्यापन के कार्य से छुटकारा दिलाया गया था।

डॉ वांशिंगटन का विचार था कि मनुष्य के कार्यों पर बंधन न पड़े। बंधनों से कार्य मर्यादित हो जाता है। स्कूल की जिम्मेदारियां निभाते-निभाते प्रो कार्वर का कार्य मर्यादाओं में अटक कर रह जायेगा। यही बात सोचकर उन्होंने प्रो कार्वर को स्कूल के बाकी कामों से मुक्त किया। स्वतंत्र कृषि विभाग की स्थापना करके प्रो कार्वर को अनुसंधान केंद्र के प्रमुख पद पर नियुक्त किया।

यह सन् 1910 की घटना है। इस नियुक्ति के बारे में प्रो कार्वर ने अपने गुरु श्री विल्सन को चिट्ठी लिखी। उत्तर में श्री विल्सन ने लिखा था:

'जिस शास्त्र का रोज की जिंदगी में उपयोग न हो वह शास्त्र मृतप्राय है। प्रयोगशाला में जो अन्वेषण करते हो, उन खोजों का समाज को उपयोग होने दो।'

'तुमने चित्रकला की पढ़ाई अधूरी छोड़कर कृषि विभाग को क्यों चुना?' मेरे इस प्रश्न का तुमने जो अविस्मरणीय उत्तर दिया वह लाजवाब था। 'मेरे बांधवों के लिए कृषि विज्ञान ही उपयोगी सिद्ध होगा।' एक छात्र का यह उत्तर मैं कैसे भूल सकता हूं।'

तुम्हें अपने बांधवों की अनमोल सेवा करने का सुनहरा अवसर मिला है। तुम सच्ची लगन से अपने बांधवों की सेवा करोगे इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है। तुम्हारे ऊंचे और पवित्र सिद्धातों का मुझे अहसास है। मुझे अब तुम्हारी किसी असाधारण उपलब्धि से भी आश्चर्य नहीं होगा क्योंकि तुम्हारी मौलिक अन्वेषक प्रकृति को जानता हूं। तुम्हारी जिज्ञासा तुम्हें कभी चैन से नहीं बैठने देगी।'

'बेटे, तुमने हमारा जीवन सार्थक कर दिया!'

सन् 1908 के जुलाई महीने में प्रो कार्वर मिसोरी राज्य के दौरे पर थे। कितने बरसों बाद वे डायमंउ ग्रोव जाने वाले थे।

अपने इकलौते भाई जिम की कब्र पर उन्होंने कुछ घड़ियां बितायीं। उस समय हृदय में कैसी छटपटाहट हुई, वे ही जानते थे।

एक रात मारिया बुआ के घर बीती। 'खूब पढ़ना और अपने बांधवों की सेवा करना।' ऐसा कहकर बुआ ने जो आन दिलायी

थी उसे तो जार्ज ने प्राण प्रतिज्ञा की तरह निभाया था। कितनी खुशी हुई बुआ को अपने जार्ज से मिलकर!

वहां से फिर जार्ज कार्वर डायमंड ग्रोव गये। मोजेस चाचा अब छियानवे बरस के हो गये थे, वृद्ध और विकलांग। सूसान चाची स्वर्गवासी हो चुकी थीं। जार्ज के आने से मोजेस चाचा का दिल खुशी से भर आया था, उन्हें बार-बार सूसान चाची की याद आ रही थी। 'काश! आज वह होती! उसने ही तो मां का प्यार देकर संभाला था इसे, बड़ा किया था। उसने ही तो . . .'

बीती याद करते-करते रात गयी। सुबह जब जार्ज विदा मांगने लगा तो मोजेस चाचा उदास हो गये। मन जाने कैसा-कैसा हो गया। तीस पैंतीस साल पहले ज्ञान की खोज में निकला हुआ वह दुबला-पतला छोटा सा जार्ज आज विश्वविख्यात शास्त्रज्ञ बनकर उनके सामने खड़ा था। लंबा तगड़ा, शरीर से भी और ज्ञान से भी।

अपनी बुझती नजरों से उसे जी भरकर देखते-देखते मोजेस चाचा बोले, 'तुम जिस राह जाना चाहते थे उस पर मंजिल तक पहुंच गये बेटे, समाज में अपना स्थान बना लिया। मुझे तुम पर बहुत नाज है। काश! सूसान भी आज होती, यह खुशी देख पाती। बेटे, तुमने तो हमारा जीवन ही सार्थक कर दिया।'

यही उनकी आखिरी भेंट थी।

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय

सन् 1916 में लंदन की रॉयल सोसायटी फॉर आर्ट्स इस संस्था ने प्रो कार्वर को अपना सदस्य बनाया। (सुप्रसिद्ध ब्रिटिश उपन्यासकार सर हेनरी जॉन्सटन ने अपने आत्मचरित्र में और 'द नीग्रो इन द न्यू वर्ल्ड' इस पुस्तक में प्रो कार्वर की गौरवपूर्ण शब्दों में जानकारी दी। इन पुस्तकों की वजह से ब्रिटिश जनता को प्रो कार्वर के बारे में पता चला होगा और यह सदस्यता दी गयी होगी।)

सन् 1921 में प्रो कार्वर को यूनाइटेड पीनट्स ग्रोअर्स असोसियेशन की तरफ से कांग्रेशनल वेज एंड मीन्स कमेटी के सामने एक प्रस्ताव रखने के लिए जाना पड़ा। सन् 1919 में मूंगफली उपजाने वाले किसानों ने यूनाइटेड पीनट्स ग्रोअर्स असोसियेशन इस संगठन की स्थापना की थी।

अमेरिकन मूंगफली की अपेक्षा चीन, जापान आदि पूर्वी देशों से आनेवाली मूंगफली सस्ती बिकती थी। इसका एक कारण यह था कि पूर्वी देशों की सस्ती मजदूरी और दूसरा कारण था इस मूंगफली पर आयात कर भी कम था। इन बातों का परिणाम यह हुआ कि अमेरिकन मूंगफली की बाजारों में मांग नहीं होती। इस समस्या का मुकाबला करने के लिए सरकार को मूंगफली के महत्व को समझाना जरूरी था। अब ऐसे काम के लिए पूरी अमेरिका में प्रो कार्वर से अधिक योग्यता वाला दूसरा कौन होता? फिर भी एक जार्जियन गोरे किसान ने कह ही दिया, 'यदि अब हमें किसी निगर से व्यापार सीखना पड़े तो समझो हमारा पूरी तरह से सफाया हो गया है।'

सन् 1920 में मांटगोमेरी में इसी से संबंधित एक सभी होनेवाली थी। असोसिएशन ने इस सभा में अपनी तरफ से भेजने के लिए डा कार्वर को आमंत्रित किया था। अपनी 'चहेती' मूंगफली का गुणगान करने का अवसर डा कार्वर छोड़ देते तो अचरज की बात होती।

13 सितंबर 1920 को प्रो कार्वर मूंगफली से बनायी हुई विभिन्न चीजों के भरे दो अच्छे भल पिटारें लेकर मांटगोमरी के सिटी हाल में पहुंचे। ऐन दोपहर के वक्त दोनों हाथों में भारी वजन था। नमूने की चीजें और प्रयोग की बोतलों से पिटारे बहुत भारी हो गये थे। उस पर दोपहर की कड़कती धूप। प्रो कार्वर पसीने-पसीने हो रहे थे, थककर चूर हो गये थे। सिटी हॉल पहुंचने में उन्हें देर हो गयी थी। उनकी राह देखकर पीनट असोसिएशन के सदस्य दोपहर के भोजन के लिए किसी होटल में चले गये थे। परंतु दरवाजे पर ही उन्हें दरबान ने रोक दिया।

'कालों को इस होटल में प्रवेश नहीं।'

प्रो कार्वर ने हाथों का भार नीचे रखा, पसीने से लथपथ, भूख और थकान से चूर, साठ साल की उम्र से अधिक वाले प्रो कार्वर बड़ी मुश्किल से पैरों पर खड़े रह पा रहे थे और फिर दरबान से कोई क्या बहस करे!

उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा, 'मेरा नाम कार्वर, मुझे यूनाइटेड पीनट्स ग्रोअर्स असोसियेशन की सभा के लिए बुलाया गया है।

उन लोगों को मेरे आने की सूचना दे दो तो अच्छा हो।'

दरबान ने संदेश भिजवाया। फिर प्रो कार्वर को पिछले दरवाजे से अंदर ले जाया गया। एक बड़े से कक्ष के बाहर खड़ा रखकर कहलवाया गया कि 'मूंगफली वाले किसान अभी-अभी खाना खाने बैठे हैं। आप कुछ समय प्रतीक्षा करें।'

कुछ वर्षों बाद इस घटना का याद करके उन्होंने कहा, 'इस उपेक्षा के, अपमान के उत्तर में सामान उठाकर चल पड़ना मेरे कोई कठिन काम नहीं था। मैं भी इन्सान हूं। मान-अपमान की भावनाएं मुझ में भी हैं। उसी क्षण उसी पल वहां से चल पड़ूं ऐसी प्रबल इच्छा मन में उठी थी। लेकिन मैंने विचार किया कि मैं अपने व्यक्तिगत मान-सम्मान के लिए या उद्योगपति, व्यापारियों की सम्पत्ति की वृद्धि के लिए तो मैं यहां आया नहीं, मैं तो आया हूं, उन गरीब किसानों के लिए जिन्होंने मेरे भरोसे मूंगफली की उपज की थी। इस संगठन के प्रस्ताव का लाभ उन गरीब किसानों को मिल सके इसलिए तो मैं यहां आया हूं।'

सभा शुरू होते-होते दोपहर के दो बज गये। उपस्थित सभी सदस्य बड़े उदासीन और अलिप्त भाव से बैठे थे। अपने साथ घटी हुई घटना का कोई भी चिन्ह, कोई संकेत अपनी तरफ से न दर्शाते हुए प्रो कार्वर ने अपना काम शुरू किया। उन्होंने बड़े-बड़े पिटारों से एक-एक चीज निकालकर प्रदर्शनी लगायी। अपनी 'चहेती' मूंगफली से बनी चीजें। इतनी विविध वस्तुएं, इतने सारे व्यंजन देखकर सभा आवाक हो गयी।

प्रो कार्वर हर पदार्थ की विस्तार से जानकारी दे रहे थे। गाय के 100 पौंड दूध से केवल 10 पौंड पनीर (चीज) मिलता है। मूंगफली के 100 पौंड दूध से 20 पौंड पनीर (चीज) मिलता है। उसी तरह मूंगफली में विटामिन 'बी' होता है जो 'पेलाग्रा' बीमारी के इलाज के लिए गुणकारी है। ऐसी सारी जानकारी सुनकर सभा स्तब्ध रह गयी। आंखों के सामने इतनी चीजें होने पर भी किसी को विश्वास नहीं हो रहा था। सब ने प्रदर्शनी देखने के लिए भीड़ लगा दी। अंत में सभा के सारे सूत्र अधिकार में लेकर अलाबामा के श्रीयुत स्टिगाल ने कहा:

'अभी-अभी प्रो कार्वर ने मूंगफली के बारे में जो कुछ बताया और जो चीजें प्रत्यक्ष दिखलायीं, उसके बाद मेरे पास कहने के लिए कुछ बचा ही नहीं। सिर्फ मैं ही नहीं, इस सभा मे उपस्थित सज्जनों में से कोई भी यह दावा नहीं कर सकेगा कि देश में और भी कोई ऐसा औद्योगिक व्यवस्था है जिससे मानवी जीवन की आवश्यकताएं इस तरह पूरी की जाती हैं। अगली अमेरिकन कांग्रेस में मैं इस विषय में प्रस्ताव रखूंगा और आप विश्वास रखें कि उस समय इस प्रस्ताव की विस्तार से जानकारी देने के लिए प्रो कार्वर मेरे साथ होंगे।'

तालियों की गूंज से श्री स्टिगाल के भाषण का स्वागत हुआ। मूंगफली की आयात पर ज्यादा चुंगी लगाना चाहिए, इस बात पर पूरी सभा एक मत थी।

डा कार्वर को पीनट्स ग्रोअर्स असोसियेशन की तरफ से बेज एंड मीन्स कमेटी की सभा में उपस्थित रहने के लिए बुलाया गया। तार पर तार आ रहे थे। 20 जनवरी 1921 को वॉशिंगटन में उपस्थित होना था।

टस्कगी नीग्रो स्कूल में इन बेतार के तारों ने उत्सव का वातावरण निर्माण कर दिया था। हर कोई उनका अभिनंदन करने के लिए लालायित था। टैरिफ बिल की चर्चा में भाग लेने डा कार्वर वॉशिंगटन जायेंगे। स्कूल के लिए कितने सम्मान की घटना। बस सिर्फ एक बात ऐसी थी जिसके लिए सब चिंतित थे।

डा कार्वर का सूट! अट्ठाइस वर्ष पहले कॉलेज के दोस्तों ने प्यार से जबरदस्ती पहनाया हुआ सूट, उसी सूट से आजतक काम चल रहा था। हर कोई इन्हें इस बात के लिए चिढ़ाता भी था, नये कपड़े बनवाने का अनुरोध करता था। लेकिन नहीं! वे तो मानते ही नहीं। आखिर उन्होंने सबसे साफ शब्दों में कह दिया:

'देखो, अगर उन लोगों को मेरे कपड़े 'नये' होने से मतलब है तो मैं एक नया सूट बॉक्स में डालकर भेज देता हूं, लेकिन यदि उन्हें मुझसे मतलब है तो फिर मैं चाहें जैसे कपड़े पहनकर जाऊं, उन्हें मुझे स्वीकारना होगा।'

वेज एंड मीन्स कमेटी के सदस्यों को पीनट ग्रोअर असोसियेशन के प्रस्ताव की भनक पड़ गयी थी। कमेटी के हिसाब से मूंगफली फालतू चीज थी इसलिए उनके विचार से उस पर की चुंगी कर का प्रस्ताव एक खासा मजाक था। इसलिए कमेटी ने इस प्रस्ताव के लिए सिर्फ 10 मिनट की अवधि दी थी।

प्रो कार्वर ने अपनी सस्ती पर उपयोगी मूंगफली के बारे में 10 मिनट में ही ऐसी रोचक जानकारी दी कि सारी कमेटी का

कौतुहल जाग उठा। उस अद्‌भुत जानकारी से सारी सभा दंग रह गयी। 10 मिनट का समय समाप्त होती ही प्रो कार्वर अपने स्थान की ओर लौटने लगे तब अध्यक्ष सहित सभी सदस्यों ने उनसे और विस्तृत विवेचन के लिए अनुरोध किया।

प्रो कार्वर ने सारी सभा को जैसे जीत लिया था। मजाक का विषय बनी, उपेक्षित मूंगफली के लिए अब सब के मन में उत्सुकता जाग उठी थी।

प्रो कार्वर ने अपने साथ लाये हुए बड़े पिटारों में से छोटी-छोटी बोतलें, कांच की नलियां आदि का खजाना बाहर निकाला और उनकी एक छोटी सी प्रदर्शनी मेज पर सजायी। मूंगफली से बनी अनगिनत वस्तुएं। स्वादिष्ट व्यंजन। इन सब पदार्थों की विस्तार के साथ जानकारी। साथ में मूंगफली की औषधियां और उनका औद्योगिक महत्व भी बताया। जब उन्हें ख्याल आया कि वे बड़ी देर से अपनी चहेती मूंगफली के बारे में बोल रहे हैं, उन्होंने अपना भाषण समाप्त करना चाहा तो अध्यक्ष महोदय बोल उठे:

'आपके लिये समय का बंधन नहीं है। आप इस विषय में अधिक से अधिक जानकारी दें तो यह कमेटी आपका उपकार मानेगी।'

प्रो कार्वर ने इस अवसर का पूरा-पूरा लाभ उठाया। अपनी अनोखी मजाकिया शैली में उन्होंने मूंगफली से कैसे तीन-सौ पदार्थ बनाये जा सकते हैं यह बतलाया। मूंगफली से 'शाकाहारी' मांसाहार कैसे बनाया जा सकता है यह बताया। यह पदार्थ स्वाद में बिल्कुल मांसाहारी पदार्थों की ही तरह होते हैं। मूंगफली के छिलकों से तीस तरह के पक्के रंग बनाये जा सकते हैं। सारांश यह कि मूंगफली का कोई भी भाग बेकार नहीं, हर भाग से कोई न कोई उपयोगी पदार्थ बन सकता है। ऐसा विश्वास दिलाया।

'क्या यह सारी चीजें आपने स्वयं बनायी हैं?'

'जी, हां!'

'कहां पर?'

'यह सारी चीजें मैंने हमारी प्रयोगशाला में बनायी हैं। मैं अलाबामा के टस्कगी स्कूल का शिक्षक हूं। हम लोग शकरकंद पर भी अनुसंधान कर रहे हैं। अभी तक हमने उससे 100 के करीब वस्तुएं बनाने में सफलता पायी है।'

'क्या सचमुच ऐसा है?' सारी सभा हैरान हो उठी।

'जी, हां। शकरकंद से भी स्याही, रंग, सौंदर्य प्रसाधन का सामान आदि 107 उत्पादन तैयार किये जा सकते हैं। लेकिन उसे अभी रहने दें, अभी तो सिर्फ मूंगफली के बारे में ही चर्चा करें। दुनिया में ऐसी कोई बात नहीं जो इस मूंगफली में न हो। यह विटामिन युक्त, शक्ति देने वाली और आरोग्यवर्धक है ही साथ में यह औद्योगिक दृष्टि से भी अति उपयुक्त है।'

एक सभासद ने पूछा, 'आपको यह सब कैसे सूझा?'

'कैसे?' बाइबिल से! जेनेसिस के पहले भाग में ही कहा गया है - धरती पर उगनेवाली हर वनस्पति, हर बीज, हर फल मनुष्य की अन्न की जरूरत को पूरा करेगी। मांसाहार की तरह उनका उपयोग हो सकेगा। इसी से मुझे प्रेरणा मिली। विधाता कभी निरर्थक बात क्यों कहेंगे?'

'सच प्रो कार्वर, आपने इस कमेटी पर अनगिनत उपकार किये हैं। मैं सब की तरफ से आपका धन्यवाद करता हूं।'

अध्यक्ष की इस बात पर सारी सभा एक साथ खड़ी हुई। तालियों की गड़गड़ाहट दर्शा रही थी कि सभी सदस्य अध्यक्ष महोदय से सहमत हैं।'

जब प्रो कार्वर समागृह से जाने लगे तो केंटकी के कांग्रसमन श्रीमान बर्कले ने उन्हें मूंगफली के बारे में लिखित निवेदन देने का अनुरोध किया। प्रो कार्वर ने उनकी बात मान ली। वापसी के सफर में सभागृह में दी हुई सारी जानकारी विस्तार से लिखी, अंत में लिखा:

'मेरे पास बिक्री के लिए कुछ भी नहीं है। मैं कोई भी उत्पादन बेचने के लिए नहीं करता। क्योंकि व्यापार मेरा क्षेत्र नहीं है। मैं आपसे भी विनम्र अनुरोध करता हूं कि आप अहितकारी व्यापार पर उचित पाबंदी लगायें।'

एक नीग्रो के अनुसंधान के कारण एक नया युग शुरू हुआ। उस नीग्रो के कार्य के कारण मूंगफली को टॅरिफ बिल में (एच

आर 2435) इस क्रमांक से समाविष्ट किया गया।

इस विजय से भी अधिक खुशी प्रो कार्वर को इस बात की थी कि वे अब इस झंझट से छूटकर फिर से प्रयोगशाला में जा सकेंगे। वे टस्कगी लौटे इसी खुशी में!

चहेती मूंगफली के ऊपर किये जाने वाले शोधकार्यों पर अब कोई सीमाएं ही नहीं रह गयीं थीं। मूंगफली में बने आटे में गेहूं के आटे की अपेक्षा चौगुनी प्रोटीन और आठ गुनी चिकनाई थी। इसके अलावा उसमें 'शर्करा' कम होने के कारण मधुमेही भी उसे इस्तेमाल कर सकते थे।

चुंगीकर की विजय ने सारे देश में प्रो कार्वर का नाम मशहूर कर दिया। डा साहब की अथक मेहनत, अपार बुद्धिमत्ता, अविरत अनुसंधान, अब सारे देशवासियों को परिचित हो गये। देशभर की शिक्षा संस्थाएं, अब उन्हें भाषणों के लिए आमंत्रित करने लगीं।

जगह-जगह पर उनके भाषण होते। उन्हें बार-बार ऐसी यात्राओं पर जाना पड़ता। लेकिन कभी भी गाड़ी छूट गयी, देर से पहुंचे ऐसा कभी नहीं होता। उनका एक-एक कार्यक्रम पूरी मुस्तैदी से चलता। मुसीबत की बात दूसरी ही थी। जो लोग उन्हें स्टेशन पर लेने आते वे डा साहब के पुराने बदरंग कपड़ों के कारण उन्हें पहचान ही नहीं पाते। फिर किसी अनजाने गांव में प्रो कार्वर को रास्ता पूछते-पूछते अपनी नियोजित जगह को ढूंढना पड़ता। लेकिन कुछ अर्से बाद लोग उन्हें पहचानने लगे थे, उनके हाथों में होने वाले उन खास पिटारों से और अखबार में लपेटे बंडलों से। शोधकार्यों के नमूनों को खास पिटारों में ले जाने वाले प्रो कार्वर एक विषय में एकदम भुलक्कड़ थे। जहां कहीं जाते वहीं अपना सोने के समय पहनने का शर्ट भूल आते। मजाक में कहा करते, 'शादी नहीं की इसका मतलब यह नहीं कि मुझे इस तरह भूलने का हक हासिल है।' फिर वहां शर्ट भूल आये हों वहां के मैनेजर को क्षमा प्रार्थना की चिट्ठी भेजी जाती।

इन बार-बार की यात्राओं में उनकी बरसों पुरानी खांसी उठ आती। उन्हें परेशान कर देती। एक बार यात्रा से लौटने पर उन्हें खांसी ने बड़ी तकलीफ दी, साथ ही सांस लेने में भी बड़ी कठिनाई होने लगी। उनकी हमेशा की दवाई एकदम बेकार थी। चिकनाहट भरी और जलन पैदा करने वाली। पीने के बाद भी बड़ी देर तक उबकाई आती रहती। इस बार जब उन्हें तकलीफ होने लगीतो वे अपनी प्रयोगशाला में गये और उस तेज दवाई में मूंगफली का तेल मिलाया। दवाई का स्वाद बेहतर हुआ और उसमें जीवनसत्व युक्त तेल मिलाने से वह और अधिक गुणकारी हुई। दमे और खांसी का तुरंत उपाय संभव हुआ।

प्रो कार्वर के इन सब शोध कार्यों से एक बड़ी महत्वपूर्ण बात यह हुई कि शास्त्रज्ञों को यह अहसास हुआ कि हर वनस्पति में रासायनिक जादू छिपा हुआ है। वनस्पति का उपयोग सिर्फ खाद्यान्न के रूप में ही नहीं बल्कि मानवी जीवन की कितनी ही दूसरी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में हो सकता है। कृषि उत्पादनों में छुपे गुप्तधन को खोज निकालने के प्रयास शुरू हुए।

अब खेतों से मूंगफली का आखरी दाना भी चुना जाने लगा। उसकी उपज के क्षेत्र का परिमाण भी काफी बढ़ गया और महत्वपूर्ण बात यह थी कि बाजारों में भी उसकी चढ़ती मांग होने लगी।

(अभी हाल में ही ऐसा सुना गया है कि हेमोफेलिया बीमारी होने वाले रक्तस्राव पर मूंगफली से बनायी गयी दवाई का उपयोग होता है।)

सन् 1926 में प्रो कार्वर को न्यूयार्क शहर के स्पिंगार्न पदक से सम्मानित किया गया।

उसी ढीले-ढाले पुराने कोट पर न्यूयार्क शहर का स्पिंगानी पदक विराजमान हुआ। उस समारोह में प्रो कार्वर बड़े ही झिझक रहे थे, बेचैन हो रहे थे। उन्हें तो अपने छोटे दोस्तों से साथ ही खुशी मिलती थी। इन बड़े लोगों में वे अकेलापन महसूस करते।

प्रो कार्वर का निवास स्थान था मात्र दो कमरों का घर। वह एक छोटा संग्रहालय ही था। कमरों की दीवारों पर सजते थे उनके बनाये हुए चित्र। घर भरा हुआ था पुस्तकों से। पुस्तकें भी कितने भिन्न-भिन्न विषयों की भूगर्भशास्त्र, वनस्पति शास्त्र, कृषि शास्त्र, रसायन, खगोल शास्त्र, पदार्थ विज्ञान इन विषयों के ग्रंथ और साथ में तितलियों और काई जैसे विषयों की भी पुस्तकें। इतने विविध विषय और भाषाएं? अंग्रेजी, फ्रेंच, आदि भाषाओं की पुस्तकें, पुस्तकों की इतनी चाह क्यों? आधुनिक शास्त्रीय जानकारी पाने के

लिए। कमरे में बीचोंबीच एक मेज पर विविध पत्थरों के नमूने, एक कोने में मेज पर रखा स्टोव हर समय जलता हुआ। उस पर हर वक्त कोई न कोई चीज पकती हुई। कभी आसपास मिलने वाली जड़ी-बूटियां, बीजों से या फिर झाड़ियों के पत्तों से बनने वाला पदार्थ रखा हुआ।

दूसरा कमरा सोने का कमरा था। उसमें सामने ही रखा था चरखा, मां की यादगार। रोजाना उसे साफ कर, चमका कर रखते। एक छोटी सी अल्मारी में प्रो कार्वर ने अपने हाथों से बनाये हुए कढ़ाई-बुनाई के बढ़िया से बढ़िया नमूने। इतना जाना-माना वैज्ञानिक अपने खाली समय में सिलाई-बुनाई के काम करता। यह उनका शौक था। वे कागज और मोम से इतने सुंदर फूल बनाते कि उनके कोट पर लगे फूल पर विद्यार्थियों की आपस में शर्त लगती कि फूल असली है या नकली।

ऐसे हुनरवाले, कलाप्रेमी, बुद्धिमान वैज्ञानिक की एक बात ऐसी थी जिससे उनके सारे प्रशंसक, मित्र परिवार के लोग हैरान और परेशान हो जाते। डा साहब के कपड़े। टस्कगी आये थे तब जो सूट पहना था, वही आजतक चल रहा था। उसी सूट को धो-धोकर, इस्त्री बनाकर, कभी-कभी रफू करके पहनते थे। जैसे कपड़े वैसे ही उनके जूते। उनकी भी मरम्मत खुद ही करते। उन्हें दिखावटी शान-बान से सख्त चिढ़ थी। उनका कहना था कपड़ों पर जरूरत से अधिक ध्यान देना मतलब पैसे और समय की बरबादी। उन्हें और भी एक बात अच्छी नहीं लगती, बातों में समय गंवाना, बेकार के वाद-विवादों में उलझना। उनका प्रिय सुभाषित था, 'विचारवान मनुष्य बोलते कम, काम अधिक करते हैं।'

डा कार्वर का मितभाषी स्वभाव और अकेले रहने की आदत के कारण लोगों को बड़ी जल्दी उनके बारे में गलतफहमियां हो जातीं। डा कार्वर को दुख तो होता लेकिन उनके स्वभाव में ही नहीं था कृत्रिम संभाषण करना। उन्हें तो कपड़ों की दिखावटी शान-बान भी अच्छी नहीं लगती। अतः वे दावतों, समारोहों से दूर ही रहते। उन्हें तो पसंद था, कोई नया व्यंजन बनाकर दूसरों को खिलाना या फिर किसी किसान भाई के आंगन में बैठकर गपशप करना। इसके लिए कोस-दो-कोस पैदल भी चलना पड़े तो कोई शिकायत नहीं और फिर राह में कोई नयी वनस्पति, नया पत्थर मिलता तो खुशी और भी बढ़ जाती।

उन्हीं की प्रेरणा से स्कूल में चित्रकला विभाग शुरू हुआ। नया पाठ्यक्रम नया अध्याय शुरू हुआ। मूंगफली के छिलके कूटकर उसकी लुगदी बनाकर कैनवास बनाया। भुट्टे के छिलकों से फ्रेम्स बनाये। मिट्टी से रंग बनाये। चित्र बने। सिर्फ उंगलियों के इस्तेमाल से, ब्रश के बिना। ये सुंदर चित्र विद्यार्थियों को कला के संबंध में नया दृष्टिकोण प्रदान कर गये।

अपनी चित्रकला की चाह वे इस तरह पूरी करते। उन्हें पहले की तरह अब बुद्धिजीवियों का संग-साथ नहीं मिल पाता था। उसका अभाव वे पूरा करते अपने पहले के मित्रों, परिचितों को नियमित रूप से पत्र भेजकर।

विद्यार्थियों को बाइबिल के प्रसंगों का नाट्य रूपांतर करके उनका अर्थ समझाते, उनके इसी शौक में से फिर रविवार की शामों को बाइबिल की क्लास शुरू हुई। बिलकुल नियमित रूप से। डा कार्वर धर्म और विज्ञान का तालमेल बिठाकर बात समझाने में माहिर थे। पहले तो इस क्लास में थोड़े से विद्यार्थी हुआ करते थे, क्लास भी उनके अपने कमरे में ही लगती। लेकिन धीरे-धीरे विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी और यह क्लास स्कूल के मनोरंजन कक्ष में लगने लगी। कुछ दिनों बाद इस कक्ष भी छोटा पड़ने लगा, तब तीन सौ विद्यार्थियों की इस क्लास को कार्नेजी ग्रंथालय के हॉल में जगह दी गयी।

किसी भी काम को अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानने वाले डा कार्वर इस रविवार की क्लास को भी पूरी निष्ठा से चलाते थे। अपना बाहर गांव का दौरा भी इस तरह रखते कि रविवार की क्लास में उपस्थित रह सकें।

प्रो कार्वर बाइबिल सिर्फ हाथ में नहीं, हृदय में बसानेवालों में से थे। वे अपने विद्यार्थियों से कहते, अपना ज्ञान, आनंद दूसरों के साथ बांट लो। ईसा मसीह से लेकर बूकर टी वाशिंगटन तक यह 'बांटने' की, 'देने' की परंपरा चलती आयी है, उसे खंडित मत करो। अपने ज्ञान, आनंद, बुद्धिवैभव का लाभ बांटते रहो, देते रहो।

'अपने जीवन को अर्थपूर्ण बनाने के लिए टस्कगी स्कूल एक सुअवसर है। बेकार बातों में समय गंवाकर तुम लोग इस अवसर को खो न देना। अवसर खोने की गलती को जब समझोगे, तब तो बहुत देर हो चुकी होगी।'

'प्रकृति ईश्वर का प्रक्षेपण केंद्र है। वहां से हर पल संदेश प्रक्षेपित होते हैं। हमें उन ध्वनि लहरियों को समझने की कोशिश करना है।'

'धूम्रपान,' के विषय में वे कहते, 'नाक का उपयोग धुएं की चिमनी की तरह होता तो ईश्वर उसकी रचना उलटी करते।'

ईश्वर के अस्तित्व के बारे में वे कहते, 'ईश्वर के अस्तित्व के बारे में आपके हृदय में संदेह क्यों? क्या बिजली किसी ने देखी है? नहीं! लेकिन फिर भी बिजली की शक्ति से दीया जलता है। उसी तरह ईश्वर का अस्तित्व है, दिखाई नहीं देता लेकिन महसूस होता है।'

बाइबिल क्लास के समय की यह अर्थपूर्ण बातें और विविध दृष्टांत सुनकर विद्यार्थी विभोर हो उठते किंतु कुछ लोगों को यह दृष्टिकोण पाखंड मालूम होता। इन्हीं लोगों में से किसी ने डा वाशिंगटन से शिकायत की:

'डा कार्वर का प्रवचन धार्मिक पुस्तकों के अनुसार नहीं होता।'

'काफी विद्यार्थी होते हैं क्लास में?' डा वाशिंगटन ने पूछा।

'जी हां! और कुछ शिक्षक भी।'

'कितने दिन हो गये क्लास शुरू हुए?'

'यही कोई तीन एक साल।'

'क्लास अनिवार्य नहीं होने पर भी?'

'हां, सभी आते हैं, क्लास ठसाठस भरता है।'

'ऐसा है, तो मेरे भाई, मेरी सलाह है कि आप इस बारे में चुप ही रहिए और उस क्लास के विरोध में कुछ न कहिए। क्योंकि अनिवार्य हाने पर भी किसी भी क्लास में इतनी संख्या में विद्यार्थी नहीं देखे जाते।'

टस्कगी स्कूल के व्यस्त कार्यक्रम में उन्हें अपने निजी सुख-दुख की विचार करने के लिए फ़ुरसत ही नहीं होती। हर वक्त वे काम में मग्न रहते। उनका काम स्थलकाल के बंधनों से परे था। इस व्यस्तता के कारण उनके सामाजिक जीवन पर सीमाएं लग जातीं। थैंक्स गिविंग या क्रिसमस, ऐसे अपवादों को छोड़कर बाकी दिन वे प्रयोगशाला या अनुसंधान केंद्र में होते। सिर्फ क्रिसमस के दिन वे अपने सहकारी थॉमस कैम्पबेल के घर भोजन करने जाते। श्रीमती कैम्पबेल पहले उनके 'चलते-फिरते स्कूल' में नर्स का काम करती थीं। थॉमस और श्रीमती कैम्पबेल दोनों पर ही डॉ कार्वर का गहरा प्रेम था। ऐसे ही एक क्रिसमस की याद करते हुए श्रीमती कैम्पबेल ने कहा:

'हमेशा काम में व्यस्त रहने वाले डा कार्वर मेरे बच्चों से कितना प्यार करते, उन्हें सोते समय कहानियां सुनाते। मैंने उनसे कहा, 'आपको बच्चे इतने अच्छे लगते हैं। आपको तो गृहस्थी बसानी चाहिए थी। सच में, आपने शादी क्यों नहीं की, सर?'

'क्या घर भर में मिट्टी के नमूने बिखेरनेवाला पति किसी को अच्छा लगता? रोज तड़के चार बजे से पहले ही मैं घूमने जाता हूं। कोई समझ पाता ये आदतें?'

'क्या पता, शायद कोई समझने वाली मिल जाती।'

'फूलों के साथ बातें करता हूं, यह भी?'

प्रो कार्वर अविवाहित ही रहे। उनके जीवन में एक अवसर आया भी था। स्कूल के अर्थविभाग में कुमारी हंट नामक शिक्षिका थी। उनके लिए डा कार्वर के हृदय में कोमल भावनाएं थीं ऐसा उनके परिचित कहा करते। दोनों साथ-साथ मेस में खाना खाते, कभी-कभी घूमने जाते। कभी गंभीर चर्चा होती कभी चुपचाप रास्ता कटता। लेकिन यह मित्रता विवाह बंधन में नहीं बंधी। शायद प्रो कार्वर का निर्णय था। क्योंकि एक तो वे उस समय चालीस की उमर को पार कर चुके थे और दूसरा उन्हें लगता कि कोई भी पत्नी गृहस्थी में रमनेवाला पति चाहेगी। प्रो कार्वर भली भांति जानते थे कि समाजसेवा के आगे गृहस्थी उनके लिए गौण हो जाती। फिर घर बसाने के लिए आवश्यक 'पैसे' की तरफ से वे स्वयं ही मुंह मोड़ आये थे। उनकी अपनी उदासीन वृत्ति उन्हें गृहस्थ बनने से रोक रही थी और फिर चलते-फिरते विद्यालय का काम भी इतना ज्यादा था कि 'वीक एंड' वगैरा बातें भी असंभव।

टस्कगी स्कूल के कार्यकाल में उन्होंने बिना सूचना के सिर्फ दो बार छुट्टी ली थी। एक बार जब कुमारी हंट के बारे में दुखद निर्णय लिया था तब। इस निर्णय के बाद कुमारी हंट स्कूल छोड़कर चली गयी और दूसरी बार सन् 1920 में अंत तक अविवाहित

कुमारी हंट की मृत्यु की खबर के दिन। बस सिर्फ दो ही बार। कर्तव्यपूर्ति के आगे उनकी निजी जिंदगी कुछ रही ही नहीं थी।

टस्कगी नीग्रो स्कूल में विद्यार्थियों के लिए प्रो कार्वर की 'सब कुछ' थे। गृहपाठ में मुश्किल है, चलो सर के पास। फिर वह मुश्किल चाहे पशु चिकित्सा की हो या गणित की, प्राध्यापक महाशय हाथ का काम छोड़कर विद्यार्थियों के साथ पढ़ाई करने बैठ जाते। प्रो कार्वर का कमरा विज्ञान के विद्यार्थियों का अड्डा था। पूरे समय विद्यार्थियों का आना-जाना लगा रहता था। कभी कोई पत्थर ले आता उसका निरालापन दिखाने के लिए तो कोई ले आता जख्मी पक्षी, प्राणी इलाज के लिए। प्रो कार्वर को मालूम नहीं या डा कार्वर नहीं कर सकते ऐसा कुछ इस दुनिया में है ही नहीं, ऐसी श्रृद्धा।'

एक बार एक बड़ी अनोखी बात हुई। स्वयं डा वाशिंगटन का एक बेटा एक मरा हुआ पक्षी लेकर डा कार्वर के घर की ओर जा रहा था। पिता ने समझाया, 'बेटे, अब तो बड़ी देर हो गयी है, यह पक्षी तो कब का मर चुका है।'

'कोई बात नहीं, डाक्टर साहब उसको ठीक कर ही देंगे, देखना!'

यह तो खैर, छोटे बच्चे का विश्वास था। लेकिन डा वाशिंगटन की भी स्थिति कुछ खास अलग नहीं थी। आधी रात को भी वे डा कार्वर के पास जा पहुंचते। स्कूल की जिम्मेदारियों के कारण हमेशा ही परेशान रहनेवाले डा वाशिंगटन जब रात भर सो नहीं पाते तो प्रो कार्वर के पास जा पहुंचते। आधी रात को दरवाजे पर वही परिचित दस्तक सुनकर डा कार्वर तपाक से उठ बैठते, जल्दी-जल्दी तैयार होकर डा वाशिंगटन के साथ घूमने निकल पड़ते। क्यों?

प्रो कार्वर जानते थे कि डा वाशिंगटन कितना मानसिक बोझ उठाते हैं। स्कूल की सब जिम्मेदारियां अकेले उन्हीं को निभानी पड़ती थीं और उस पर गोरे लोगों का रोष भी सहना पड़ता। स्कूल की आर्थिक जरूरतें पूरी करने के लिए कितनी जी-तोड़ भागदौड़ करनी पड़ती। मजे की बात यह थी कि इस आधी रात की सैर में इनमें से किसी भी समस्या पर बातचीत नहीं होती, बातें होती दूसरे ही विषयों पर या फिर कभी-कभी मौनव्रत भी धारण होता। दो-चार घंटे यूं ही साथ बिताकर दोनों लौट पड़ते। डा वाशिंगटन चले जाते वापस अपने घर की ओर।

एक बार किसी ने डा कार्वर को इस आधी रात के जागरण के बारे में टोक दिया। 'ऐसे आधी रात को नींद खराब करके घूमने जाना और फिर दूसरे दिन पूरे दिन प्रयोगशाला में काम करना, स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं। आप इतनी तकलीफ क्यों सहते हैं।'

'तकलीफ? इसे तकलीफ नहीं कहता मैं। इसे तो मैं अपना सम्मान समझता हूं। जब कभी डा वाशिंगटन मेरे साथ समय बिताना चाहते हैं मैं उन्हें तैयार मिलता हूं। उन्हें मेरी जरूरत पड़ती है, इस बात पर मुझे नाज है।'

एक ही ध्येय से प्रेरित इन दोनों सपूतों में मतभेद थे ही नहीं, ऐसा नहीं। मतभेद तो थे लेकिन फिर भी प्रो कार्वर कभी स्कूल के कामकाज में और डा वाशिंगटन प्रो कार्वर के अनुसंधान कार्य में दखलंदाजी नहीं करते।

प्रो कार्वर जब अपनी प्रयोगशाला में दिन-रात काम करते रहत, बाहर ही नहीं निकलते तब डा वाशिंगटन को चिंता लगी रहती। वे प्रयोगशाला में आसपास चक्कर लगाते किंतु प्रयोगशाला का दरवाजा नहीं खटखटाते।

प्रो कार्वर ने शकरकंद से संबंधित एक पत्रिका प्रकाशित करने से पूर्व डा वाशिंगटन के पास सम्मति के लिए भेजी थी।

'प्रो कार्वर, आपने उसमें कहा है कि शकरकंद की जन्मभूमि किस जगह है यह बात अभी सिद्ध नहीं हुई है। यदि ऐसा है तो फिर क्यों न हम लोग अपनी मेकान काऊंटी को ही शकरकंद की जन्मभूमि कहें?'

'नहीं। यह तो संभव नहीं। आप ऐसा नहीं कह सकते। विज्ञान में बिना प्रमाणों के किया हुआ दावा टिक नहीं सकता।'

'लेकिन मैं कहता हूं, इसमें हर्ज क्या है?'

'आप चाहें तो ऐसा दावा कर सकते हैं। लेकिन फिर उस पत्रिका पर सिर्फ आपके हस्ताक्षर होंगे। मैं उस पर हस्ताक्षर नहीं करूंगा। हमारी मेकान काऊंटी की आबोहवा में शकरकंद की जाति की वनस्पतियां नहीं हैं। अत: बिना प्रमाणों के इस तरह का दावा हमने किया और कल को वह गलत सिद्ध हुआ तो क्या दुनियावालों के विरोध का सामना करने की शक्ति अपनी संस्था के पास है?'

'ठीक है, आप ऐसा ही कहना चाहते हैं तो फिर।'

'मैं ऐसा कहना चाहता हूं, यह बात नहीं। जो सत्य है वही मैं स्पष्ट रूप से कह रहा हूं।'

डा वाशिंगटन को प्रो कार्वर की बात सही मालूम हुई। पत्रिका उसी तरह प्रकाशित हुई। प्रो कार्वर हमेशा इस बात पर चौकन्ने रहते कि टस्कगी स्कूल या डा वाशिंगटन को बाहरी दुनिया में अपमानित न होना पड़े।

दो भिन्न प्रकृति के व्यक्ति एक साथ काम कर रहे थे। डा वाशिंगटन एक बड़ी मशहूर हस्ती थे। वाणी और कृति दोनों में सिद्धहस्त। राजधानी में हों तो राष्ट्राध्यक्ष के साथ उठने-बैठने वाले और प्रो कार्वर? बिल्कुल अकेले, प्रयोगशाला में रात-दिन एक करके काम करने वाले एक अकेले सिपाही। दोनों में इतना अंतर था किंतु दोनों का ध्येय एक ही था। मानव जाति की सेवा और अंतिम इच्छा भी एक ही थी कि दफनभूमि भी दक्षिण में हो।

सरकारी अधिकारियों तक अपनी बात पहुंचाकर, उनसे अपनी बात मनवाकर अपनी संस्था का भला करवाने में प्रो कार्वर को कोई आपत्ति तो नहीं थी। इसलिए जहां तक बने वे इन बातों से दूर ही रहते। लेकिन डा वाशिंगटन के निधन के बाद उन्होंने कार्य को आगे बढ़ाने में वे कहीं भी पीछे नहीं रहे। उनके कार्य को, उतनी ही लगन से, आत्मविश्वास के साथ, पूरी सामर्थ्य से आगे बढ़ाते रहे।

दोनों में बड़ी समानता थी। समानता थी उनके समूचे जीवन में, दोनो ही जन्में थे गुलामी में, दोनों के हृदय में जन्मभूमि के लिए नितांत प्रेम, दोनों ने ही अपने समाज के उत्थान को अपनी नैतिक जिम्मेवारी मानकर, अपने आपको इस कार्य पर न्यौछावर कर दिया था। वे दोनों चाहते तो अपनी बुद्धि के बल पर सम्पत्ति और कीर्ति की राशियां बटोर सकते थे। किंतु उन्होंने कीर्ति और सम्पत्ति की मोहमाया से परे एक अनूठे अलौकिक कार्य में अपना समूचा जीवन लगा दिया था। भौतिक सुखों की अपेक्षा वे अपने दलित बांधवों को 'समर्थ-मानव' बनाने के यज्ञ में अपनी आहुति चढ़ा रहे थे।

डा वाशिंगटन ने अपनी पुस्तक 'द स्टोरी ऑफ द नीग्रो' में प्रो कार्वर के बारे में लिखा है:

'गोरे लोगों का खुलेआम द्वेष करके उनकी बुराई करके कोई भी काला आदमी अपने आपको हिम्मतवाला, जांबाज आदि कहला सकता था। लेकिन बरसों तक हिम्मत और लगन से अपने बांधवों के उद्धार और उत्थान के लिए, अपने आपको भुलाकर जी-जान से काम में जुटे रहने वाले को यह नेता लोग डरपोक कहते हैं, क्यों? क्योंकि वे गोरों को गालियां नहीं देते, चुपचाप अपना काम करते रहते हैं।'

'अधिकारियों की जगह कर्तव्यों का अहसास रखनेवाले डा कार्वर के लिए, डा वाशिंगटन के मन में अकृत्रिम स्नेह, आत्मीयता थी। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मॉय लार्जर एडयूकेशन' में भी प्रो कार्वर के बारे में बड़ी कृतज्ञता और आदर से लिखा है।

डा वाशिंटन की मृत्यु से प्रो कार्वर बहुत व्यथित हुए। डा वाशिंगटन के अन्त्येष्टि के समय अमेरिका के राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट स्वयं उपस्थित थे। उन्होंने प्रो कार्वर को सांत्वना दी, कहा:

'आप जो कार्य कर रहे हैं, उससे अधिक महत्वपूर्ण कार्य है ही नहीं!'

विज्ञान ही आपको मुक्ति दिलायेगा

टस्कगी संस्था के मिलबैंक बिल्डिंग में एक नई सुसज्जित प्रयोगशाला बनाने का निर्णय किया गया। प्रो कार्वर के मार्गदर्शन में प्रयोगशाला बनने वाली थी। बस फिर प्रो कार्वर युवकों जैसे उत्साह से इस काम में जुट गये। उनके अदम्य उत्साह को देखकर उनके सचिव स्कॉट को बड़ा संतोष हुआ।

'अंतत: टस्कगी अब इस महान शोधकर्ता के लिए उपयुक्त साधन सामग्री जुटा सकेगी। ऐसे महान वैज्ञानिक को यहां बुलाकर डा वाशिंगटन ने समाज का कितना बड़ा कर्ज चुकाया है।'

डा वाशिंगटन प्रो कार्वर की अलौकिक प्रतिभा, प्रखर बुद्धिमत्ता को जानते थे। लेकिन प्रो कार्वर के अनुसंधान कार्य का विश्वव्यापी रूप निखरा था डा वाशिंगटन के निधन के बाद। काश! यह उज्जवल यश देखने के लिए डा वाशिंगटन जीवित होते। अपने सहयोगी की यह सफलता देख कर उन्हें कितना संतोष होता। सारी दुनिया से होने वाली इस अभिनंदन और सम्मानों की वर्षा देखकर वे खुशी से फूले न समाते।

अमेरिका का कृषि मंत्रालय प्रो कार्वर को सलाह-मशविरे और मार्गदर्शन के लिए आमंत्रित करता। अपने प्रयत्नों से महान

शास्त्रज्ञ बना और अपनी पसंद से शिक्षक का व्यवसाय करनेवाला, यह गुलाम मां-बाप का बेटा, अब सरकार के आमंत्रण पर राजधानी वाशिंगटन में सरकार का मार्गदर्शन करने जाता। सरकार की कठिनाइयां दूर करने में सक्रिय मदद करता।

स्वीडन के युवराज, ब्रिटेन के प्रिंस ऑफ वेल्स जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति टस्कगी में आकर रहते। प्रो कार्वर से मिलने आते। उनसे बातचीत करते, फूल-पौधों पर, मूंगफली, शकरकंद आदि विषयों पर। प्रो कार्वर के जीवनकाल में अमेरिका के राष्ट्रपति से प्रो कार्वर की मित्रता थी। पहले श्री थियोडोर रूजवेल्ट, दूसरे कूलीज और तीसरे फ्रैंकलिन डा रूजवेल्ट।

स्वीडन के युवराज टस्कगी में तीन सप्ताह बसेरा किए हुए थे। कृषि उत्पादन का बेकार हिस्सा, उद्योग-धंधों का आवश्यक कच्चा माल कैसे बन सकता है। यह सीखने के लिए वे टस्कगी आये थे प्रो कार्वर से मिलने।

एक बार मई महीने में एक जर्मन अफसर टस्कगी आया। प्रो कार्वर का कृषि अनुसंधान कार्य देखकर इतना अधिक प्रभावित हुआ कि वापस जाते समय अपने साथ टस्कगी स्कूल के तीन पदवीधारी स्नातकों को ले गया। फसलों के बदलाव और जमीन सुधार की तकनीक का अपने देश में इस्तेमाल करने के लिए।

महात्मा गांधी का भी उनसे पूरे साल भर तक पत्र व्यवहार था। नाजुक स्वास्थ्य वाले इस महान नेता के लिए प्रो कार्वर ने पौष्टिक आहार की सूची बना दी थी। भारत की भूखी जनता के लिए भी अन्नघटकों की जरूरतों को पूरी करने वाली वनस्पतियों के बारे में जानकारी दी थी और खास बात यह है कि ये सब वनस्पतियां भारत में सहज ही उपलब्ध हो सकती थीं।

फ्रेडरिक डग्लस से शुरू होने वाली नीग्रो नेताओं की श्रृंखला की डा कार्वर आखिरी कड़ी थे। इन नेताओं ने अपने बांधवों को 'समानता' का उपभोग लेने 'लायक' बनाने का अपूर्व कार्य किया।

जब सारी दुनिया मीठी नींद सोई होती, डा कार्वर निसर्गदेवता के सान्निध्य में होते। सृष्टि के रहस्य खोजने में मगन होते। फिर वहां से लौटने पर प्रयोगशाला में शोधकार्य शुरू होता।

हमें इन प्रयोगों से क्या मिलेगा? इस कार्य का उद्देश्य क्या है? उसके लिए क्या करना है आदि बातें वे अपने आसपास के अनाड़ी, अशिक्षित लोगों को बिलकुल सरल भाषा में समझाते। ना अगम्य शास्त्रीय भाषा, न विद्वता का प्रदर्शन, या आडंबर। इसीलिए टस्कगी वाले कहते कि डा कार्वर दूसरे वैज्ञानिकों से अलग हैं।

सर्वसाधारण आदमी से वे अलग दिखते क्योंकि वे 'उनमें' से एक थे ही नहीं। उनका असाधारण होना हर बात में दिखाई देता। उनकी जिज्ञासा के विषय, उनकी महत्वाकांक्षा यह सब सर्वसाधारण की समझ से परे थी। ईश्वर के अलावा और किसी का बंधन नहीं। अपनी प्रतिभा संपन्न बुद्धि का उपयोग उन्होंने बड़ी सजगता से किया। अपनी कर्तव्यपूर्ति के आगे दूसरी हर बात गौण मानी। अपने अंतिम लक्ष्य के बारे में उनके मन में कोई संदेह नहीं था। सब एक निश्चित स्वरूप में उनकी आंखों के सामने था और उसी के अनुसार उनका कार्य चल रहा था।

उनके समीप रहने वालों को उनकी 'अशांत आत्मा' की भलीभांति कल्पना थी। अपना ध्येय प्राप्त किए बिना उन्हें शांति नहीं मिलेगी ऐसा सभी को विश्वास हो चला था। निश्चित ध्येय होने से उनका कार्य बड़ी गति से आगे बढ़ रहा था। कार्य पूरा होने से पहले ही कहीं जीवन समाप्त न हो जाये, कम-से-कम एक विशेष मुकाम तक तो पहुंचना ही है ऐसी लगन से वे अपना कार्य कर रहे थे। अनुसंधान के कार्य में गति तेज कर दी थी। मानव जीवन की मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए अविरत परिश्रम जारी थे। यदि वे इसे अखंड साधना में जरा सा रुक कर, पीछे मुड़कर देखते, तो पाते कि उन्होंने सिर्फ अपने बांधवों को ही नहीं, अखिल मानवजाति को संवारने का कार्य किया।

उन्हें 'बोलने' से ज्यादा 'देखना' पसंद था। कोई मकड़ी जाला बुनती हुई दिखाई दी तो प्रो कार्वर उसे निहारते, घंटों कोशिश करते स्वयं वैसा ही बुनने की और फिर 'हमसे नहीं होता भई, इतनी सुंदर बुनाई।' सच्चे मन से कहने में जरा भी नहीं झिझकते। हर बात का, हर चीज का सूक्ष्म शास्त्रीय अवलोकन करना, ज्ञान प्राप्ति के मार्ग की पहली सीढ़ी है। उन्होंने कभी इसे टालने की कोशिश नहीं की। उनका 'विद्यार्थी' होना कभी खत्म नहीं हुआ। प्रकृति की हर बात की जिज्ञासा उन्हें आकर्षित करती रही। वे आजीवन विद्यार्थी ही बने रहे।

मायकॉलाजी छोड़कर उनके अन्य विषयों के शोधकार्य शास्त्रीय वार्तापत्रों में उल्लेख होने लायक नहीं होते थे। उन खोजों में कुछ भी क्रांतिकारी नहीं होता था। योग्य शिक्षा पाया हुआ कोई भी अशिक्षित व्यक्ति वह काम कर सकता था। डा कार्वर की खोजों की खासियत यह थी कि वे रोजमर्रा की जिंदगी में विज्ञान का सहज इस्तेमाल सिखाते, वनस्पतियों में छुपे गुणों को जन साधारण को समझा देते। प्रो कार्वर के ये प्रामाणिक प्रयत्न सम्पूर्ण मानव जाति के लिए वरदान सिद्ध हुए।

हमेशा साधनों की, उपकरणों की कमी रहती। इसलिए पुस्तकों की शास्त्रीय पद्धति से अनुसंधान करना उनके लिए असंभव नहीं था। संस्था के लिये आधुनिक साधन खरीदना मंहगा पड़ता। अतः जो कुछ उपलब्ध था उसी का उपयोग करके अपनी बुद्धि कुशलता से उन्होंने इच्छित सफलता प्राप्त की।

प्रो कार्वर का एक और गुण विशेष था। वे किसी भी चीज को बेकार, फालतू निरुपयोगी नहीं मानते। कचरा नहीं मानते, चाहें वह पत्थर हो, मिट्टी हो या फिर पार्सल पर लपेटा हुआ धागा ही क्यों न हो। पार्सल भी इस तरह खोलते कि धागा पूरा निकले और फिर से उपयोग में लाया जा सके। फिर उस धागे को अच्छे से लपेटकर रखा जाता।

एक बार ऐसे ही एक वनस्पति का पार्सल खोलते समय उन्हें धागे पर कुछ दिखाई दिया। तुरंत धागे को माईक्रोस्कोप से देखा तो पाया कि पहले कभी भी नहीं देखी गयी ऐसी फफूंद थी। उन्होंने उसकी स्लाइड्स बनाकर और अधिक शोधकार्य के लिए वॉशिंगटन की प्रयोगशाला में भेज दी। वहां से जवाब आयां 'यह फफूंद, जो अधिकतर देखने में भी नहीं आती, असल में कपास पर आनेवाली अत्यंत ही घातक बीमारी है।' समय रहते ही उपाय हो गये और पूरी अमेरिका में कपास की फसल बच गयी।

अलाबामा के मांटगोमेरी एडवर्टाइजर इस समाचार पत्र ने अपने 2 दिसंबर 1929 के अंक में लिखा, 'दुनिया भर में किसी भी कृषिशास्त्री ने नहीं किया होगा इतना कृषि शोधकार्य अकेले जितना प्रो कार्वर ने किया है। उनके जितना वनस्पतिजन्य पदार्थों का रासायनिक विश्लेषण शायद ही कोई जानता हो। ऐसे महान भूमिपुत्र पर अलाबामा को हमेशा नाज रहेगा।'

प्रथम महायुद्ध के समय आर्थिक मंदी चल रही थी। युद्ध के अशांत वातावरण में बाजारों में कपास की मांग घटने लगी। अब कपास की यह तैयार फसल बेकार हो जायेगी यह देखकर प्रो कार्वर फिर से प्रयोग में लग गये, और उन्होंने कपास से कागज, रग्ज, ध्वनि-निरोधक बोर्ड, रस्सियां, खाद, मोटर के टायर, कपास के बिनौलों से तेल और तो और रास्तों में पाटने के लिए टाइल्स बनाये। दक्षिण अमेरिका के दूसरे दर्ज के रास्ते इन्हीं टाइलों के उपयोग से बनाये गये हैं।

यद्यपि प्रो कार्वर ने कपास की पैदावार का क्षेत्र कम करवाया था लेकिन अधिक पैसा देनेवाली फसल होने के कारण कपास पर उनका ध्यान तो था ही। छोटे पौधों के डोडे बड़े होते हैं किंतु जरा सी जोरों की बारिश में वे जमींदोज हो जाते हैं, भीगकर लुग्दी बन जाती है। इस पर उपाय के दौर पर डा कार्वर ने एक नयी संकरित जाति तैयार की जिसके पौधे लंबे होते हैं। डोडे भी बड़े होते हैं और जमीन से काफी ऊंचाई पर इसलिए बारिश के बाद पानी में डूबकर खत्म होने का खतरा भी नहीं रहा।

प्रो कार्वर की इन अद्‌भुत खोजों से ही व्यापारी जगत में हलचल मच गयी। पर इनसे भी बढ़कर एक अतिश्रेष्ठ संकरित जाति का बीज तैयार किया उन्होंने। इस जाति को अमेरिका के कृषि मंत्रालय ने 'कार्वर हायब्रिड' नाम दिया गया।

उन दिनों कपास के बिनौलों को निरूपयोगी नहीं था। उनकी दृष्टा की नजर थी। जिस चीज पर पड़ती उसका सोना बना देती। फिर वह चाहे मिट्टी हो या बिनौला। अब बिनौलों पर शोध कार्य शुरू हुआ। सन् 1919 में उन्होंने बिनौले के 10-15 उपयोग सिद्ध कर दिये। कपास से तो बिनौला अधिक उपयोगी निकला। अच्छा पशु खाद्य सिद्ध हुआ। सन् 1940 में उन्होंने सिर्फ बिनौलों से भरे डोडोवाली कपास की जाति तैयार की। कहां कपास का डोडा और कहां सिर्फ बिनौलो वाला डोडा। यह सारा सफर ऐसा अनोखा सिद्ध हुआ।

दूसरे राष्ट्रों में भी कपास की पैदावार बढ़ायी। कृत्रिम रेशे का आविष्कार हुआ। बाजारों में रेयान आ गया था। परिणाम हुआ दक्षिण अमेरिका की कपास पर। हर गठान बिकने के दिन फाखता हुए। फिर भी नतीजा अच्छा ही रहा, प्रो कार्वर ने कपास पर और भी शोधकार्य किया। उन्हें अब कपास का उपयोग प्लास्टिक इंडस्ट्री में करने में सफलता मिली। प्रो कार्वर सन् 1896 में टस्कगी आये थे डा वाशिंगटन के अनुरोध पर। उसके बाद उनकी अविरत समाज सेवा चल रही थी, शोधकार्य चल रहा था। बिना थके, बिना रुके।

उन्होंने अपने बांधवों को 'पूर्ण मानव' बनाने के कार्य में अपनी बुद्धिमत्ता, अपना जीवन सर्वस्य आन पर लगा दिया। लगातार तीस-बत्तीस वर्षों के परिश्रम का फल अब मिल रहा था।

डा कार्वर की समाजसेवा और अतुलनीय शोधकार्य का सम्मान करने का उन्हें डाक्टरेट से अलंकृत करने का पहला अवसर 'सिम्पसन' कालेज को मिला। सन् 1928 में उन्हें 'डाक्टर ऑफ साइंस' यह सम्मानीय पदवी प्रदान करते हुए सिम्पसन के अध्यक्ष ने कहा:

'जब जार्ज कार्वर सिम्पसन में प्रवेश लेने आये थे तब उन्हें निराश न करते हुए सिम्पसन कालेज ने अपने परिवार में लेने का सुविचार दिखलाया। यह घटना चिरस्मरणीय है। प्रवेश के समय वर्णभेद या वंशभेद के आगे न झुकते हुए कालेज ने उन्हें 'अपना विद्यार्थी' ही माना इस बात पर सिम्पसन वालों को हमेशा नाज रहेगा।'

गोरों ने नाम के पहले 'मिस्टर' लगाने का अधिकार सिर्फ अपने लिए सीमित रखा। यदि कोई अश्वेत व्यक्ति उतने ही सम्मान का अधिकारी होता भी तो उसे प्राध्यापक या डाक्टर कहा जाता। गांववाले भी उन्हें डाक्टर कार्वर कहते, मिस्टर कार्वर नहीं। लेकिन यही 'डाक्टर' संबोधन अब सार्थक हो गया था। उनके गरीब बांधवों के हर तरह के मर्ज का इलाज करने वाले डाक्टर थे वे। उन्होंने ही तो अपने बांधवों की शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक सामर्थ्य को प्रबल बनाया था।

'आप विज्ञान को अपनाइए, वही आपको मुक्ति दिलाएगा।' विद्यार्थियों को हमेशा दिया हुआ उपदेश, उन्होंने अपने आचरण से सिद्ध कर दिखाया था।

वैज्ञानिक लुई पाश्चर की ही तरह उन्हें भी अपने प्रयोगों व अन्वेषणों के बारे में, दूसरे वैज्ञानिकों व अनुसंधान केंद्रों से विचार विनिमय करना नसीब नहीं हुआ। अश्वेत होने के कारण वे अकेले पड़ गये थे।

उन्हें समकालीन शास्त्रज्ञों से विचार विनिमय करने का अवसर नहीं मिला जो कि शास्त्रज्ञ और शास्त्र दोनों के विकास के लिए आवश्यक होता है। इसलिए उनका सारा दारोमदार स्वयं पर निर्भर रहा। उनकी टेबिल पर उनसे सलाह मांगने और मार्गदर्शन पाने की अभिलाषा से आयी हुई चिट्ठियों का ढेर लगा रहता था और सब के बेकायदा जवाब भी जाते। लेकिन सभी समस्याओं के कागज पर हल तो नहीं निकल सकते, साथ बैठ कर वैचारिक आदान-प्रदान से कई बार अधिक लाभ की प्राप्ति हो सकती है, विशेषत: यदि व्यापारी वर्ग से ऐसे संबंध स्थापित हो सकें तो शोधकर्ता उन्हें नयी-नयी कल्पनाएं सुझाने का अवसर पाता है। लेकिन प्रो कार्वर के साथ ऐसा नहीं हुआ। सामाजिक बंधनों ने इस ज्ञानदेवता को बाहरी दुनिया से दूर ही रखा। इसलिए डा कार्वर और भी अकेले हो गये। बस सिर्फ अपने काम से वास्ता।

यदि वे बाहरी दुनिया से मेल बढ़ाने के लिए कोशिश करते भी तो एक संघर्ष जनम लेता और इस संघर्ष की जलन में उनका कार्य रुक जाता। अपने बांधवों की अधिक-से-अधिक प्रगति के लिए काम कर पाना उनके लिए असंभव ही नहीं हो पाता। वे अपने अंतिम ध्येय से विचलित हो जाते।

मैं भूमिपुत्र

प्रो कार्वर प्रसिद्ध महान शास्त्रज्ञ श्री थॉमस अल्वा एडिसन का पत्र पढ़ रहे थे।

'... क्यों न हम और आप मिलकर विश्व के रहस्यों की खोज करने का प्रयत्न करें! सीमित और अधूरे साधनों के कारण आपका काम सीमाओं में बंध रहा है और समय का अपव्यय भी हो रहा है...

आपको हमारे यहां हर काम में सहयोग और मदद मिल सकेगी।

श्री एडिसन ने डा कार्वर से अनुरोध किया किवे उनकी न्यू जर्सी की प्रयोगशाला के अनंसंधान केंद्र के कार्य का भार संभालें। उस काम के लिए उन्होंने प्रो कार्वर को वार्षिक 1 लाख डॉलर्स वेतन प्रस्तावित किया था। वार्षिक एक लाख डॉलर्स!

'मैंने डा वाशिंगटन से वादा किया था कि मैं अपने बांधवों को भूख की खाई से निकालने के लिए, दारिद्रय के दुख से उबारने के लिए आमरण प्रयत्नशील रहूंगा। अभी भी मेरे समाज को मेरी जरूरत है।'

'मैं हमेशा अकेले काम करता आया हूं। आपकी इतनी बड़ी संस्था में काम करते हुए मुझे सकुचाहट होगी और यहां कितने ही काम अधूरे पड़े हैं।'

'मैं नहीं आ सकूंगा।'

आज तक किसी भी मोह में न फंसनेवाले डा कार्वर ने श्री एडिसन को उत्तर लिख ही दिया। लाखों डॉलर्स का प्रलोभन

भी उन्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर पाया।

डा कार्वर के पत्र से श्री एडिसन बहुत प्रभावित हुए। डा कार्वर की अतुलनीय समाजसेवा के कारण श्री एडिसन को उनके लिए बड़ी आत्मीयता और कृतज्ञता महसूस हुई। इस के प्रतीक रूप में उन्होंने डा कार्वर को अपना एक हस्ताक्षरित छायाचित्र भेजा। एक आंतरिक स्नेह की यूं शुरुआत हुई।

डा कार्वर की आर्थिक व्यवहारों के बारे में श्री अर्ल विल्सन के अनुभव जानने योग्य हैं। श्री अर्ल विल्सन ने टस्कगी संस्था के बैंक मे दो वर्ष काम किया था। यह बात सन् 1923 की है। श्री विल्सन उस समय बिलकुल नये-नये आये थे।

शाम के समय, बैंक बंद होने को था कि बैंक की वेटिंग रूम में डा कार्वर आकर बड़ी शांति से बैठे थे। श्री विल्सन तुरंत उनके पास चले आये।

बड़े अपराधी स्वर में डा कार्वर बोले, 'मुझे अपना चेक लेना था।'

श्री विल्सन हैरान! मई को निकालने वाले थे और आज थी 23 एप्रिल! इतने पहले उन्हें चेक देना जरा मुश्किल ही था!

'माफ कीजिएगा प्रो कार्वर, लेकिन अभी तो चेक तैयार नहीं हुए हैं।'

'बेटे, तुम नये लगते हो। जरा दूसरे को बुला लाओ।'

उसी समय एक दूसरा क्लर्क बाहर आया। प्रो कार्वर को प्रतीक्षालय में देखकर बोला, 'सिर्फ एक मिनट रुकियेगा, मैं अभी चेक लेकर आता हूं।'

श्री विल्सन कुछ नाराज होकर अपनी जगह लौट गये। उस दूसरे क्लर्क ने तिजोरी की एक दराज खोलकर नीचे का चेक निकाला, बाकी चेक्स फिर क्रमवार लगाकर रखे। निकाला हुआ चेक डा कार्वर को दिया। धन्यवाद करते हुए डा कार्वर बैंक से चल दिये।

श्री विल्सन की समझ में कुछ नहीं आया। बोले, 'यह भी कोई तरीका है? एक तारीख से पहले ही चेक देने का कोई खास कारण है?'

'आप नये-नये आये हैं। यहां आइये आपको एक मजेदार बात दिखाता हूं।' उस क्लर्क ने वह दराज उल्टा कर सारे चेक दिखाये।

'देख रहे हैं? यह सभी डा कार्वर के नाम के चेक हैं।'

'ओह! ऐसा? तब तो उनके पास काफी पैसा है। शोध कार्यों से काफी कमाया होगा। फिर भी पहली तारीख से पहले...?'

'नहीं मि विल्सन ऐसा नहीं, यह सब उनके वेतन के चेक्स हैं। ठीक से देखिये, अभी जो ले गये वह एप्रिल 1915 का चेक था। अब जब आयेंगे तब मई 1915 का चेक देना है।'

'लेकिन यह तो 1923 साल है।' 'और क्या? अब जल्दी ही हमें उनके लिए एक और दराज का बंदोबस्त करना होगा। उनके हर महीने के वेतन चेक बैंक में जमा होते हैं।'

'मतलब? इतने सालों से ये चेक्स यूं ही पड़े हुए हैं? फिर उनका काम कैसे चलता है?'

'मैं वह नहीं कह सकता। लेकिन एक बात है, इतने सालों में मैंने उनके नाम आया हुआ एक भी बिल नहीं देखा और दूसरी बात, उनके वेतन में इतने सालों में एक कौड़ी की भी वृद्धि नहीं हुई।'

'अरे! बड़ी बुरी बात है, इतने श्रेष्ठ वैज्ञानिक की इतनी उपेक्षा। ऐसी हालत।' 'कैसी उपेक्षा? डा वाशिंगटन और बाद के अध्यक्षों ने भी उनसे कितना आग्रह किया, वेतन बढ़ाना चाहा लेकिन यह भला आदमी स्वीकार करे तब तो! मैं पैसा लेकर क्या करूंगा? मैं तो सिर्फ भूमिपुत्र हूं।' यही उनका उत्तर रहता था।

श्री विल्सन सन् 1925 तक अलाबामा में थे। तब तक डा कार्वर ने सिर्फ 1916 तक के चेक्स निकाले थे। प्रो कार्वर ने सन् 1896 के पहले वेतन और 1943 के अंतिम मृत्यु पूर्व के वेतन में एक सेंट का भी फर्क नहीं था। हर माह सवा सौ डॉलर्स! बस!

किताबों में डालकर, मेज की दराज में रखकर कितने ही चेक्स द्वारा उन्होंने जरूरतमंद विद्यार्थियों की मदद की। बाद में जब विद्यार्थी पैसे लौटाने आते तो ये महाशय मजे से कहते, 'मैंने कब दिये तुम्हें पैसे? उन्होंने कितने विद्यार्थियों को ऐसी मदद दी थी। इसकी निश्चित संख्या तो पता नहीं क्योंकि इस गुप्त धन का मदद का कहीं कोई जिक्र नहीं था। लेकिन टस्कगी के हर विद्यार्थी को कभी न कभी किसी रूप में प्रो कार्वर की ऐसी मदद मिला करती थी।

एक बार उन्होंने एक विद्यार्थी को एक डॉलर दिया और कहा, 'अब तुम इसका क्या कर सकते हो, यह मुझे देखना है?'

विद्यार्थी भी उन्हीं का चेला था? उसने उस एक डॉलर से एक मुर्गी खरीदी, साथ में उसका खाद्य और सेने के लिए कुछ अंडे। कुछ महीनों बाद उसने प्रो कार्वर को अपना करतब दिखलाया। उसके पास नगद 50 डॉलर्स हो गये थे। मुर्गियों से नियमित आय का साधन मिल गया था। प्रो कार्वर अपने इस उद्योगी विद्यार्थी से बड़े खुश हुए।

कठिन समय में उनके निश्चल स्वभाव का अनोखा दर्शन होता। उनके नाम के ना भुनाए हुए कितने ही चेक्स इधर-उधर बिखरे होते। उन्हें बैंक में जमा करने के लिए बैंक के कोषाधिकारी प्रो कार्वर के पीछे पड़ गया। बड़ी खटपट करके उसने सारे चेक्स बैंक में जमा करवाये और उसी साल 1933 में फरवरी में अमेरिका में बाजार मंदी का तीव्र आघात हुआ। बैंकों का दीवाला निकल गया। टस्कगी का बैंक भी इस संकट से नहीं बचा।

कोषाधिकारी लोगन अपने आप को अपराधी महसूस करने लगा। प्रो कार्वर से मिलने आया। संकट के बारे में बताने लगा। अपनी जीवन भर की कमाई खोने वाले डा कार्वर ने क्या उत्तर दिया होगा? उन्होंने कहा:

'जहां वह पैसा गया है वहीं उसका ज्यादा उपयोग होगा। जरूरतमंद को उसका लाभ मिलेगा, इसमें बुरा क्या है?'

जब उनके आसपास की सारी दुनिया पैसे के लिए सब कुछ कर रही थी, पैसे के लिए मेहनत कर रही थी, पैसे के लिए लड़ रही थी, पैसे के लिए जी रही थी, पैसे के लिए मर रही थी, तब डा कार्वर को सिर्फ विनियोग का साधन मानकर उसका सिर्फ जरूर उपयोग कर रहे थे। उन्हें पैसे की जरूरत ही नहीं पड़ती। पैसे का मोह तो उन्हें था ही नहीं। सारी भूमि ही जिसकी अपनी हो ऐसे भूमिपुत्र को पैसे की आवश्यकता हो भी क्यों? पैसे की, धन की मोहमाया पर बलि चढ़ने की अपेक्षा उन्हें अपने कौशल का, ज्ञान का उपयोग दूसरों के लिए करने में आनंद था। पैसे का प्रलोभन दिखाकर उन्हें टस्कगी से दूर ले जाने का प्रयास बहुतेरों ने किया लेकिन वे डा वाशिंगटन को दिया हुआ वचन निभाते हुए टस्कगी में ही जिये। अपनी कर्मभूमि टस्कगी में ही उन्होंने आखिरी सांस ली।

फ्लोरिडा स्टेट की मूंगफली के खेतों में बीमारी फैल गयी। डा कार्वर ने इस बीमारी के निवारण का बड़ा सुलभ उपाय बतलाया। पूरी फसल बच गयी। वहां के धनीमानी किसानों ने इस उपकार के बदले 100 डॉलर्स का चेक भेजा और हर महीने भेजने की बात कही। निरिच्छा डा कार्वर ने वह चेक वापस करते हुए कहा, 'आप लोग मूंगफली की पैदावार करते हैं इसलिए ईश्वर तो आपसे कुछ मांगते नहीं, फिर मैं उसी मूंगफली को निरोगी बनाने के लिए पैसे कैसे ले सकता हूं?'

डा कार्वर की लकड़ी के भूसे के बोर्ड बनाने की पद्धति से उद्योग चलाने वाले एक व्यापारी ने उन्हें अपनी प्रयोगशाला का भार संभालने के लिए बड़े तगड़े वेतन का प्रस्ताव रखा। हमेशा की तरह डा कार्वर ने 'ना' कर दी। तब वही निर्माता अलाबामा में आकर बस गया। डा कार्वर ने बिना शुल्क मार्गदर्शन जो मिल रहा था।

डा कार्वर को धन-दौलत का या भौतिक सुखों का मोह कभी था ही नहीं। यहां तक कि जीवन का संध्याकाल सुख में बीते इसलिये कुछ पैसा जोड़कर रखना चाहिए इस विचार ने भी उन्हें सताया नहीं। भौतिक सुखों से वे बिलकुल उदासीन थे। सारी दुनिया श्रेष्ठ शास्त्रज्ञ, महान समाज सेवक महान शोधकर्ता कह कर उनकी सफलता का यशोगान कर रही थी। लेकिन डा कार्वर ने इन बातों से अपने आप को दूर ही रखा था। अंत तक वे अपना परिचय 'जार्ज डब्ल्यू कार्वर' कहकर ही कराते।

निरिच्छ, निर्मोही डा कार्वर ने एक दिन बड़ी झिझक कके साथ श्री हस्टन (उद्योगपति) के सामने अपनी एक मांग रखी।

'मुझे एक 'हीरा' चाहिए।'

यह मांग सुनकर श्री हस्टन बड़े खुश हो गये। 'चलो, कभी तो डा कार्वर ने मुझ से कोई ऐसी चीज मांगी जिसे मैं दे सकूं।'

उनकी यह इच्छा अब पूरी हो रही थी। बड़े उत्साह से उन्होंने डा कार्वर को एक सुंदर सी 'हीरे' की अंगूठी भिजवायी। अगली बार जब मिले तो बड़ी आशा से उन्होंने डा कार्वर से पूछा:

'भेंट कैसी लगी?'

'ओह, बड़ी सुंदर!'

'लेकिन आप अंगूठी इस्तेमाल क्यो नहीं कर रहे हैं?'

'इस्तेमाल? मतलब? आपको ऐसा लगा कि मैंने इस्तेमाल करने के लिए हीरा मांगा था? आइये, आपको दिखाता हूं मुझे हीरा क्यों चाहिए था।'

डा कार्वर श्री हस्टन को एक कांचवाली अलमारी के पास ले गये। उसमें 'खनिजों का संग्रह' था। उसे दिखाते हुए डा कार्वर ने कहा, 'मेरे पास खनिजों का संग्रह है, उसमें सिर्फ हीरे की कमी थी। मैं अपने विद्यार्थियों को सिर्फ 'हीरा' नहीं दिखा पाता था। आपने मेरी कठिनाई दूर कर दी। अब मेरे विद्यार्थियों को हीरा कैसा होता है यह समझने के लिए सिर्फ कल्पनाशक्ति के भरोसे नहीं रहना पड़ेगा। वे लोग वास्तव में 'हीरा' देखेंगे।'

बेचारे श्री हस्टन फिर एक बार हार गये थे। 'हीरा' मांगा भी था तो सिर्फ खनिज है इसलिए।

जार्जिया के एक उद्योगपति श्री हस्टन ने मूंगफली से मक्खन बनाने का उद्योग शुरू किया था लेकिन उनका बनाया मक्खन ठीक से जमता नहीं था, उसमें से तेल निकलता और दुर्गंध भी आती। इस मुश्किल को हल करने का उपाय सीखने के लिए उन्होंने अपने सहकर्मी श्रीयुत मॉस को टस्कगी भेजा। टस्कगी का अर्थ डा कार्वर, टस्कगी और डा कार्वर अविभाज्य हो गये थे। टस्कगी आने का मतलब डा कार्वर से मिलना। डा कार्वर ने कुछ रसायनों की मदद से उस मक्खन को बिलकुल दूध से मिलनेवाले मक्खन की तरह बना दिया। यही नहीं, उस केमिस्ट को मूंगफली के चूरे से चॉकलेट्स बनाना सिखाया और मूंगफली के छिलकों से जमीन को भुरभरी (सॉइल कंडिश्नर) बनाने का नुस्खा बतलाया।

डा कार्वर का ऐसा उदार दृष्टिकोण, ऐसी आत्मीयता देखकर श्री हस्टन बड़े प्रभावित हुए। वे अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए स्वयं टस्कगी आये। आते समय डा कार्वर के लिए सील की खाल का बड़ा कीमती कंबल ले आये।

उस बेचारे कंबल के नसीब में पेटी का ताला ही लिखा था।

डा कार्वर ने इस मुलाकात में श्री हस्टन को मूंगफली से तैयार हो सकने वाले अनेक उत्पादनों के बारे में जानकारी दी। साथ ही उत्पादन प्रक्रिया के समय, पैसे और श्रम की बचत के गुर सिखलाये। विशेष जानकारी दी। उनका ज्ञान, गहन अध्ययन और अपने ज्ञान को बांटने की इच्छा और इस ज्ञान का सही-सही पूरा-पूरा उपयोग हो सके इसके लिए की गई अविरत मेहनत देखकर श्री हस्टन विमूढ़ हो गये।

डा कार्वर की बुद्धिमत्ता से प्रभावित श्री हस्टन ने उन्हें जार्जिया में आकर अपने उद्योग समूह में मार्गदर्शन करने की विनती की।

डा कार्वर का उत्तर था, 'मेरी तो कर्मभूमि यही है। मैं यहीं रहकर आपकी यथाशक्ति मदद करूंगा।'

इस घटना के बाद लगातार 15 वर्षों तक हस्टन उद्योग समूह को डा कार्वर की बिना शुल्क सलाह का अनमोल लाभ मिलता रहा। डा कार्वर से मिलने श्री हस्टन महीने में एक बार तो टस्कगी आते ही। कुछ उपहार देने के प्रयास करते लेकिन इस इस भूमिपुत्र को मोह लालसा से वास्ता ही नहीं था। 'कभी तो डा कार्वर को किसी चीज की जरूरत हो और उसे पूरा करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो।' यह श्री हस्टन की इच्छा थी। लेकिन यहां तो किसी 'जरूरत' की बात तक नहीं थी।

एक बार जब श्री हस्टन ने बड़ी निराशा से पूछा कि क्या इस दुनिया में ऐसी कोई भी चीज नहीं है जो मैं आपको प्यार से दे सकूं और आप उसका उपयोग करें? तब डा कार्वर ने उनका दिल रखने के लिए उनसे हीरा मांगा था, वह भी 'हीरा' नामक खनिज कैसा होता है यह विद्यार्थियों को दिखलाने के लिए।

श्री हस्टन भी कुछ कम जिदवाले नहीं थे। उन्होंने एक शिल्पकाल से डा कार्वर की एक कांसे की प्रतिमा बनवायी और टस्कगी संस्था को समारोह पूर्वक अर्पण की।

प्रलोभनों से निर्लिप्त डा कार्वर व्यक्तिगत रूप से किसी चीज के अभिलाषी नहीं थे परंतु वे चाहते थे कि उनकी प्रतिष्ठा के बल पर उनके वंश की पहचान हासिल हो। 'मैंने इतने वर्ष दक्षिण में बिताये हैं, मेरे अपने समाज के उत्थान के लिए काम किया है। अब अगर में इस काम को अधूरा छोड़ कर चला जाऊं तो यह काम मेरा नहीं कहलायेगा। मेरे वंश के लोगों को उस काम का कुछ भी श्रेय नहीं मिलेगा। मैं जो कुछ कर रहा हूं उसका लाभ और श्रेय मेरे बांधवों को, मेरे वंश को मिलना ही चाहिए।

उनका मार्गदर्शन पाने के लिए दुनिया के कोने-कोने से लोग आते थे। रूस ने उन्हें अपनी पंचवर्षीय योजना में कृषिविषयक सलाह के लिए आमंत्रित किया। मेक्सिको के खदान मालिक बुला रहे थे। वेस्ट इंडीज में उत्पादन का स्तर सुधारने के काम में डा कार्वर की मदद की आवश्यकता थी। कोई अपनी बेजान जमीन का नमूना लेकर आता था, उसके सुधार के उपाय पूछने, तो कोई अपने खेतों में उपजे निकृष्ट पौधे लेकर आता था। टस्कगी के डा कार्वर से हर बात का इलाज करवाने की आशा रखकर आते थे सब। एक बार तो हद हो गयी। एक व्यक्ति अपने लकवे से पीड़ित बच्चे को टस्कगी में डा कार्वर के पास ले आया इलाज के लिए! एक और नया प्रश्नचिन्ह!

आज तक के अन्वेषणों से उन्हें विश्वास हो चला था कि मूंगफली के तेल में कुछ औषधि गुण अवश्य हैं। अपने विद्यार्थी जीवन के 'हस्तकौशल' को मूंगफली के तेल का साथ देकर उन्होंने काफी लोगों को छोटी-मोटी तकलीफें, वेदनाएं दूर करके कमजोर स्नायू फिर से कार्यक्षम बनाने में सफलता प्राप्त की थी। अभी कुछ समय पहले उन्होंने एक सौंदर्य प्रसाधन बनाया था। मूंगफली से बनाया यह फेसक्रीम अपनी सहकारी शिक्षिकाओं को इस्तेमाल करके देखने के लिए दिया था। कुछ दिनों बाद उन शिक्षिकाओं ने शिकायत की थी कि, 'डाक्टर साब, यह क्रीम तो बहुत अच्छी है, लेकिन इसे लगाने से चेहरा भरा-भरा दिखने लगता है। गाल फूले-फूले से लगते हैं।'

अभी डा कार्वर को वही शिकायत याद आयी। खुश कर गयी। चेहरे के स्नायु भरे-भरे करनेवाली क्रीम की तरह ही कुछ बनाना होगा। लेकिन इस लड़के 'जॉनस्टन' के पैर तो बिलकुल ही पंगु हो गये हैं। जॉनस्टन के मां-बाप को डा कार्वर ने कोई आश्वासन नहीं दिया लेकिन अपना काम तुरंत शुरू कर दिया। उपचार शुरू हुआ।

मिशिगन में तृतीय राष्ट्रीय केमर्जी सभी में उन्होंने अनेक स्लाइड्स की मदद से लोगों को दिखलाया था कि उनके उपचारों से पंगु जॉनस्टन बैसाखी के सहारे धीरे-धीरे चलने लगा और वही जॉनस्टन लंबे उपचार के बाद फुटबाल संघ का खिलाड़ी है।

'मैं निश्चित दावे के साथ यह नहीं कह सकता कि मूंगफली के तेल में निर्जीव और अकार्यक्षम स्नायु पूर्ववत करने के गुण हैं या नहीं फिर भी यह बात निश्चित है कि पिछले कुछ सालों में इसी तेल की मालिश से मैंने बहुत से रोगियों को आराम पहुंचाया है।

उनके केमर्जी सभा के भाषण की गूंज देशभर में हुई। देश के कोने-कोने से लकवे से ग्रसित बच्चों को लेकर उनके मां-बाप टस्कगी आने लगे। डा कार्वर से इलाज करवाने के लिए अपने बीमार बच्चों को लेकर उनकी इतनी भीड़ लगी रहती कि एकमेव छुट्टी का दिन इतवार भी अब बीमारों के इलाज में बीतने लगा। इसके अलावा, हजारों की संख्या में पत्र आते, समस्या का समाधान मांगनेवाले, सलाह मांगनेवाले।

करीब-करीब ढाई सौ बीमारों का उन्होंने इलाज किया। उनमें से कछ में लक्षणीय सुधार दिखाई दिया और बाकी लोग पूर्णतया अच्छे हो गये। अब यह तेल का गुण था यह उनके हाथ का, इसे वैद्यकीय क्षेत्र के विशेषज्ञ न होने के कारण अपने इस उपचार की सार्थकता अधिकृत रूप से प्रतिपादित नहीं कर सके।

सन् 1923 में पोलियो की भयानक बीमारी में अमेरिका के हजारों बच्चे अपंग हो गये। डा कार्वर के पास उपचार करने के लिए दक्षिण के गोरे और नीग्रो बच्चे तो आते ही थे दूरदराज उत्तर से भी बच्चे टस्कगी में लाये जाते। अपने अपंग बच्चों को गोद में लिए, अपनी बारी आने की राह में कितने ही लोग डा कार्वर के दरवाजे पर कतार से बैठे रहते।

सारे देश का ध्यान इन उपचारों की ओर लगा हुआ था। जॉर्जिया में एक पोलियो क्लिनिक था। किंतु नीग्रो बच्चों की वहां सुनवाई नहीं होती थी। परिणाम सन् 1939 मे 'नेशनल फाउंडेशन फॉर इन्फेन्टाइल पैरलिसिस' ने एक बड़ी धनराशि जमा करके टस्कगी में पोलियो क्लिनिक खोलने में सहायता की। अस्थिरोग विशेषज्ञ डा शेनॉल्ड की वहां पर संचालक के रूप में नियुक्ति हुई। डा कार्वर के मालिश - कौशल के विषय में डा शेनॉल्ड कहते:

'उन्हें शरीर शास्त्र का गहरा ज्ञान था। उनकी उंगलियां मृत स्नायु को पहचान लेतीं। किसी कुशल फीजियोथैरापिस्ट से अधिक कौशल था उनके हाथों में।' इन सब होने हुए भी 'निगर' कहकर अवहेलना करने वाले भी निकल आते थे।

एक बार डा कार्वर एक छोटे बच्चे की जांच कर रहे थे कि एक भारी-भरकम गोरा आदमी, कतार तोड़कर, अंदर घुस आया।

'मेरा पैर ठीक करो।'

'अभी संभव नहीं।' डा कार्वर फिर से छोटे लड़के को देखने लगे।

'मुझे मना करता है निगर।' वह गोरा झल्लाकर चिल्लाया। 'सौ मील दूर से आया हूं, पैर ठीक कराने, तो कया तुमसे यूं ही 'ना' सुनने के लिए। कोई अच्छा कारण बताओ।'

डा कार्वर को ऐसे तमाशों से सख्त नफरत थी और समय तो ऐसे प्रसंगों से वे दूर ही रहते लेकिन अभी तो उत्तर देना अत्यावश्यक था। उन्होंने कहा, 'मैरी प्रार्थना या दवाई ही तुम्हारा मन निर्मल करने में असमर्थ हैं।'

डा कार्वर ने कभी भी अपनी मूंगफली के तेल का पेटेंट नहीं लिया बल्कि उन्होंने यही विचार किया कि वह तेल कम से कम दामों पर उपलब्ध हो जिससे गरीब से गरीब आदमी भी उसका इस्तेमाल कर सके।

इन्हीं दिनों 'जॉन हापकिंस यूनिवर्सिटी' ने डा कार्वर के मार्गदर्शन में उष्ण कटिबंध के भूखे बच्चों के लिए 'शाकाहारी पूर्ण आहार' का निर्माण किया और कितने ही भूखे बच्चों और सैनिकों को जीवनदान दिया।

बाल्टीमोर शहर में नीग्रों लोगों के 'मॉर्गन कालेज' में डा कार्वर भाषण करने के लिए आनेवाले थे। 'जॉन हापकिंस यूनिवर्सिटी' के वरिष्ठ अधिकारियों को जैसे ही इस बात का पता चला, उन्होंने डा कार्वर के सम्मान का समारोह करने का विचार किया। पैसे और कीर्ति दोनों से दूर रहने वाले इस नीग्रो तपस्वी का सत्कार करने की योजना बनी। मेहमानों की फेहरिस्त बनी। उसमें 'मॉर्गन कालेज' के रजिस्टरार श्री एडवर्ड विल्सन का नाम भी था।

बाल्टीमोर शहर में प्रो कार्वर आये, हमेशा अपने पेटेंट कपड़ों में। वही रंग उड़ा हुआ कोट, पैबंद लगी पैंट, और बार-बार मरम्मत किए हुए जूते!

सभागृह खचाखच भरा था। विद्यार्थी प्रो कार्वर का भाषण सुन रहे थे।

'जब आप जीवन की साधारण बातों में असाधारण सफलता प्राप्त करेंगे तब सारी दुनिया का ध्यान आप पर लगा रहेगा। कचरा समझी हुई चीजों से क्या आप कुछ काम की चीजें बना सकते हैं?'

आप सोचते होंगे कि जिस समाज में आपकी जरूरत है ऐसी जगहों पर अच्छा काम हो सकेगा। लेकिन आप यह बात अवश्य याद रखें कि आपके परिश्रमों की, साथ में आपकी भी उपेक्षा ही होने वाली है। ऐसी जगहों पर भी काम करना होगा जहां 'हमें आपकी आवश्यकता नहीं' वाली भावना साफ-साफ झलकती होगी। हमेशा से यही होता आया है। ईसा मसीह के साथ भी यही हुआ था। गैलिलियो के अनुभव ऐसी ही थे। लेकिन अब उसी ईसा को सारी दुनिया 'तारणहार' कहती है।'

'सृजनात्मक प्रतिभा वही जिसकी वजह से सारी दुनिया आपका आदर करे। फिर वर्ण चाहें कोई भी हो। सवाल सिर्फ इस बात का है कि आप क्या वह दे सकते हैं, जो दुनिया चाहती है।'

'सत्य को पहचानो, यह सत्य ही आपको मुक्ति दिलायेगा। विज्ञान का अध्ययन करो। यह विज्ञान ही आपको मुक्ति दिलायेगा।'

मार्गन कालेज के विद्यार्थियों ने उनके भाषण का एक-एक शब्द आत्मसात किया। समस्त चेतना केवल कानों में केंद्रित कर सिर्फ सुन रहे थे वे लोग। तालियों की गड़गड़ाहट से सभागृह गूंज रहा था।

उसी रात जॉन हापकिन्स यूनिवर्सिटी में डा कार्वर का सत्कार समारोह था। इस महामानव के स्वागत के लिए यूनिवर्सिटी का सभागृह सजाया गया था। किसी भव्य, दिव्य अनुभूति के अहसास से सारा वातावरण रोमांचित था। एक निराला ही रंग था।

नियत समय पर डा कार्वर पधारे। अपने उन्हीं पेटेंट कपड़ों में। सिर्फ कोट के अंदर की शर्ट बदली गयी थी। उनके इस स्पेशल यूनीर्फाम की तरफ बारबार देखना सभ्यता के विरुद्ध होगा यह जानकर हर कोई दूसरी तरफ देखने की कोशिश कर रहा था। लेकिन नजर बार-बार उनके कपड़ों की ओर ही जाती थी।

इस समारोह के बारे में श्री एडवर्ड ने कहा:

'दिमाग विचार शून्य हो गया था, कुछ काम ही नहीं कर रहा था। मैं तो थोड़ा अपमानित सा भी महसूस कर रहा था।'

लेकिन थोड़ी ही देर में सारे वातावरण का रंग बदल गया था। सब का पूरा ध्यान उनकी बातों पर लगा हुआ था।

प्रो कार्वर विविध विषयों पर बड़े मजे से अपनी अनोखी शैली में बोल रहे थे। और हम सब? अपने कलफ लगे कपड़ों में

कड़क कॉलर में, काटनेवाले जूतों में बेचैन थे और ये महाशय भोजन के स्वादिष्ट व्यंजनों की प्रसन्नता का स्वाद ले रहे थे। दुनिया के चमत्कारों पर भाष्य कर रहे थे। कोई चुटकुला सुना रहे थे। उनके सौम्य चेहरे के पीछे छिपी बुद्धिमत्ता पल-पल महसूस हो रही थी। हम ही अपने आप को कृत्रिम शिष्टाचारों में जकड़े बैठे थे। लेकिन वे वास्तव में महान थे। हम लोगों को अपनी ही दुविधा से बाहर निकाला उन्होंने।'

लेकिन एक बार एक दूसरे समारोह में उन्हें बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा।

सन् 1933 की बात है। टस्कगी संस्था में इस समारोह की जोरदार तैयारियां चल रही थीं। कार्यक्रमों के ड्रेस रिहर्सल हो रहे थे। बड़े-बड़े जाने-माने लोग उस समारोह के लिए आने वाले थे। अत: टस्कगी वाले बेसब्री से इस समारोह का इंतजार कर रहे थे। सब का जोश-खरोश जोरों पर था। शांत चित्त थे डा कार्वर।

सारी तैयारियां पूरी हुईं। लेकिन इन महाशय के कपड़ों का क्या? सब को कठिनाई में डालने वाला और कभी हल न होने वाला जटिल प्रश्न। आखिर संस्था के कुछ बुजुर्गों ने यह काम अपने सिर पर लिया। डा कार्वर को बड़ी मुश्किल से तैयार किया और समारोह के अनुरूप कपड़े बनवाये और फिर समारोह के दिन भी बड़ी मिन्नतें करके डा कार्वर को नये कपड़े पहनने पर मजबूर किया।

समारोह शुरू हुआ। मंच पर डा कार्वर के कार्य के, अदम्य लगन के बखान हो रहे थे और डा कार्वर अपने कपड़ों में बेचैन हो रहे थे। विशेष रूप से सिलवाये हुए घेरदार चोगे में परेशान हो रहे थे। जैसे-जैसे तालियों की गड़गड़ाहट बढ़ रही थी वैसे-वैसे उनकी परेशानी बढ़ रही थी। जब वे सभा का अभिवादन करने के लिए उठे तब तालियों की गड़गड़ाहट ने सभा मंडप को हिला दिया। मंच पर खड़ा था एक वयोवृद्ध तपस्वी, ज्ञान का देवता। अपने नये कपड़ों में हैरान, परेशान। उन्होंने कहा:

'ऐसे कपड़े मैंने आजतक नहीं पहने। मुझे तो इनमें कुछ सूझ नहीं रहा। जीते जी मैं ऐसे कपड़े दोबारा नहीं पहनूंगा।' और फिर वे मंच छोड़कर अपने कमरे में आ गये। अपनी हमेशा की पेटेंट ड्रेस पहनी और प्रयोगशाला में चल दिये।

अंधेरी राहें

डा कार्वर की उम्र अब सत्तर सालों से अधिक थी। टस्कगी में आये उन्हें चालीस साल हो गए थे। उम्र के साथ-साथ काम भी बहुत बढ़ गया था। लेकिन अभी भी सवेरे 4 बजे उठकर घूम आने की आदत नहीं बदली थी।

उनके नाम आने वाले पत्रों की संख्या इतनी अधिक थी कि सिर्फ पत्र व्यवहार सम्हालने में दो सेक्रेटरी दिन भर व्यस्त रहते।

सन् 1934 में अमेरिका के कृषि मंत्रालय ने उनकी 'मायॅकोलोजी एंड प्लांट डिजीज सर्वे' विभाग के संचालक के रूप में नियुक्ति की। इस नियुक्ति के कारण उन्हें काफी परेशानी होने लगी। उनसे अकेले तो काम पूरा ही नहीं हो सकता था। अब कोई सहायक रखना एकदम जरूरी था।

संस्था के अध्यक्ष श्री पैटर्सन ने डा कार्वर से अनुरोध किया, 'आपने पिछले चालीस वर्षों से कभी वेतनवृद्धि स्वीकार नहीं की। वेतन वृद्धि नहीं तो कम-से-कम मदद के लिए एक सहायक रख लीजिए।'

डा कार्वर ने सोचा, इस कार्य को मेरे बाद सफलतापूर्वक चला सके ऐसा 'वारिस' होना आवश्यक है। किसी होशियार और उत्साही नौजवान को तैयार करना चाहिए।

नार्थ कैरोलिना के कृषि विषय के युवा प्राध्यापक श्री ऑस्टीन कर्टिस को सहायक के रूप में चुना गया। पहली भेंट मं ही उसकी चमकती, गहरे पैठ जानेवाली आंखों ने डा कार्वर को बहुत प्रभावित किया। ऐसी ही आंखें 'देख' सकती हैं। उनका यह अनुमान जल्दी ही सही सिद्ध हुआ।

श्री ऑस्टीन ने प्रयोगशाला में मैग्नोलिया के बीजों से रंग बनाया। इस प्रयोगमालिका के समय प्रज्ञाशील ऑस्टीन की एकाग्रता देखकर डा कार्वर को बड़ा संतोष मिला। डा कार्वर की प्रयोगशाला के बंद दरवाजों से पहली बार और एक 'सत्यशोधक' निखर आया था।

यह शिष्य अपने गुरु की अनेक कसौटियों पर खरा उतरा था। अपने इस शिष्य की डा कार्वर बड़ी प्रशंसा करते। ऑस्टीन के माता-पिता को लिखे पत्र में उन्होंने लिखा था:

'मैं स्वयं विश्वास नहीं कर सकता था कि ऑस्टीन इस तरह मेरे जीवन और कार्य का अविभाज्य अंग बन जायेगा। ऑस्टीन बुद्धिमान है, सृजनशील है। उसका साथ पाकर मुझे बड़ी खुशी मिली है। उसके आने से मेरी जिंदगी जरूर कुछ बढ़ गयी है।'

गुरु-शिष्य की यह जोड़ी अंत तक बनी रही। कर्टिस ने डा कार्वर की आखरी सांस तक उनका साथ निभाया। गुरु ने अपने शिष्य की प्रगति में सर्वोपरि सहायता की, प्रोत्साहन दिया। गरीब बांधवों के लिए वरदान सिद्ध हो सकने वाले उसके शोधकार्य देखकर डा कार्वर को असीम संतोष हुआ। कर्टिस ने मैग्नोलिया से अनेक प्रकार के रंग तैयार किये। ये सस्ते और अच्छे रंग आगे चलकर 'कर्टिस ब्राउन्स' के नाम से मशहूर हुए। इन सब खोजों पर डा कार्वर को बड़ा नाज था।

डा कार्वर कर्टिस को 'बेटा' कहकर पुकारते। बाकी सहकर्मी इस पिता-पुत्र के नाते को जानते थे और कर्टिस को 'चिरंजीव कार्वर' कहा करते।

जीवन की संध्या के समय में डा कार्वर को एक अच्छा शिष्य मिला था, पुत्रवत प्रेम करने वाला, देखभाल करने वाला, उनके काम की बागडोर सम्भाल सकने वाला एक 'वारिस' मिला था, एक 'जागरूक' शिष्य मिला था।

काम करने के अवसरों के अतिरिक्त और कुछ कर्टिस ने उनसे नहीं मांगा था। ज्ञानार्जन का अभिलाषी शिष्य अपने गुरु को बड़ा प्रिय था। उन्हें अचरज होता कि 'इतने वर्ष मैंने बगैर कर्टिस के बिताये ही कैसे?' उनके इस मानसपुत्र ने उनकी बड़े प्यार से, बड़ी ही आत्मीयता से देखभाल की।

कर्टिस ने ही समय-समय पर पत्रकार परिषदें बुलवायीं। उन परिषदों में पत्रकारों को डा कार्वर के असाधारण कार्य का विस्तृत विवरण दिया और सारी दुनिया से डा कार्वर का सही परिचय करवाया।

कुछ वर्षों पहले न्यूयार्क के मार्बल कोलेजिएट चर्च में उन्हें भाषण के लिए निमंत्रित किया गया था। उन्होंने वहां कहा था:

'ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि दी है, ज्ञान दिया है, वह इसलिए कि मनुष्य समाज की सेवा कर सके।' आगे उन्होंने कहा, 'मेरी प्रयोगशाला में किताबें नहीं होतीं। जब कभी नये आविष्कार की जरूरत होती है, मुझे खुद-ब-खुद नयी कल्पनाएं सूझती हैं। क्या करना है इसकी प्रेरणा अंतर्मन से मिलती है।'

उनके इस कथन पर अखबार वालों ने कुहराम मचा दिया।

'डा कार्वर के इस विवरण से उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव झलकता है। असली वैज्ञानिक कभी पुस्तकों को नगण्य नहीं समझता और अपनी सफलता का श्रेय अपने अंतर्मन को नहीं देता। (न्यूयार्क टाइम्स का संपादकीय)

इस कुहराम से डा कार्वर व्यथित हुए। उनके विधान का उल्टा अर्थ लगाया गया था। बिना ईश्वर की मदद के और पुस्तकों के मार्गदर्शन से कोई भी शोधकार्य पूरा नहीं हो सकता। लेकिन जिन बातों की खोज पहले ही हो चुकी हो, जो बातें सिद्ध हो चुकी हों, उन्हें नये सिरे से दोहराने में क्या अर्थ है? वे तो सृजनशील वैज्ञानिक थे। जो तथ्य आज तक अंधेरे में थे उन पर प्रकाश डालना चाहते थे। जो बातें आज तक सिद्ध हुई ही नहीं, भला उनके अध्ययन की रीतियां किसी किताब में कैसे मिलेंगी? तो फिर पुराने ढर्रे से चलने से क्या लाभ हो सकता है? इसी के साथ वह बात भी सच थी कि नयी राहें चुनने की सामर्थ्य और बौद्धिक क्षमता उन्होंने पुस्तकों के अध्ययन से ही प्राप्त की थी। कुछ नया आविष्कार करने के लिए आवश्यक बुनियादी ज्ञान उन विषयों के गहन अध्ययन से ही प्राप्त किया था। यदि इन पुस्तकों का अध्ययन न किया होता तो वे ईश्वर के मार्गदर्शन का लाभ भला कैसे उठाते? और यदि ईश्वर के सान्निध्य में वे न होते तो उसके संकेतों को कैसे समझ पाते।

उन्होंने अपनी पैरवी में कुछ भी नहीं कहा। वाद-विवाद में समय गंवाना उनके लिए संभव नहीं था। लेकिन इस प्रसंग के बाद उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अखबार वालों को इंटरव्यू देना बंद। एक तो काले होने के कारण उपेक्षित, उस पर यह मौन। इसकी वजह से उनके कार्य को उचित न्याय नहीं मिल पा रहा था। लेकिन कर्टिस ने पक्का इरादा बांध लिया। उसने अखबार वालों को साफ-साफ शब्दों में इंटरव्यू दिए। डा कार्वर की निर्विवाद महानता उन्हीं की भाषा में समझायी, जिसके बाद डा कार्वर का नाम सबके सामने आया। उनके बारे में प्रचलित कथाओं और दंत कथाओं पर रोक लगी। जो लोग डा कार्वर को ठीक से नहीं जानते थे, उन्हें उनका सही परिचय मिला। वृत्त पत्रकारों ने दिल से डा कार्वर की महानता मान ली। 1939 में न्यूयार्क टाइम्स ने उन पर सम्पादकीय लिखा। उन्हीं दिनों डा कार्वर को रूजवेल्ट पदक मिला था। इसलिए अभिनंदन करते हुए सम्पादकीय लिखा गया था। लेख का अंत इस प्रकार था:

'क्या इस पीढ़ी में और कोई दूसरा इंसान है, जिसने दक्षिण के लिए और कृषि विकास के लिए डा कार्वर जैसा कार्य किया है?'

दुनिया के अनगिनत अखबारों में उन पर लेख लिखे गये। उनके कार्य को सराहा गया।

कृषि और दक्षिण दोनों को पुनरुत्थान और उज्जवल भविष्य की राह दिखाने वाले 'कार्वर' इन शब्दों में उनकी सराहना होने लगी। उन्हें मिलने वाले सम्मान और पदवियों में वृद्धि होती ही जा रही थी। लेकिन कीर्ति और प्रसिद्धि के इस तूफान ने डा कार्वर को कभी भी विचलित नहीं किया।

टस्कगी संस्था के डोरोथी हॉल में धुलाई विभाग की स्थापना हुई, तब डा कार्वर ने कहा:

'यही मेरा असली कार्यक्षेत्र है।'

धुलाई केंद्र में मुझे घर का सा अपनापन महसूस होता है।'

डा कार्वर की देशभक्ति निर्विवाद थी। वर्ण विद्वेष की आग भी उस पर आंच नहीं ला सकी। सन् 1917 के प्रथम महायुद्ध के समय टस्कगी से काफी विद्यार्थी हावर्ड भेजे गये थे, खासकर प्रशिक्षण पाने के लिये।

वे विद्यार्थी जब टस्कगी लौटे तो उन्होंने प्रो कार्वर से राजधानी में मिले सौतेले व्यवहार की शिकायत की। तब प्रो कार्वर ने कहा:

'आप लोग देश के लिए लड़ने गये थे इसलिये ऐसी महत्वहीन बातों पर ध्यान ही मत दीजिए। आप की यह धारणा कैसे हुई कि अज्ञान और विद्वेष की आग किसी एक शहर की खासियत है? क्या उत्तर, क्या दक्षिण सभी जगहों पर ऐसे मूर्ख शिरोमणि भरे पड़े हैं। वर्णभेदियों के कारण कर्तव्य पूर्ति में बाधा न आये, यह सावधानी हमें स्वयं लेनी है। समय ही उन्हें उनकी गलती बतलायेगा। जब उन्हें अपनी गलती का अहसास होगा तब आप सही मायनों में मुक्त होकर, उनके साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चल सकेंगे।'

'इस बात को अपनी कृति से सिद्ध करो कि दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं है जो नीग्रो नहीं कर सके। आप सब ऐसे ही स्वयंसेवक बनें इसलिए टस्कगी आपके सम्पूर्ण विकास का प्रयास कर रही है।'

अपनी इस संस्था में पढ़नेवालों के अभावों के चर्चे 'बाहर' होते हैं, मिर्च-मसाले लगाकर होते हैं तब आप भड़क उठते हैं, अपनी योग्यता सिद्ध करने के लिए उतावले हो जाते हैं। लेकिन थोड़ा रुकें, इससे क्या लाभ होगा? बल्कि अपनी संस्था ही कमजोर बनेगी। इसलिए कठोर-से-कठोर आलोचना को भी अपने दोष दूर करने का साधन मानकर चलें, आगे बढ़ते रहें। 'आदमी की काबलियत का साक्षी उसका ज्ञान होता है, वर्ण नहीं।'

गर्मियों की छुट्टियों में अनेक गोरे विद्यार्थी रसायनशास्त्र का गहन अध्ययन करने के लिए डा कार्वर के पास आते। अन्यथा वे लोग 'अधिकृत' रूप से आ नहीं सकते थे। लेकिन डा कार्वर बिना कोई द्वेषभावना मन में लिए, उन्हें ज्ञानदान करते।

विश्वविख्यात होने के बाद भी डा कार्वर वर्णभेद से बच नहीं सके। टस्कगी में आये हुए चालीस-पैंतालीस साल हो गये फिर भी सामाजिक विषमता सन् 1896 जैसी ही थी। अस्पृश्यों की तरह बहिष्कृत नीग्रो समाज अभी भी वर्णद्वेष का, रंगभेद का शिकार बना हुआ था।

दक्षिण में तो नीग्रो को बड़े ही यक्ष प्रश्न सताते। कभी किसी ने थोड़ा कुछ बुरा बर्ताव किया तो लोग कहते - नीग्रो से कोई और क्या आशा करे? और यदि उसने कोई अच्छा काम किया तो कहते, उसकी रगों में जरूर गोरा खून होगा, अन्यथा वह गोरों की बराबरी का काम कैसे करता?

डा कार्वर के बारे में भी ऐसे ही विवाद थे। 'उनकी रगों में जरूर गोरा खून होगा अन्यथा वे कैसे इतने बुद्धिमान हुए?' लेकिन डा कार्वर को यह बात जरा भी मंजूर नहीं थी। वे स्वयं को शत-प्रतिशत नीग्रो ही कहते।

कुछ लोग जार्जिया से टस्कगी आये थे। संस्था देखने और डा कार्वर से भी मिलने। वे लोग सीधे प्रयोगशाला में घुस आये। डा कार्वर की उपस्थिति की तरफ जरा भी ध्यान दिए बगैर, बड़े मजे में प्रयोगशाला में घूमने लगे, ऐसे जैसे किसी सार्वजनिक उद्यान में हों। मनमाने ढंग से उपकरणों को हाथ लगा रहे थे।

उनमें से एक डा कार्वर के पास आकर कहने लगा, 'हम लोग (वर्ण भेद के लिए प्रसिद्ध) जार्जिया से आये हैं, लेकिन हमारे

मन साफ हैं। हम लोग आपसे मिलने आये हैं।'

डा कार्वर ने कहा, 'सज्जनों, आपके बर्ताव से मेरा मन इतना अशांत हो गया है कि मैं आपकी बात समझ नहीं पा रहा हूं।' और वे वहां से चल दिये।

बाद में जब सहयोगी ने उन्हें इस रूखे उत्तर के लिए टोका तो डा कार्वर ने कहा, 'वे दर्शक' प्रमाणिक नहीं थे, और मैं कोई प्रदर्शन की वस्तु नहीं था।'

डा कार्वर के भाषणों क दौरे, परस्पर विरोधी अनुभवों के भंडार थे। जब वे मंच पर खड़े होकर भाषण देते तो बड़े-बड़े मान-सम्मान उनके आसपास बिखेरे जाते। हॉल चाहें कितना ही बड़ा क्यों न हो, जगह कम ही पड़ती। हॉल की भीड़ से भी ज्यादा लोग बाहर खड़े होते। लेकिन इस मंच तक पहुंचने से पहले की यात्रा में कितने मानसिक और शारीरिक क्लेशों को सहना पड़ता। थोड़ा आराम करने लायक जगह तक नसीब नहीं होती। बड़े-बड़े होटलों के प्रतीक्षालयों में सांशक मन से राह देखनी पड़ती उन होटलों में रहने की अनुमति मिलने की।

डा वाशिंगटन के निधन के बाद उनके कार्य की जिम्मेदारी डा कार्वर ने संभाली। संस्था के कार्य की जानकारी देने के लिए, भाषणों के लिए और फंड जमा करने के लिए, अनुसंधान के कामों के लिए उन्हें टस्कगी की सुरक्षित दुनिया से बाहर जाना पड़ता। उन दिनों उनकी यात्रा, इंजिन के पास, नीग्रो के लिए अलग से रखे हुए छोटे धुएं से भरे डिब्बे में होती। आगे चलकर जब उनकी विद्वता और अनुसंधान की प्रसिद्धि चारों ओर फैल गयी तब उनके लिए विशेष व्यवस्था की जाने लगी। लेकिन चोरी छिपे, चुपचाप। क्योंकि अगर इस बात की भनक भी पड़ जाती तो वर्णद्वेषी तो तैयार ही थे, हाथों में पत्थर लिए। यात्रा अगर तीन-चार दिनों की हो तो इस लुका छिपी के कारण डा कार्वर बड़े परेशान हो जाते। अपनी विशेष व्यवस्था करने वालों को वर्ण द्वेषियों के क्रोध का शिकार न बनना पड़े इसलिए रेल के डिब्बे में छिपकर बैठना पड़ता था।

प्यास बुझाने के लिए भी काले लोगों का प्याऊ खोजना पड़ता। कभी कोई सभी दूसरी-तीसरी मंजिल पर होती तो नौकर लोगों के लिए होने वाली सीढ़ियों से ही आना-जाना पड़ता।

जल्दी ही उन्होंने एक आदत सीख ली। बाहर जाने से पहले थोड़ा कुछ खाने की। नहीं तो भूखे पेट ही मंच पर बैठना पड़ता। जहां प्यास बुझाने के लिए पानी मिलना आसान नहीं था, खाने की बात तो बहुत दूर थी। इतने बड़े वैज्ञानिक की ऐसी स्थिति थी तो सामान्य नीग्रो की हालत क्या होगी? उनकी उपेक्षा आंखों के सामने थी लेकिन वे चुप ही रहते।

डा कार्वर ने अपने सुख-दुख का कभी विचार ही नहीं किया। लेकिन समाज में अपमानित होने के प्रसंगों से वे दूर ही रहे।

उनके सामने उनके कार्य की गौरव गाथा कही जाती:

'अपने लोगों के लिए काम करते हुए आपको कितनी खुशी मिलती होगी।'

'मेरी राह का एक रोड़ा यदि आप दूर करते तो मेरी राह कितनी सुलभ हो जाती।...' डा कार्वर का मौन उत्तर होता।

कई बार अनजान शहरों में उन्हें कड़ी धूप में होटल ढूंढने पड़ते क्योंकि सभी होटल नीग्रो लोगों के लिए खुले नहीं होते थे। अपमान से बचने के लिए उन्हें कितने मानसिक और शारीरिक क्लेश सहने पड़ते होंगे। टस्कगी यात्रा के लिए निकलते समय उन्हें मन की कैसी तैयारी करनी पड़ती होगी।

अपनी व्यक्तिगत सहूलियतों के लिए टस्कगी से बाहर जाने से उन्होंने कभी भी इंकार नहीं किया। लेकिन बाहरी दुनिया के वर्णभेद से वे बड़े व्यथित होते। ऐसा होते हुए भी जब तक शरीर ने साथ दिया तब तक उन्होंने कर्तव्य निभाया, अपनी व्यक्तिगत बातों को दूर रखकर। अंधेरे में दीप जलाने का अवसर कभी नहीं छोड़ा।

मिसिसिपी राज्य में वर्णद्वेष था और साक्षरता भी बहुत कम थी। उस राज्य में भी उन्होंने वाय एम सी ए की मदद से भाषणों का दौरा किया। इस दौरे के बारे में मिसिसिपी के सेनेटर ने कहा, 'टस्कगी के इस मूंगफली वाले के पास ऐसा नया क्या हो सकता है जिसे हमारे गोरे लड़के सुनें?'

इस राज्य में जगह-जगह पर 'निग्गर, मुंह काला करो यहां से' की तख्तियों से उनका स्वागत हुआ। वैसी परिस्थितियों में भी उन्होंने भाषण दिये और विद्यार्थी श्रोताओं ने अच्छा प्रतिसाद दिया।

मिसिसिपी के ही एक महिला विश्वविद्यालय में उनका भाषण होनेवाला था। वर्णद्वेषियों की कार्यवाही से उसे ऐन वक्त पर रद्द कर दिया गया। संयोजकों ने एक नीग्रो स्कूल में सभा का आयोजन किया। गोरों के स्कूल प्रमुख ने अपने छात्रों को उस सभा में जाने से मनाही की।

इस घटना के बाद स्कूल के विद्यार्थियों ने अपनी शाला के वृतपत्र में डा कार्वर से जाहीर क्षमायाचना की।

'ऐसा लगता है कि पिछले सप्ताह का संपादकीय 'एक कदम और' लिखने में हमने थोड़ी उतावली की। यह संपादकीय लिखते समय हमें लगा था कि दक्षिण का दृष्टिकोण अब विशाल हो गया है और वर्णभेद अब इतिहासकालीन बात हो गयी है। अगर वस्तुस्थिति यही होती तो हमें बड़ी खुशी होती। वस्तुतः स्थिति वैसी होनी चाहिए लेकिन वैसी है नहीं। प्रो कार्वर के संबंध में दिखाई हुई उदासीनता दर्शाती है कि हम जहां थे आज भी वहीं पर हैं। यह सत्य है कि अभी भी हम अपने संकुचित दृष्टिकोण को बदलकर वर्णभेद के भूत को समाप्त नहीं कर पाये हैं...

अब शर्म से गर्दन झुकाकर बैठे रहने की अपेक्षा इस स्थिति को सम्पूर्णतया बदलने के लिए हमें पूरी लगन से काम करना चाहिए।

उनके नीग्रो होने के कारण को समृद्ध बनानेवाली कितनी ही बातों से उन्हें वंचित रहना पड़ा। कितनी ही सुंदर, उपयुक्त बातों का आस्वाद लेना संभव नहीं हुआ। किसी सुदर उद्यान में समय बिताना, किसी कला प्रदर्शनी या संगीत की महफिल में अपने आप को डुबो देना या स्वयं को भुला देना नसीब ही नहीं हुआ। क्योंकि ऐसे किसी स्थान पर नीग्रो को प्रवेश नहीं था। उनके नाम के दबदबे के कारण शायद उन्हें ऐसे किसी स्थान पर प्रवेश मिल भी जाता लेकिन उसी समय आसपास की दुःसह नजरों का सामना करना पड़ता। गंदगी में रहकर कोई सुगंध कैसे लूटे? अपमानित मन को आनंद कैसे मिले? भावनाओं के तारों से सुरीला संगीत कैसे निकले? क्या दुखी मन से कोई आनंद पा सकता है?

वर्णभेद की तीव्र आंच सहकर भी उन्होंने अपनी जबान से कभी कटु शब्द नहीं कहे। 'मेरे मुंह पर पानी फेंककर 'यह तो बारिश है' ऐसा वे लोग नहीं कह सकते। मैं द्वेष करूं इतना इतना नीचे कोई मुझे नहीं खींच सकता।... मुझ पर अनेकों अन्याय हुए लेकिन हर बार अगर मैं अन्याय का निराकरण करने में ही लगा रहता, उसके विरुद्ध लड़ता रहता तो अपना कार्य करने के लिए मेरे पास शक्ति या बुद्धि बचती ही नहीं।'

वंशभेद के चक्कर में फंसकर अपने कार्य को न्यून बनाने की अपेक्षा उन्होंने अपने स्थान पर जमे रहकर कार्यरत रहना अधिक पसंद किया। उनकी इस अविचल कार्यनिष्ठा के कारण ही उनके हाथों इतनी लोकोत्तर समाजसेवा हुई। केवल अपने बांधवों को ही नहीं बल्कि सारे दक्षिण प्रदेश को भुखमरी की खाई से निकालने में, ऊपर उठाने में वे सफल हुए। उनके निष्काम कर्मयोग के कारण, उनकी निःस्पृहता के कारण वे सिर्फ टस्कगी ही नहीं, सारी मानवजाति के लिए आदरणीय हो गये। प्रातः स्मरणीय हो गये। ईश्वरप्रदत्त दो हाथ और मन के आधार पर एक मनुष्य समूचे राष्ट्र की, अखिल मानवजाति की कितनी सेवा कर सकता है, इसका आदर्श उदाहरण थे डा कार्वर।

डा कार्वर के रूप में, नीग्रो वंश की अनंत पीढ़ियों के छिपे हुए गुण, कला और आकांशाएं शुद्ध स्वरूप में विकसित होकर दुनिया के सामने आयी थीं। उनकी मृदु वाणी, कोमल स्वभाव और तरल बहुस्पर्शी प्रतिभा से हर कोई प्रभावित होता। उद्धत भाव उनके स्वभाव में था ही नहीं। वह गुण तो ईश्वर ने उनके विरोधिकों के लिए सुरक्षित रखा था।

नये नीग्रो नेताओं का यह आक्षेप था कि डा वाशिंगटन और डा कार्वर ने गोरों की उद्दंडता चुपचाप क्यों सह ली? लेकिन डा वाशिंगटन और डा कार्वर को टस्कगी स्कूल को इन झगड़ों से बचाना था। नया लगाया पौधा जड़ से उखड़ जाये इससे तो अच्छा उसके पनपने के लिए अधिक देखभाल की जाये। इसलिये कभी-कभी अवहेलना व अपमान सहकर भी उन्होंने स्कूल के भले की सोची। टस्कगी स्कूल के लोग भी इन दोनों को सहयोग देते क्योंकि वे जानते थे कि डा वाशिंगटन और डा कार्वर अपने भाई-बंधुओं को 'जागृत मानव' बनाने का महान कार्य कर रहे हैं और किसी भी कीमत पर यह कार्य खंडित नहीं होना चाहिए।

ऑस्टिन कर्टिस का कहना था, 'यह आज के नीग्रो नेता लोग कहां से आये? डा वाशिंगटन और डा कार्वर की समर्पित सेवा से संवारे हुए समाज ही से आये हैं न? कि सीधे आकाश से टपके हैं?'

डा कार्वर का रसायन शास्त्र का प्रगाढ़ ज्ञान सबको चकित कर देता था। वे रसायन शास्त्र को साध्य प्राप्ति के साधन के रूप

में देखते। उनका उद्देश्य तो समाज की जरूरतों को अधिक-से-अधिक पूरा करना था। उसी काम में वे रसायन शास्त्र का उपयोग करते। कृषि - उपज का अन्न और कपड़ा इन दो उपयोगों के अलावा और कोई उपयोग हो सकता है यह बात आज तक किसी ने सोची ही नहीं थी। उद्योग धंधों को लगने वाले 'कच्चे माल' के रूप में उसका उपयोग हो सकता है यह कहने वाला ऐसा दृष्टा समाज में आज तक कोई मिला ही नहीं था। डा कार्वर के शोधकार्यों से औद्योगीकरण के नये पर्व की शुरुआत हुई।

अमेरिका में सन् 1896 तक मूंगफली एक उपेक्षित कृषि उत्पादन था। अब उसी मूंगफली का कृषि उत्पादनों में छठा नंबर था।

उन्होंने भूमिगत गुप्त धन की खोज की थी। जब सका ध्यान इस धन की ओर आकर्षित हो गया तो डा कार्वर दूसरी खोजों की ओर बढ़े।

बाजारों में कृषि उत्पादनों की मांग अच्छी बढ़ गयी थी और भविष्य में भी इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं रह गयी थी। कारखानों को भी कच्चे माल का अभाव नहीं होगा ऐसी स्थिति हो गयी थी और विशेष बात यह थी कि डा कार्वर अपने जीते जी इस उज्जवल भविष्य की सुनहरी भोर देख रहे थे।

एक लंबी अंधेरी यात्रा अब समाप्ति पर थी।

सार्थक हुआ जीवन

जार्ज वाशिंगटन कार्वर ने काल के गर्भ में उत्तम बीज बोया था। पूरी निगरानी की थी। उनकी इतने वर्षों की मेहनत का फल अब मिल रहा था। कठिन समय में उनके कार्य का पूरा लाभ मिल रहा था।

सारी दुनिया दूसरे महायुद्ध (1940) की आग में झुलस रही थी। विध्वंसक शक्तियों ने मानवता की जड़ें हिला दी थीं। जब सारा संतुलन ही बिगड़ गया था ऐसे समय अपने ज्ञान और शोधकार्यों से डा कार्वर संतुलन बनाए रखने की कोशिश में लगे हुए थे।

डा कार्वर समाज को अपनी भूमि से प्रेम करना सिखा रहे थे, दूरियां मिटाने का प्रयास कर रहे थे।

अलाबामा के बांधवों के पास कुछ भी नहीं था। साधन भी उपलब्ध नहीं थे। उनके पास थीं 'जरूरतें' सिर्फ 'जरूरतें'। उनके पास जो कुछ छुटपुट साधन थे उनसे वे अपनी जरूरतें पूरी करने की कोशिश करते जो कि हमेशा असफल ही होतीं। डा कार्वर ने जादू कर दिया। पहनने, ओढ़ने के कपड़े, खाने के लिये हजारों व्यंजनों की तरकीबें, घर बनाने के सामान और यह सब कैसे पाया? उसी जमीन से, उसी रूखी-सूखी जमीन से, जिसने आज तक कपास के अलावा और कुछ उपजाया ही नहीं था। कपास साम्राज्य को मात दी थी। मूंगफली और शकरकंदी ने।

रंगों के मामले में अमेरिका जर्मनी पर निर्भर करता था। महायुद्ध की तनातनी में परस्पर संबंध बिगड़ गये। जर्मनी से रंगों का आयात बंद हो गया। अमेरिका के उद्योग धंधों के सामने संकट खड़ा हो गया। ऐसे समय डा कार्वर ने वनस्पतियों से रंग बनाकर अमेरिका को अनमोल खजाना दिया। 29 प्रकार की वनस्पतियों के पत्ते, फल, तनें, जड़ें इन भागों से उन्होंने 500 प्रकार के रंग तैयार करने का भीमकाय पराक्रम किया। यह रंग (डॉय) कपास, ऊन, रेशम, लिनन और चमड़े पर इस्तेमाल किए जा सकते थे। बढ़िया और टिकाऊ।

रंग बनाने वाले एक बड़े कारखाने के मालिक ने उनका यह भीम पराक्रम देखकर उन्हें अपने उद्योग समूह में आकर काम स्वीकार ने का अनुरोध किया। एक सुसज्जित प्रयोगशाला का आश्वासन और साथ में एक 'कोरा' चेक। पहले भी जो हो चुका था वही इस बार भी हुआ। चेक साभार वापस, साथ में रंगों की 527 कृतियां बिना शुल्क।

इतने तरह के रंगों की खोज होने के बाद भी दक्षिण के ग्रामीण भाग के लोगों के लिए ये रंग खरीदना संभव नहीं था। इन लोगों के घर जंगली लकड़ी के बनते थे जो ऊबड़-खाबड़ और छेदों से भरे होते। बहुत सारा रंग सोख लेते। इतना सारा रंग खरीदना उनके बस की बात नहीं थी। और रंगों के बिना लकड़ी का घर टिकता नहीं। डा कार्वर ने इसका उपाय खोज निकाला।

उन्होंने पहले ही मिट्टी से अनेक रंग द्रव्य खोज निकाले थे। अलसी के तेल का उपयोग रंग मिलाने के लिए होता था। लेकिन यह तेल मंहगा था इसलिए गरीबों के काम का नहीं था। इस पर उपाय? बेकार मोटर ऑइल? मोटर आइॅल का उपयोग करके

देखा, फिर प्रयोग के रूप में एक छात्रा का घर रंग कर देखा। अब निश्चित रूप से विश्वास हुआ। गरीबों को एकदम कम दामों में सुंदर रंग मिले।

बात यहीं तक नहीं रही। इन्हीं रंगों का उपयोग टी वी ए और पी एस ए प्रकल्प के सस्ते घर योजना के काम में किया गया। इस काम के लिए टस्कगी संस्था को अनुदान दिया गया। टस्कगी में तैयार रंगों से 14 टी वी ए सुशोभित हुए। टस्कगी ने कम-से-कम खर्च में 'सौंदर्य साधना' का पाठ सिखाया।

डा साहब की सलाह की फीस पोस्टकार्ड के सटैम्प जितनी होती थी, केवल तीन सेंट्स। 1940-42 में उन्होंने अखबारों मे 'प्रो कार्वर की सलाह' इस कॉलम से पाठकों के प्रश्नों के उत्तर दिए। दूसरे महायुद्ध के समय टस्कगी प्रायोगिक केंद्र की तरफ से 'नेचर गार्डन फॉर विक्ट्री एंड पीस' इस शीर्षक से पत्रिका प्रकाशित की। इन पत्रिकाओं द्वारा अमेरिकी जनता को जंगली फूल ओर जंगली घास की जानकारी दी। उन के खाने की चीजें कैसे बन सकती हैं, पौष्टिक आहार की दृष्टि से उनकी क्या गुणवत्ता होती है, यह बतलाया।

काफी पहले से ही वे अमेरिका की जंगली घास का अध्ययन कर रहे थे। वे कहते - 'जंगली घास याने कि गलत जगह उपजी हुई सब्जी-भाजी।' उन्होंने जंगली घास की ढाई सौ जातियां खोज कर उनका वर्गीकरण भी किया था। अब इस शोधकार्य ने और जोर पकड़ लिया।

पूरी देखभाल के साथ लगाई हुई फसल, ज्यादा लाड़-प्यार से नाजुक बन जाती है, उसकी अपेक्षा अपने बूते पर बढ़ने वाली जंगली घास वनस्पतियां अधिक ताकतवाली होती हैं। जंगली घास में जीवन सत्व भी अधिक होते हैं, स्वाद भी अधिक होता है। मेंड के संरक्षण में बढ़ने वाली वनस्पति से अधिक शक्ति और जोर मेंड के बाहर खुले में बढ़ने वाली जंगली घास में होता है। वह बढ़ती भी है और उसकी उम्र भी लंबी होती है। उसकी रोज-रोज चिंता भी नहीं करनी पड़ती और कीटक-चींटियों से रक्षा भी नहीं करनी पड़ती। रोज के खाने में उनका इस्तेमाल हो सकता है।

टस्कगी स्कूल के रसोईघर में प्रो कार्वर के मार्गदर्शन में, बड़ी कक्षा की छात्राएं जंगली वनस्पतियों से भोजन के पदार्थ बनातीं। फिर बाद में स्वादिष्ट व्यंजन किन वनस्पतियों से बनाये गये हैं यह रहस्य खोलकर बतातीं।

'जब तक अमेरिका की धरती पर जंगली घास और जंगली वनस्पतियां हैं तब तक अमेरिका को भुखमरी का संकट नहीं है। सिर्फ अन्न ही नहीं, औषधियों की जरूरतें भी पूरी होती रहेगी।' डा कार्वर को आश्चर्य होता कि आसपास के अहाते में सहज ही उपलब्ध वनौषधि का उपयोग न कर, लोग उन्हीं वनस्पतियों से बनायी हुई दवाईयां बाजार से क्यों खरीदते हैं।

टस्कगी संस्था के एक शिक्षक की वृद्ध माता को डा कार्वर से मिलने की बड़ी इच्छा थी। डा कार्वर उन दिनों वनौषधियों पर अनुसंधान कर रहे थे। वह वृद्ध माता उनसे मिलने प्रयोगशाला में गयी। वहां टेबल पर रखी अनेक वनौषधियों के घरेलू नाम और उनके गुण उन्होंने बतलाए। शिक्षक बेचारे झेंप गये।

डा कार्वर ने अपना काम रोका। वृद्धा माता को एक कुर्सी पर बिठलाया। शिक्षक महोदय को उनकी कक्षा में भेज दिया। फिर उस गुलामी में आधी उमर बिता चुकी वृद्धा से उनकी बातचीत शुरू हुई। वनौषधि और घरेलू-इलाज पर, दादी मां ने अपना पूरा खजाना उनके सामने उंडेल दिया।

डा कार्वर को बड़ा संतोष मिला। 'पिछले कुछ वर्षों में बहुतेरों से चर्चा करने का अवसर मिला, लेकिन वनौषधियों के विषय में इस दादी मां जितना ज्ञान किसी को भी नहीं था।'

दादी अम्मा भी खुश - 'दक्षिण अमेरिका पर जादू करने वाले इस जादूगर की नजरों से 'जड़ी-बूटी' भी नहीं छूटीं।'

नये आये हुए पशु चिकित्सक को डा कार्वर से सलाह मांगना पसंद नहीं था। डा कार्वर पशु चिकित्सक थोड़े ही थे। लेकिन एक साल गर्मी के दिनों में कड़ी धूप के कारण एक ही दिन में छः गायें मर गयीं। मृत जानवरों के शरीर खोलकर बीमारी का कारण ढूंढा गया, लेकिन फिर भी कुछ नहीं मिला। कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आखिर पशु चिकित्सकों को डा कार्वर के पास जाना ही पड़ा।

'हां, पहले भी एक बार ऐसा हुआ था। ऐसा ही अकाल और ऐसी ही लंबी गर्मियां।'

'हां! वही तो...' डा कार्वर अपना झोला उठाकर बोल पड़े। पशु चिकित्सकों को कुछ समझ में नहीं आया। उन्हें लगा तेज धूप से बूढ़े बाबा का माथा फिर गया है।

सारा इलाका छान कर डा कार्वर आये और अपना झोला उंडेल कर बोले, 'यह रहा आपका संकट!'

पशु चिकित्सक की समझ में नहीं आया कि इस हरी जंगली घास का यहां क्या संबंध हो सकता है?

'यह क्या है?'

'रॅटल बॉक्स! शास्त्रीय नाम क्रोटालरिया। यह बाड़ के किनारे से बढ़ता है। हरी घास में इसे ढूंढ निकालना मुश्किल है। यदि कभी घास के साथ थोड़ा सा गाय के पेट में चला भी जाये तो खतरा नहीं होता लेकिन गर्मी के कारण जब अन्य वनस्पतियां और घास सूख जाती है, तब गाय यही हरा भरा रॅटल बॉक्स खाती है। यह स्वाद में रसभरा और रुचिकर होता है लेकिन एकदम विषैला!'

'तो अब क्या करें?'

'आप और आप के विद्यार्थियों को इसे ढूंढकर और उखाड़कर नष्ट करना होगा। रॅटल बॉक्स को चुनकर निकालिए और नष्ट कर दीजिए।'

यह कह कर डा कार्वर वहां से चल दिये। अपने कमरे में जाकर बुलेटिन लिखने लगे, रॅटल बॉक्स इस विषैली घास पर।

हर मौसम में वे अपने स्कूल के अहाते की जांच-पड़ताल करते। अपने हाथों लगाये हुए पेड़ों की लंबाई नापते, उनकी प्रगति की जांच करते। पेड़ बड़े हो गये थे, फैल गये थे, लंबे हो गये थे। अब बुढ़ापे के कारण पेड़ पर चढ़ना तो संभव नहीं था। वे किसी विद्यार्थी को बुलाते। उससे एकाध टहनी कटवाते, अक्सर उस टहनी के पत्ते सूखे हुए होते। विद्यार्थी भी ऐसे काम बड़ी खुशी से करते। डा कार्वर का काम करने से ज्ञान बढ़ता ही था।

डा कार्वर ने हर वृक्ष के तने पर उस वृक्ष की जाति वर्ग की तख्ती लटकायी हुई होती। आज भी टस्कगी के रास्तों परदो तरफा लगे वृक्ष दिखाई देते हैं वे डा कार्वर की कृपा की बदौलत। आज भी वहां पर ऐसी तख्तियां लगाने का रिवाज है।

वे युग पुरुष थे, उनकी नजर दृष्टा की थी। वे समय से आगे देख सकते थे। उनकी इसी नजरिए से बनायी हुई योजनाएं आसपास के सीमित दृष्टिवालों को महत्वपूर्ण नहीं लगतीं। डा कार्वर ने सन् 1899 में ही भूसंधारण की योजना बनायी। वन संपत्ति के संरक्षण और वृद्धि की आवश्यकता प्रतिपादित की थी। लेकिन इस योजना को वास्तव में कार्यान्वित करने से पहले देश को ग्रेट डिप्रेशन (1932-33) की आपत्ति से गुजरना पड़ा। उसके बाद ही सरकार ने इन योजनाओं पर विचार किया।

'कोई भी चीज बेकार नहीं होती। हर चीज को सहेजकर, संभालकर रखो। समय आने पर ये ही चीजें उपयोगी सिद्ध होती हैं।' प्रो कार्वर की इस उक्ति पर सारी अमेरिका का ध्यान अब केंद्रित हो गया था।

अमेरिका में डा कार्वर की कृषिकी वैज्ञानिक पद्धतियां अपनायीं गयीं थीं। इन पद्धतियों के अनुसार खेती करने से उत्पादन इतने अधिक हो गये थे कि अमेरिका के पास उपयोग के बाद भी बड़ी मात्रा में कृषि उत्पादन बच रहते। वे बरबाद न हो जायें इसलिए किसानों को अनाज को बचाकर रखने की सुलभ पद्धतियां सिखायीं गयीं। जटिल शास्त्रीय भाषा में नहीं, बल्कि सरल बोली भाषा का उपयोग करके। 'धूप में रखो, सुखाओ, बचाकर रखो।'

अनेक प्रकार के फल, तरकारियां इस तरह बचाकर रखे जाने लगे। 'पदार्थ को दीर्घकाल तक सुस्थित रखने के उपाय', 'सरल पौष्टिक खाना बनाने के तरीके', आदि विषयों पर पत्रिकाएं छपवायीं। सादा स्टोव, तार की जाली, मच्छरदानी का जालीदार कपड़ा, स्वच्छ सूर्यप्रकाश इनकी सहायता से कौन से पदार्थ टिकाऊ बनाये जा सकते हैं इसकी सूचियां प्रकाशित की।

प्रथम महायुद्ध में डा कार्वर की शकरकंद ने सैनिकों और अमेरिकन जनता को भुखमरी से बचाया था। युद्ध के बाद बड़े पैमाने पर 'निर्जलीकरण' यानि 'पानी सुखाने' का प्रकल्प शुरू करने का विचार था, वैसी योजना भी बनी थी।

लेकिन इस योजना को फलीभूत होने के लिए देश को दूसरे महायुद्ध के संकट से गुजरना पड़ा अर्थात बीस वर्ष का समय लगा। और साथ ही लोग डा कार्वर को इस निर्जलीकरण की योजना का श्रेय देना भूल गये। डा कार्वर को ऐसी बातों से कोई

फर्क नहीं पड़ता था। श्रेय चाहें किसी को भी मिले, संकट के समय में मैं देश के काम आया इसी बात से उन्हें संतोष! 'मूंगफली के छिलकों से जमीन को भुरभुरी (सॉइल कंडीशनर) बनाने वाली खाद बन सकती है। उस छिलके से जमीन को सेंद्रीय खाद मिलेगी। जमीन की शक्ति बढ़ेगी। छिलकों से बने कंडीशनर में जमीन की आर्द्रता, फास्फेट का परिमाण भी अधिक होता है। इसलिए ऐसी स्थिति में जर्मनी से आयात किए पीट मॉस से यह कंडीशनर अधिक उपयुक्त है।' इस बात का भी वैसा ही हाल हुआ। यह प्रकल्प बनने तक 1940 साल आ गया। बीच के बीस वर्षों में अमेरिका में लाखों टन छिलके जलाये गये।

ये और ऐसी कितनी ही बातें! डा कार्वर ने जो प्रयोगशाला में सफलतापूर्वक सिद्ध कर दिखलाया था उन उत्पादनों को बाजारों में लाने तक 20 वर्ष की अवधि बीत गयी।

सन! 1937 के आसपास प्रो कार्वर और सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री हेनरी फोर्ड की मुलाकात हुई। दो महारथियों की भेंट थी वह। एक था उपेक्षित, दलित नीग्रो समाज में जन्मा हुआ, तो दूसरा था समाज में प्रतिष्ठित धनाढय करोड़पति। उमर को छोड़कर और कोई समानता नहीं थी दोनों में।

समानता कैसे नहीं, दोनों का ही श्रम प्रतिष्ठा पर विश्वास था, प्रयासों पर श्रद्धा थी।

'फोर्ड' मोटर निर्माण के बाद हेनरी फोर्ड चैन से नहीं बैठे थे। 'नवनिर्माण' की चाह उन्हें बेचैन कर रही थी। 'कुछ नया' बनाने का विचार मन में बार-बार उठता था। उन्होंने डा कार्वर के समाज की उन्नति के लिए किए हुए अथक परिश्रमों को जाना। फोर्ड साहब स्वयं टस्कगी पधारे।

दोनों ही एक-दूसरे की योग्यता, असीम कार्य जानते थे। आदर करते थे। पहली बार मिलते ही दोनों के मन मिल गये। हाथ मिलाते समय ही दोनों के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे थे।

हेनरी फोर्ड को डा कार्वर का निस्पृह, वीतरागी मन समझने में देर नहीं लगी। वे जैसे दिखाई देते थे उससे कहीं अधिक विशाल व्यक्तित्व था उनका। वो मुक्त आत्मा हैं, उन्हें किसी भौतिक वस्तु की जरूरत ही नहीं है। फोर्ड साहब को इस बात का अनुभव भी जल्दी ही हो गया।

हेनरी फोर्ड का विधान था कि 'पैसे से शाश्वत मूल्य खरीदे नहीं जाते।' पैसों से जो खरीदा जाता है उसे शाश्वत मूल्य नहीं कहते।' हेनरी फोर्ड के इस विधान का जीता जागता उदाहरण थे डा कार्वर। लेकिन जिस परिस्थिति में, वातावरण में डा कार्वर जी रहे थे, उस स्थिति में उनके आचरण का सही मूल्यांकन नहीं हो रहा था। 'क्या कहा है!' इसकी अपेक्षा 'किसने कहा है।' इसी तरफ लोगों का ध्यान अधिक होता है। विपरीत परिस्थितों में काम करने वालों की 'असमान्य प्रतिभा' समाज के सामने आने के लिए कुछ समय लगता है। ऐसा ही कुछ डा कार्वर के साथ भी हो रहा था।

हेनरी फोर्ड ने 'डियर बॉर्न्स' में सोयाबीन की पैदावार की थी। सोयाबीन से अनेक उपयुक्त उत्पादन बनाने में उन्हें सफलता मिली थी। डा कार्वर को इस शोध के बारे में बड़ी उत्सुकता थी। इसलिए पहली ही मुलाकात में ही उन्होंने डियर बार्न आने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया और वहां से लौटने के बाद अपने शोधकार्य का रुख सोयाबीन की तरफ मोड़ दिया।

कुछ ही समय में डा कार्वर ने सोयाबीन से मोटर के पुर्जे बनाने लायक प्लास्टिक बनाकर दिखलाया। उसी तरह उन्होंने सोयाबीन से तेल तैयार किया जो मोटर के रंगों का मूल आधार बना।

फोर्ड साहब को अब दक्षिण की चाह सताने लगी थी। उन्होंने जार्जिया में काफी जमीन खरीदी। वहां पर एक कृषि अनुसंधान केंद्र स्थापित किया। काले-गोरों को काम मिला। श्रमजीवियों के लिए घर बनाए। उनके बच्चों के लिए स्कूल बनाये। एक स्कूल डा कार्वर के नाम से बना। वहां की सब इमारतें डा कार्वर द्वारा मिट्टी से बनाये हुए रंगों से सजीं।

अब फोर्ड साहब अक्सर टस्कगी आते। उनके बार-बार टस्कगी आते रहने के कारण गोरों का ध्यान टस्कगी संस्था की ओर आकर्षित हुआ। वे भी टस्कगी आने लगे। टस्कगी का आतिथ्य और अनुशासनबद्ध काम देखकर प्रभावित हुए। उनकी सक्रिय सहानुभूति का लाभ टस्कगी को मिलने लगा। आर्थिक मदद भी मिलने लगी।

एक बार अखबार वालों ने फोर्ड साहब और डा कार्वर की एकत्रित भेंटवार्ता ली। श्री फोर्ड ने पहले से ही कह दिया, 'आपके

सारे प्रश्नों के उत्तर डा कार्वर ही देंगे, हम दोनों के विचार एक से ही हैं।'

फोर्ड साहब को इस बात का बड़ा संतोष कि उन्हें एक अच्छा कर्मयोगी सहकारी मिला और अपने सपनों को वास्तव रूप से सके ऐसी दूरदृष्टि और संपत्ति का धनी मित्र मिला इसलिए डा कार्वर खुश! एक पुश्तैनी अमीर तो दूसरा भूमि पुत्र, विश्व का स्वामी! इन दोनों में हार्दिक साझेदारी के साथ सामाजिक जिम्मेदारी की भी साझेदारी हुई। काम दुगना हो गया।

इन दोनों महापुरुषों में उत्साह का उफान आया था। समय असमय के बंधन छोड़कर काम चल रहा था। ये दोनों अपनी नयी-नयी कल्पनाओं को मूर्त रूप देकर देख रहे थे।

अस्सी साल के वृद्ध डा कार्वर अपने कमजोर शरीर स्वास्थ्य की परवाह न करने हुए डियर बॉर्न आये थे। साथ में कर्टिस था। वहां पर फोर्ड साहब ने अपने मित्र के लिए एक खास प्रयोगशाला बनायी थी। इस प्रयोगशाला में टस्कगी की 'गुरु-शिष्य' की जोड़ी काम करने आयी थी।

'नया कुछ जन्म लेने वाला है।' इस उत्सुकतावश पत्रकार, संवाददाता डियर बॉर्न में डेरा डाले बैठे थे।

एक शुभ दिन उस प्रयोगशाला में डा कार्वर ने 'कृत्रिम रबर' बनाना आरंभ किया।

'जन्म' शुभ नक्षत्र में था। अब अमेरिकी उद्योगपतियों को रबर के लिए दूसरे देशों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। बड़े पैमाने पर और सस्ता रबर अमेरिका में ही उपलब्ध होने लगा।

एक साल गर्मियों में फोर्ड साहब ने नये उपक्रम की शुरुआत की। टस्कगी स्कूल में अपने दो अधिकारी भेजकर कुछ विद्यार्थियों का चयन किया। उन विद्यार्थियों को 'फोर्ड मोटर कारखाने' में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। अब दक्षिण के नीग्रो को स्थलान्तर करके डेट्राइट जाने की आवश्यकता नहीं रही।

फोर्ड साहब अपनी सम्पत्ति का प्रभाव जानते थे। उनकी बड़ी इच्छा थी कि इस भूमि पुत्र के गौरव में कुछ किया जाये। लेकिन यहां तो, 'कुछ होना ही नहीं।' फोर्ड साहब का मान रखने के लिए कार्वर तैयार हुए। फोर्ड साहब ने डा कार्वर के लिए घर बनाने का प्रस्ताव रखा। अब यह घर एक 'महल' भी हो सकता था, लेकिन नहीं, कार्वर को घर नहीं चाहिए था, उनकी मां का था वैसा। डायमंड ग्रोव की कोठरी, लकड़ी की बनी हुई कोठरी!

डा कार्वर की मातृभक्ति देखकर फोर्ड साहब का दिल भर आया। वे भी मातृभक्त ही तो थे।

बढ़िया लकड़ी इस्तेमाल करके ग्रीन फील्ड में 'कार्वर भवन' बनाया गया। कितने खुश हुए डा कार्वर। एक छोटी सी इच्छा पूरी होते-होते कितने साल गुजर गये थे। अस्सी साल की उमर में 'अपना' घर बना। घर में प्रवेश करते समय वे दरवाजे पर पल भर ठिठके। मां की याद में आंखें भर आयीं।

फोर्ड साहब ने अपने मित्र को एक 'खास भेंट' दी थी। एक 'कप-प्लेट'। फोर्ड साहब की मां के दहेज में आयी हुई यह कप-प्लेट उन्होंने मां की याद में सहेज कर रखी थी। वही कप-प्लेट आज मां की स्मृति में उन्होंने अपने दोस्त को भेंट की थी। दोनों ही मातृभक्त, दोनों ही महान।

सन् 1938 की बात है। एक जगह पर डा कार्वर भाषण के लिए गये थे। एक सज्जन ने डा कार्वर का परिचय करवाते हुए कहा:

'हम लोग सुकरात को श्रेष्ठ दार्शनिक मानते हैं, वे कहा करते थे कि 'मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि मैं कुछ भी नहीं जानता।' आज की दुनिया में भी एक ऐसा व्यक्तित्व है जो इस कसौटी पर खरा उतरे, वे हैं डा कार्वर! वे भी कुछ नहीं जानते। वे अपने माता-पिता के बारे में नहीं जानते। यहां तक कि उन्हें अपनी जन्म तारीख के बारे में भी जानकारी नहीं। ज्ञान के विषय में वे कहते हैं कि उन्हें सर्वश्रेष्ठ, सर्वशक्तिमान ईश्वर से ज्ञान प्राप्ति होती है।'

बाद में डा कार्वर ने शरारात से कहा, 'आज मुझे बहुत निराशा हुई। हमेशा सभाओं में जब मेरी पहचान करवायी जाती है तब मुझे मेरे ही बारे में नयी-नयी बातों की जानकारी मिलती है। लेकिन आज मुझे कुछ भी नया सुनने को नहीं मिला।'

सच पूछिए तो अब उन्हें अपना व्यक्तिगत, पूर्व इतिहास खलता न था। उन्होंने अपने समाज को दासता से मुक्त करवाया था, अनेक प्रकार का दासता से, आर्थिक, शैक्षणिक और कुछ अंशों तक सामाजिक भी। उनके अपने पूर्वजों के बारे में तो कुछ भी

पता नहीं था। उनका अपना नाम भी 'अपना' कहां था? लेकिन भविष्यकाल उज्जवल था। इतिहास में उन्हें अटल स्थान मिल गया था।

उन्हें टस्कगी आये हुए चालीस वर्ष बीत गये थे। सबने मिलकर एक सत्कार समारोह करने का निर्णय किया। डा कार्वर के विरोध पर ध्यान ही नहीं दिया। सबने मिलकर 2000 डॉलर्स का चंदा जमा किया। डा कार्वर की कांस्य प्रतिमा तैयार करवायी। वे लोग भूख की खाई से उबारने वाले इस मसीहा का सम्मान करना चाहते थे। लोगों के मन में उनके लिए अपार श्रृद्धा थी और वे लोग अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते थे।

2 जून 1937 को इस प्रतिमा का अनावरण समारोह हुआ। लोग आ-आकर डा कार्वर से मिलने की चाह पूरी कर रहे थे। डाक्टर साहब उसी पुराने सूट में थे। सिम्पसन के दोस्तों का प्यार से पहनाया हुआ। बुढ़ापे के कारण थोड़े झुके हुए डा कार्वर सबसे मिल रहे थे। रुंधे गले से भरी आंखों से बात कर रहे थे।

रसायन शास्त्र के असामान्य उपयोग से उन्होंने समूची अमेरिका का जीवन स्तर उन्नत किया था। सन् 1939 मं उन्हें इसी कार्य के लिए रूझवेल्ट पदक अर्पण किया गया।

सन् 1940 में फ्रेंकलिन डी रूजवेल्ट टस्कगी आये। उन्होंने वृद्ध कार्वर से कहा:

'आप एक महान अमेरिकन है। आपने प्रयोगशाला में जो कुछ निर्माण किया उससे समूचा राष्ट्र मजबूत हुआ। राष्ट्र को शक्ति मिली।'

सन् 1940 तक टस्कगी स्कूल की इमारतों की संख्या 83 हो गयी थी। 200 विद्या विभागों में कुल 2000 विद्यार्थी शिक्षा पा रहे थे। डाक्टर साहब के बदन पर अब भी वही पुराना कोट था। लेकिन उस बार की सर्दियों में उनके सहकर्मी श्री हैरी ऍबट ने 125 डॉलर्स का नया कोट लाया। वही पुराना झगड़ा, डा साहब ने पहनने से इंकार कर दिया। फिर श्री ऍबट ने लाजवाब सवाल पूछा : 'आप वे पैसे बेकार जाने देंगे,'

अपनी पूरी जिंदगी में कपड़ों पर 125 डॉलर्स नहीं खर्च करने वाले डा कार्वर को वह कोट पहनना पड़ा।

उनका जीवन एकदम सादा था। सुबह-सवेरे चार बजे से पहले उठकर घूमने जाते थे, लौटने के बाद उनका काम शुरू होता जो रात होने तक चलता रहता। जब आवश्यकता होती तब रात-रात भर प्रयोगशाला में शोधकार्य चलता।

उनकी प्रयोगशाला भी एकदम सादी, प्रयोग के साधन भी सादे। उन्हें देखने आनेवालों का तांता लगा रहता था। आनेवालों के अज्ञान से भरे प्रश्न सुनकर डा कार्वर को बड़ी परेशानी होती। कभी-कभी तो हैरान होकर वे प्रयोगशाला से बाहर चले जाते। ऐसे समय में दर्शक लोग उनके उपकरण उठा ले जाते। उपकरण भी कैसे, कोई बोतल, हांडी या ऐसा ही कुछ! डा कार्वर की समझ में नहीं आता कि यह लोग इन चीजों को क्यों ले जाते हैं जबकि ये चीजें उनके अपने घरों में भी मौजूद होती है। फिर यह उठाईगिरी क्यों? फिर से बेचारे डाक्टर साहब अपने उपकरण जमा करते, डिब्बे, बोतलें, हांडियां बटोर कर! लेकिन डा कार्वर नहीं जानते थे कि उनके हाथ के अधिकृत उपकरण ले जाने में इन दर्शकों को कितना गौरव लगता था!

किसी को इन उपकरणों की जिज्ञासा, तो किसी को उनके पीछे की कहानी! डा कार्वर वेतनवृद्धि नहीं लेते, शोधकार्य का मान धन नहीं लेते, इस बात का सबको बड़ा आश्चर्य होता था। वे कहते 'ईश्वरदत्त भेंट के लिए, मैं लोगों से कुछ कैसे ले सकता हूं,'

इस बात पर 'अर्थदास' कहते, 'यदि आप पैसे लेते तो उसका विनियोग आप अपने बांधवों के लिए कर सकते थे।' 'यदि मैं पैसे के पीछे भागता तो अपने भाई-बंधुओं को भूल गया होता।'

आस्टिन कर्टिस ने बड़ी दौड़-धूप करके एक योजना बनायी। भावी पीढ़ियों को डा कार्वर के कार्य से मार्गदर्शन मिले इसलिए उसने संग्रहालय बनाने की योजना बनायी। विगत 50 वर्षों का उनका कार्य- मूंगफली, शकरकंद, जंगली घास, फिकाऊ वस्तुएं, जड़ी-बूटियां, हस्तकला, बुनाई के नमूने (लेसेस) आदि अनेक विषयों की उनकी कृतियां वहां पर सजाकर रखी गयीं और उनके बनाए चित्र! अलाबामा की मिट्टी और सिर्फ उंगलियों से कितने उत्कृष्ट चित्र बन सकते हैं, यह बात विद्यार्थियों को समझाने क लिए बनाए हुए चित्र वहां पर रखे गये। (इन्हीं चित्रों में से एक चित्र पेरिस की लुम्सेम्बर्ग गैलरी ने खरीदा।)

'कार्वर संग्रहालय' सिर्फ पुराने इतिहास की तालिका बनकर ही न रह जाये बल्कि भविष्यकाल के लिए शिक्षा का माध्यम बने, दक्षिण का भविष्य संवारने के लिए संदर्भसूची बने, इस उद्देश्य के अनुरूप संग्रहालय की रचना हुई।

नीग्रो विद्यार्थी विज्ञान शाखा में चाहे कितने ही प्रवीण हो, अपनी बुद्धिमत्ता सिद्ध भी कर दे, तो भी उन्हें इस अध्ययन का उपयोग अपने उत्कर्ष के लिए करना संभव नहीं था। पदवी प्राप्त करने के बाद नीग्रो केमिस्ट को सौंदर्य प्रसाधन से ज्यादा से ज्यादा 'पेटेंट दवाई' बनाने से अधिक कुछ कर दिखाने का अवसर नहीं मिलता था। व्यावसायिक प्रयोगशालाओं में 'नीग्रो को प्रवेश नहीं' की अलिखित तख्तियां थीं। कहीं-कहीं तो कानूनी तौर पर पाबंदी थी। इन परिस्थितियों में इतने परिश्रम से आत्मसात किया हुआ ज्ञान निरूपयोगी हो जाता। इसलिए विद्यार्थियों के नुकसान का खतरा था। डा कार्वर ने इस बात का इलाज ढूंढ निकाला। कार्वर प्रतिष्ठान की स्थापना हुई।

'मैं जार्ज डब्ल्यू कार्वर, मैंने स्वयं प्रस्थापित किया हुआ कार्वर प्रतिष्ठान मेरी निजी संपत्ति (33 हजार डॉलर्स) के साथ टस्कगी संस्था को अपर्ण कर रहा हूं।'

अखबारों की इस खबर ने सारी दुनिया को अवाक कर दिया।

उनके इस प्रतिष्ठान के स्वप्न को साकार करने में अनेक लोगों ने सक्रिय सहयोग दिया था। करीबन 2 लाख डॉलर्स की लागत का भवन बन गया। हजारों शोधकर्ता विद्यार्थियों को उसका लाभ मिला। विज्ञान विषयों में अच्छी प्रतिभा रखने वाले विद्यार्थियों को प्रगत अभ्याक्रम के लिए प्रयोगशाला का अभाव न पड़े, इसलिए अपनी जीवन भर की जमापूंजी से उन्होंने यह प्रतिष्ठान स्थापित किया।

उन्होंने अपने हाथों का उपयोग सिर्फ निर्माण के लिए करने का वचन डा वाशिंगटन को दिया था। इस वचन की पूर्ति के लिए बंजर जमीन को नंदनवन बनाने के लिए संस्था ने जो मानधन दिया था, वह भी उन्होंने संस्था को साभार वापस लौटाया था। क्योंकि वे जानते थे, काल के गर्भ में उन्होंने जो उत्तम बीज बोया था, सतर्क परिश्रम के खादपानी से जिसे संजोया था, उस अंकुर ने अब अच्छी जड़ पकड़ ली थी। उसमें नयी कपोंले फूट रही थीं। अब जल्दी फल मिलने वाले थे।

उनकी भविष्यदर्शी दृष्टि का, कार्यरत प्रवृत्ति का, समाजसेवा का गुणगान करनेवाला, जब उन्हें इस सब कार्य के लिए धन्यवाद करने लगता, तो वे विनय से कहते:

'मेरी नहीं, तो किसी और की नियुक्ति कर के ईश्वर यह काम करवाते। उसने मेरा चुनाव किया इसमें मेरी प्रशंसा की क्या आवश्यकता है?'

सच, ऐसे गुणीजन की नियुक्ति करके ईश्वर ने अपना ईश्वर होना सिद्ध किया था।

इतने वर्षों के अविरत परिश्रम के नतीजे अब उनके शरीर पर दिखाई देने लगे थे। कर्टिस उन्हें अकेले रहने नहीं देता था, लेकिन जब कभी कर्टिस किसी कार्यवश टस्कगी से बाहर जाता तो दूसरे विद्यार्थी उनकी देखभाल करते। उनका हाल जानने के लिए प्रयोगशाला में आते। इस 'देखभाल' से डा कार्वर बड़े परेशान रहते। कहते:

'यही सब सहना होता तो मैं शादी नहीं करता,'

फिर विद्यार्थियों ने सुझाव दिया कि प्रयोगशाला के दरवाजे में एक छोटी कांच बिठा दी जाये जिससे वे बाहर ही से हालचाल जान सकेंगे। फिर ऐसा ही किया गया।

सन् 1935 के आसपास वे काफी बीमार हो गये थे। एनीमिया से बड़ी तकलीफ हुई थी। लेकिन इस बीमारी से ठीक हुए, फिर से काम करने लगे। बुढ़ापा और बीमारी के कारण वे अब थक गये थे। म्यूजियम और फाउंडेशन तक आने-जाने की तकलीफ न हो इसलिए उन्हें नजदीक ही निवास स्थान दिया गया।

उनकी उमर और थके शरीर को ध्यान में रखकर हेनरी फोर्ड ने उनके घर में लिफ्ट लगवायी। सीढ़ियां चढ़ने-उतरने का कष्ट न हो इसलिए। डा कार्वर को इस लिफ्ट का इतना लाड़ कि हर मिलने आने वाले को वे उस लिफ्ट को विशेष रूप से दिखाते।

डा कार्वर का नाम उल्लेख किये बिना अखबारवालों का अब दिन नहीं सुधरता था। कितने ही लोग सिर्फ इस महात्मा को देखने का पुण्य बटोरने टस्कगी आते। लेकिन थके मांदे वृद्ध कार्वर साहब को अब जनसंपर्क कष्टकर होता। स्वयं को दर्शनीय वस्तु बनाना तो उन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। आज तक वे अपने संकोची शर्मीले स्वभाव को नहीं बदल पाये थे। इसलिए

इन भक्तगणों से बचने के लिए वे भोजन के लिए भोजनगृह में आते ही नहीं थे। रसोईघर के एक कोने में, परदे के पीछे खाना खाते। वहां पर होते सिर्फ रसोईघर में डयूटी लगे हुए विद्यार्थी। उनसे वे खुलकर बातें करते। इस अनमोल खजाने को पाने के लिए कितने ही विद्यार्थी रसोईघर संभालने की डयूटी मांग कर सकते। ऐसे समय कितनी ही बातें सुनाते। अपने विद्यार्थी जीवन के अनुभव बताकर उन्हें सयाना बनाते। खतरों से अवगत कराते। रोज कोई न कोई नयी बात सुनाकर विद्यार्थियों का ज्ञान और आत्मविश्वास बढ़ाते।

बाहरी दुनिया अब उन्हें एक पल भी अकेला छोड़ने के लिए राजी नहीं थी। इंटरनेशनल फेडेरेशन ऑफ आर्किटेक्ट्स, इंजीनिअर्स, केमिस्ट्स एंड टेक्नीशियंस के संगठन ने उन्हें सन् '1940 का महामानव' चुना।

अखबार के बीचों-बीच खबर थी, 'दक्षिण के 'सुंदर विषय' के श्रेष्ठ चित्र के लिए चित्रकार बेन्सफादर को बेंजामिन पुरस्कार ढाई सौ डॉलर्स इनाम दिये गये। साथ में उसे सुंदर विषय का फोटो था। वह फोटो था, चुस्त और रौबीले कपड़ों में सजे डा कार्वर का।

'दक्षिण का सुंदर विषय!!'

उस दिन डा कार्वर बड़े खुश थे! उनका चित्र बनाने वाले लड़के को प्रोत्साहन मिला इसलिए!!

आजकल टस्कगी में चलचित्र निर्माताओं की चहल-पहल थी। डा कार्वर के जीवन पर फिल्म बन रही थी। अपने ढलते स्वास्थ्य को नजरंदाज करके वे सहयोग कर रहे थे। किसी नौसिखिया लड़के को आगे बढ़ने का अवसर मिल रहा था। उसे प्रोत्साहन तो देना ही होगा।

अब तो पूरा समय कमरे में ही बीतता था। कभी-कभी वे प्रयोगशाला जाते।

सन् 1942 में कांग्रेस पक्ष ने प्रस्ताव रखा - मोजेस कार्वर के घर के पीछे की लकड़ी की कोठरी 'राष्ट्रीय स्मारक' घोषित हुई।

महानिर्वाण

आजकल टस्कगी का वातावरण कुछ उदास ही था। दो हफ्ते पहले पोर्च के पास बर्फ पर से पैर फिसलने के कारण डा कार्वर गिर पड़े थे। पास से जाते हुए विद्यार्थियों ने इन्हें सम्भाला। डाक्टर साहब के कहने पर उन्हें प्रयोगशाला में ले गये। वे कुछ समय तक वहां रुके, प्रयोगशाला का काम देखा, फिर लंगड़ाते-लंगड़ाते ऑफिस गये, कर्टिस से बातचीत हुई। उसके बाद जो अपने कमरे में आये तो दोबारा बाहर ही न आने के लिए। टस्कगी में चिंता का वातावरण था।

डा कार्वर ने अब सारे काम निबटाने शुरू किये। संस्था के अध्यक्ष श्री पैटरसन को बुलवाया। उन्हें अपनी 'राष्ट्रीय बचत योजना' की हुंडियां सौंपी। कहा इस पैसे को प्रतिष्ठान के काम में लगाइये और सब को यह बात अवश्य बताइए कि इन्हें मैंने जाकर खरीदा था। किसी एक वर्ण ने देशभक्त का ठेका नहीं ले रखा था। देशभक्ति इन बंधनों के परे होती है।

अंतिम बेला तक वे अपने काम की व्यवस्था लगा रहे थे। थोड़ी सी फुरसत पाते ही मारिया बुआ की दी हुई जिल्द बंद बाइबिल पढ़ते।

बाइबिल देखकर मारिया बुआ आंखों के सामने आ जातीं। उनकी दिलायी हुई आन, 'खूब पढ़ना और ज्ञान का उपयोग अपने बांधवों के लिए करना . . .।'

संगीतकार या चित्रकार बनने की चाह थी . . . लेकिन . . . वह शौक भी पूरा कर ही लिया, जैसे बना वैसा ही कर लिया। ये मेरे हाथ, असली माली के हाथ, यायगर साहब ने कहा था, उन्हें अच्छे लगे थे मेरे हाथ, अपने बांधवों का दुख दूर करने में, उनका जीवन खुशहाल बनाने में इन हाथों ने खूब साथ निभाया . . . ।

. . . आज पानी बरस रहा है, कैसे हौले से पत्तों पर झर रहा है, हलके से हरी भरी धरती पर उतर रहा है, रिस रहा है। अब कहां छोड़ आया है वह जोर शोर?

... अरे! यह खिड़की से झांकने वाली टहनी तो जानी-पहचानी सी लग रही है। बरसों पहले लगाये पौधों में से है यह पेड़। अब कितना बड़ा हो गया है। लंबा, फैला हुआ, छाया देने वाला। डा वाशिंगटन काश! आप आज भी होते। थोड़ी सी हरियाली सजी तो आप कितने खुश हो गये थे, और अब तो यह हरा-भरा अलाबामा, ये दो-तरफा वृक्षों वाले टस्कगी के रास्ते। पेड़ भी ऐसे कि सूरज की किरणों को पूछकर अंदर आना पड़े।

.. अंधेरा छा रहा है। हवा भी ठंडी होती जा रही है। इस कोट ने कितना साथ निभाया। कितने प्यार से बच्चों ने मुझे यह कोट पहनाया था। ऐसे कोटों की गरमाई निराली ही होती है। ... सुखद!

चर्च के ऑर्गन के सुरों से वातावरण भर उठा है। मिलहालैंड कितना सुंदर बजातीं थीं पिआनो। लेकिन उनका संगीत सुनकर पता नहीं क्यों मन जाने कैसा-कैसा हो आया था। कितना रोया था मैं! उफ! सच पूछो तो संगीत से तो मन को शांति मिलती है। ... आज मिल रही है वैसी ... ।

आज मुझे अपने भाई जिम की भी बहुत याद आ रही है। नेओशो के मेले में खिंचवाई थी यह तस्वीर ... । मेरा एक अकेला भाई ... । वह थोड़ा तो भाग्य लेकर आया था। कम-से-कम उसने मां को देखा तो था। मां कहकर पुकारा तो था! ...

कभी किसी बात की आस नहीं लगायी। ईश्वर को छोड़कर और कोई बंधन नहीं। एक धरती को छोड़कर किसी से नाता नहीं। यह अनंत बेसहारापन ... इसी ने साथ निभाया। ...

'अपना' कहने लायक 'कुछ भी' न होने वाला यह मुक्त आत्मा अब पंच तत्वों में विलीन हो रहा था। इतिहास बनाकर अब वह अपनी अंतिम यात्रा पर चल पड़ा था।

टस्कगी: ५ जून १९४३

सत्ताईस साल पहले जहां डा वाशिंगटन ने चिरनिद्रा ली, वहीं पर उनके निकट ही जार्ज डब्ल्यू कार्वर को धरती की गोद में सुलाया गया।

उनके दफन विधि के सप्ताह भर बाद कर्टिस को बेल्जियम कांगो के एक मिशनरी का पत्र मिला। लिखा था:

पिछले 25 वर्षों से हम लोगों पर डा कार्वर का कर्ज है। उन्होंने मूंगफली से जो दूध बनाया उसने हम लोगों पर अनंत उपकार किये हैं। अफ्रीका के आंतरिक भीतरी भागों में त्से-त्से मक्खियां और हिंस्त्र श्वापदों के कारण दूध देने वाले जानवर पालना मुश्किल था। ऐसी स्थिति में माता का दूध न मिल सकने वाले नवजात बच्चों के पोषण का बड़ा सवाल रहता। सन् 1918 में हमनें डा कार्वर से पत्र द्वारा सलाह मांगी। उन्होंने मूंगफली की जानकारी देकर उससे दूध बनाने की विधि बतलायी। उस दूध से हमने सैकड़ों बच्चों के प्राण बचाये। डा कार्वर का धन्यवाद देने के लिए शब्द कम पड़ते हैं। लेकिन इस दुखद प्रसंग पर मुझे वैसा प्रयास करने की अनुमति दें।'

'डा कार्वर के कारण जिंदगी पाने वाले मेरे लोगों की तरफ से मुझे धन्यवाद करना है। डा कार्वर का संग साथ पाये हुए आप सब लोगों का मैं कृतज्ञतापूर्वक धन्यवाद मानता हूं।

दुनिया ने एक तपस्वी, साधु, युग पुरुष खोया है, लेकिन उनके जितना इस 'स्वर्गीय निद्रा' पर और किसका अधिकार है,'

डा कार्वर की समाधि पर लिखा शिला लेख:

'वे चाहते तो कीर्ति के साथ धन की राशियां बटोर सकते थे लेकिन उन्होंने समाज की मदद करने में ही अपना सम्मान समझा और खुशियां बटोरीं।'

अंत : 10 जुलाई 2007